गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत मासिक ई-पत्रिका मार्च-2020

गुरुत्व ज्योतिष

चैत्र नवरात्र विशेष

NOT FOR SALE



Nonprofit Publications

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष
मासिक ई-पत्रिका
मार्च 2020

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
www.gurutvakaryalay.in
http://gk.yolasite.com/
www.shrigems.com
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका में लेखन हेतु फ्रीलांस (स्वतंत्र) लेखकों का स्वागत हैं...✍

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई पत्रिका में आपके द्वारा लिखे गये मंत्र, यंत्र, तंत्र, ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, फेंगशुई, टैरों, रेकी एवं अन्य आध्यात्मिक ज्ञान वर्धक लेख को प्रकाशित करने हेतु भेज सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA
Call Us: 91 + 9338213418,
91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in,
gurutva.karyalay@gmail.com

अनुक्रम

स्थायी और अन्य लेख

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

संपादकीय

सर्वमंगल-मांगल्ये शिवेसर्वार्थसाधिके ।

शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥

सृष्टिस्थिति विनाशानां शक्तिभूते सनातनि।

गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते॥

अर्थात: हे देवी नारायणी आप सब प्रकार का मंगल प्रदान करने वाली मंगलमयी हो। कल्याण दायिनी शिवा हो। सब पुरूषार्थो को सिद्ध करने वाली शरणा गतवत्सला तीन नेत्रों वाली गौरी हो, आपको नमस्कार हैं। आप सृष्टि का पालन और संहार करने वाली शक्तिभूता सनातनी देवी, आप गुणों का आधार तथा सर्वगुणमयी हो। नारायणी देवी तुम्हें नमस्कार है।

इस मंत्र के जप से माँ कि शरणागती प्राप्त होती हैं। जिस्से मनुष्य के जन्म-जन्म के पापों का नाश होता है। मां जननी सृष्टि कि आदि, अंत और मध्य हैं।

देवी प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।

पसीद विश्वेतरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवी चराचरस्य।

अर्थात: शरणागत कि पीड़ा दूर करने वाली देवी आप हम पर प्रसन्न हों। संपूर्ण जगत माता प्रसन्न हों। विश्वेश्वरी देवी विश्व कि रक्षा करो। देवी आप हि एक मात्र चराचर जगत कि अधिश्वरी हो।

नवरात्र के नौ दिनों में तीन देवियों क्रमशः पार्वती, लक्ष्मी और सरस्वती और देवी के नौ रुपों का कमशः शैलपुत्री, ब्रह्माचारिणी, चंद्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री का पूजन किया जाता हैं। नवरात्रे के प्रथम तीन दिन पार्वती के तीन स्वरुपों का पूजन किया जाता हैं, अगले तीन दिन माँ लक्ष्मी के स्वरुपों का पूजन किया जाता हैं और आखिरी के तीन दिन सरस्वती माता के स्वरुपों की पूजा की जाती हैं। उसी प्रकार नौ देवीयों को क्रमशः प्रथम दिन शैलपुत्री, द्वितीय दिन ब्रह्माचारिणी, तृतीय दिन चन्द्रघण्टा, चतुर्थ दिन कुष्माण्डा, पंचम् दिन स्कन्द माता, षष्ठम् दिन कात्यायिनी, सासम् दिन कालरात्रि, अष्टम् दिन महागौरी और नौवें दिन सिद्धिदात्री के रुप का पूजन किया जाता हैं।

नवरात्र अर्थात माँ दुर्गा की उपासना में समर्पित नौ रात। **दुर्गा का अर्थ हैं,** दुर्गति नाशिनी हैं, जगत्की उत्पत्ति, पालन एवं संचालन तीनों व्यवस्थाएं जिस शक्ति के आधीन सम्पादित होती है वह जगत जननी माँ आदिशक्ति भगवती हैं। माँ दुर्गा के रुप अनंत हैं, लेकिन देवी को प्रधान नौ रूपों में नवदुर्गा के नाम से जाना जाता हैं। आदि शक्ति माँ दुर्गा समग्र लोक में अपनी कृपा और करूणा वर्षाती है, माँ दुर्गा अपने भक्तों में सद्द गुणों का विकास करके उनमें अपनी शक्ति का संचार करते हुवे संसार के समग्र प्राणियों का संचालन करती है।

आज भौतिकता में रत मनुष्य को असंखय उपाय, पूजन, हवन, जप-तप के बाद भी मन की शांति नहीं मिलती। ऐसे में हर तरह से निराश और हारा चुका मनुष्य यदि मां दुर्गा की शरण लेता है जो निश्चित ही माँ दुर्गा उसकी दुर्गति का निवारण करती ही है।

क्योकि, माँ आद्यशक्ति की कृपा से मनुष्य में आत्मबल, द्दढ विश्वास, दया, प्रेम, भक्ति जैसे सद्गुणों का विकास होता हैं। जीवन के इन्हीं मूल्यों को समझ कर मनुष्य जीवन में सच्चा सुख-शांति, वैभव, धन संपदा को प्राप्त करता

है। अन्यथा इस संसार के दलदल से निकलना उसके लिए संभव नहीं है। इसलिए मनुष्य को असंभव को भी संभव कर दिखाने की शक्ति देवी कृपा से ही प्राप्त होती हैं।

मां दुर्गा का पूजन हिन्दू संस्कृती में सर्वाधिक लोकप्रिय हैं यहीं कारण हैं की सैकड़ों वर्षो से देवी दुर्गा का पूजन छोटे-बड़े सभी प्रादेशिक क्षेत्रों में सर्वाधिक प्रचलित रहा हैं। देवी दुर्गा को आद्य शक्ति भगवती का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। देवी दुर्गा की महिमा अपरंपार हैं, जो अपने भक्तों के दुःखों का नाश करने वाली, दुष्टों से रक्षा करने वाली एवं अपने भक्तों के सकल मनोरथ को सिद्ध करने वाली साक्षात देवी हैं।

नवरात्र के दौरान दस महाविद्या का पूजन भी विशेष महत्वपूर्ण माना गया हैं क्योकी इन को देवी दुर्गा के ही दस रूप माने जाते हैं। दसों महाविद्या में हर महाविद्या अपनी अद्वितीय शक्ति से मनुष्य के समस्त संकटों को दूर करने वाली हैं। इन दस महाविद्याओं के महत्व को विभिन्न धर्मशास्त्रों में अत्यंत उपयोगी और महत्वपूर्ण माना गया हैं।

नवरात्री के दौरान ग्रह शांति के उपायो को कर के मनुष्य सभी अशुभ ग्रह जनित बाधाऔ को सरलता से दूर कर सकता हैं। नवरात्र का समय ग्रहों को शांत करने हेतु सर्वोत्तम समय माना जाता हैं। क्योकि नवरात्री के दौरान प्रकृति में होने वाले परिवर्तन एवं सामाजिक परिवेश के कारण मनुष्य की आध्यात्मिक शक्ति एवं उसकी संयम शक्ति का अत्याधिक उच्च स्तर की होती हैं। यहि कारण हैं की इस दौरान कि जाने वाली सभी पूजा, उपासना, साधना आदि अत्याधिक लाभप्रद मानी गई हैं। यदि मनुष्य किसी ग्रहों से पीड़ित हो, तो वह इन नौ दिनों में देवी दुर्गा के पूजन के साथ में यदि ग्रह शांति के उपायो को करके शीघ्र लाभ प्राप्त कर सकते हैं, नवरात्र ग्रह शांति के लिए भी उत्तम समय होता है।

विद्वानों का कथन हैं की देवी दुर्गा ही सभी प्रकार के मंत्र, यंत्र और तंत्र का मुख्य आधार हैं। धर्म शास्त्रों में समस्त मंत्र, यंत्र और तंत्र का उद्गम देवी आद्यशक्ति भगवती से माना गया हैं। यदि जन्म कुंडली (जातक/ जन्म पत्री) में कोई ग्रह कमजोर है या अशुभ भाव का स्वामी हो एवं अन्य भाव को देख कर अपना अशुभ प्रभाव दे रहा हो तो जातक के लिए उस ग्रह को शांत करना आवश्यक होता हैं जिस्से ग्रह अपना प्रतिकूल प्रभाव के स्थान पर अनुकूल प्रभाव प्रदान करें।किसी भी ग्रह के प्रभाव को अनुकूल बनाने का उत्तम समय नवरात्र हैं, नवरात्र के दौरान ग्रह शांति के उपायो द्वारा ग्रह के अशुभ प्रभाव को शीघ्र एवं अति सरलता से कम किया जा सकता हैं।

इस मासिक ई-पत्रिका में संबंधित जानकारीयों के विषय में साधक एवं विद्वान पाठको से अनुरोध हैं, यदि दर्शाये गए मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना एवं उपायों या अन्य जानकारी के लाभ, प्रभाव इत्यादी के संकलन, प्रमाण पढ़ने, संपादन में, डिजाईन में, टाईपींग में, प्रिंटिंग में, प्रकाशन में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसे स्वयं सुधार लें या किसी योग्य ज्योतिषी, गुरु या विद्वान से सलाह विमर्श कर ले । क्योकि विद्वान ज्योतिषी, गुरुजनो एवं साधको के निजी अनुभव विभिन्न मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना, उपाय के प्रभावों का वर्णन करने में भेद होने पर कामना सिद्धि हेतु कि जाने वाली वाली पूजन विधि एवं उसके प्रभावों में भिन्नता संभव हैं।

आपको एवं आपके परिवार के सभी सदस्यों को गुरुत्व कार्यालय परिवार की और से विक्रम संवत 2077 की शुभकामनाएं..

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो मां भगवती की कृपा आपके परिवार पर बनी रहे। मां भगवती से यही प्राथना हैं...

चिंतन जोशी

***** मासिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा प्रकाशित किये गये सभी लेख, जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

चैत्र नवरात्रि घट स्थापना मुहूर्त, विधि-विधान 25 मार्च 2020

संकलन गुरुत्व कार्यालय

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा अर्थात चैत्र नवरात्री का पहला दिन। इसी दिन से ही वासंतिक अथवा चैत्र अथवा चैत्री नवरात्र का प्रारंभ होता हैं। जो चैत्र शुक्ल नवमी को समाप्त होते हैं, इन नौ दिनों देवि दुर्गा की विशेष आराधना करने का विधान हमारे शास्त्रो में बताया गया हैं।

"प्रतिपदा तिथि 24 मार्च 2020, मंगलवार को अपराह्न 3 बजकर 00 मिनट से शुरू हो रही है।" जो कालवेला के दौरान हो रही हैं, कालवेला जो दोपहर 01:58 से 03:29 तक रहेगी, एवं नक्षत्र उत्तराभाद्रपद जो देर रात्री 04:18 तक रहेगा पश्चयात रेवति नक्षत्र रहेगा। एवं योग ब्रह्म और करण किस्तुघ्न रहेगा।

घटस्थापना हेतु शुभ मुहूर्त 25 मार्च 2020, बुधवार के दिन पूर्वाह्न 06:23 से 07:17 तक (अवधि 00 घण्टा 54 मिनट) , विक्रम संवत् 2077, शक संवत् 1942, नक्षत्र रेवती, योग ब्रह्म, करण बव, ऋतु बसंत, अयन, उत्तरायण, रहेगा, प्रतिपदा तिथी समाप्ति सांय 05:31बजे होगी।



इस लिए घट स्थापना सुबह 06:23 से 07:17 तक में करना शुभ रहेगा।, इस दौरान द्वि-स्वभाव मीन लग्न की समाप्ति 07:17 होगी।

पारंपरिक पद्धति के अनुशास नवरात्रि के पहले दिन घट अर्थात कलश की स्थापना करने का विधान हैं। इस कलश में ज्वारे (अर्थात जौ और गेहूं) बोया जाता है।

घट स्थापनकी शास्त्रोक्त विधि इस प्रकार हैं।

घट स्थापना आश्विन प्रतिपदा के दिन कि जाती हैं। **घट स्थापना हेतु सबसे शुभ अभिजित मुहुर्त माना गया हैं। जो** 25 मार्च 2020 **को दोपहर 12:002 से दोपहर 12:51 बजे के बीच है।**

इस वर्ष प्रतिपदा तिथि प्रारम्भ 24 मार्च 2020 को अपराह्न 3 बजकर 00 मिनट से 25 मार्च 2020 संध्या सांय 05:31बजे होगी।

इस लिए 25 मार्च 2020 के शुभ मुहूर्त उत्तम रहेंगे।

घट स्थापना के अन्य शुभ मुहूर्त सुबह 06:23 से सुबह 07:54 तक लाभ, सुबह 07:54 से सुबह 09:25 तक अमृत, दिन 10:56 से दोपहर 12:27 तक शुभ चौघडिया, अभिजित मुहुर्त दोपहर 12:002 से दोपहर 12:51 बजे के बीच रहेगा।

कुछ जानकार विद्वानो का मत हैं की नवरात्र स्वयं अपने आप में स्वयं सिद्ध मुहुर्त होने के कारण इस तिथि में व्याप्त समस्त दोष स्वतः नष्ट हो जाते हैं इस लिए घट स्थापना प्रतिपदा के दिन किसी भी समय कर सकते हैं।

यदि ऐसे योग बन रहे हो, तो घट स्थापना दोपहर में अभिजित मुहूर्त या अन्य शुभ मुहूर्त में करना उत्तम रहता हैं।

कलश स्थापना हेतु अन्य शुभ मुहूर्त

- लाभ चौघडिया सुबह 06:23 से सुबह 07:54 तक,
- अमृत चौघडिया सुबह 07:54 से सुबह 09:25 तक,
- शुभ चौघडिया दिन 10:56 से दोपहर 12:27 तक,
- अभिजित मुहुर्त दोपहर 12:002 से दोपहर 12:51 बजे तक के मुहूर्त घट स्थापना का श्रेष्ठ मुहूर्त रहेंगे।

घट स्थापना हेतु सर्वप्रथम स्नान इत्यादि के पश्चयात गाय के गोबर से पूजा स्थल का लेपन करना चाहिए। घट स्थापना हेतु शुद्ध मिट्टी से वेदी का निर्माण करना चाहिए, फिर उसमें जौ और गेहूं बोएं तथा उस पर अपनी इच्छा के अनुसार मिट्टी, तांबे, चांदी या सोने का कलश स्थापित करना चाहिए।

यदि पूर्ण विधि-विधान से घट स्थापना करना हो तो पंचांग पूजन (अर्थात गणेश-अंबिका, वरुण, षोडशमातृका, सप्तघृतमातृका, नवग्रह आदि देवों का पूजन) तथा पुण्याहवाचन (मंत्रोंच्चार) विद्वान ब्राह्मण द्वारा कराएं अथवा असमर्थता हो, तो स्वयं करें।

पश्चयात देवी की मूर्ति स्थापित करें तथा देवी प्रतिमाका षोडशोपचारपूर्वक पूजन करें। इसके बाद श्रीदुर्गासप्तशती का संपुट अथवा साधारण पाठ करना चाहिए। पाठ की पूर्णाहुति के दिन दशांश हवन अथवा दशांश पाठ करना चाहिए।

घट स्थापना के साथ दीपक की स्थापना भी की जाती है। पूजा के समय घी का दीपक जलाएं तथा उसका गंध, चावल, व पुष्प से पूजन करना चाहिए।

पूजन के समय इस मंत्र का जप करें-

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं ह्यन्धकारनिवारक।
इमां मया कृतां पूजां गृह्णंस्तेजः प्रवर्धय।।

नोटः उपरोक्त वर्णित मुहूर्त को सूर्योदय कालिन तिथि या समय का निरधारण नई दिल्ली के अक्षांश रेखांश के अनुशार आधुनिक पद्धति से किया गया हैं। इस विषय में विभिन्न मत एवं सूर्योदय ज्ञात करने का तरीका भिन्न होने के कारण सूर्योदय समय का निरधारण भिन्न हो सकता हैं। सूर्योदय समय का निरधारण स्थानिय सूर्योदय के अनुशार हि करना उचित होगा। इस लिए किसी भी मुहूर्त का चयन करने से पूर्व किसी विद्वान व जानकार से इस विषय में सलाह विमर्श करना उचित रहेगा।

नवरात्र विशेष घट स्थापना विधि

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

दुर्गा पूजन सामग्री-

कलावा (मौली, रक्षा सूत्र), रोली, सिंदूर, १ श्रीफल (नारियल), अक्षत (बिना टूटे चावल), लाल वस्त्र, सगंधित फूल- माला, 5 पान के पत्ते , 5 सुपारी, लौंग, कलश, कलश हेतु आम के पल्लव, लकड़ी की चौकी, समिधा, हवन कुण्ड, हवन सामग्री, कमल गट्टे, पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद, शर्करा(चीनी)), फल, मिठाई, ऊन का आसन, साबूत हल्दी, अगरबत्ती, इत्र, घी, दीपक, आरती की थाली, कुशा, रक्त चंदन, श्वेत चंदन (श्रीखंड चंदन), जौ, तिल, सुवर्ण गणेश व दुर्गा की प्रतिमा 2 (सुवर्ण उप्लब्ध न हो तो पीतल, कई लोग मिट्‍टी की प्रतिमा से पूजन करते हैं।), आभूषण व श्रृंगार सामग्री, पंचमेवा, पंच मिठाई, रूई इत्यादि,

दुर्गा पूजन से पूर्व चौकी को शुद्ध करके श्रृंगार करके चौकी सजालें।

तत पश्चयात लाल कपडे का आसन बिछाकर गणपति एवं दुर्गा माता की प्रतिमाके सम्मुख बैठ जाए।

तत पश्चयात आसन को इस मंत्र से शुद्धि करण करें:

ॐ अपवित्र : पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि:॥

इन मंत्रों का उच्चारण करते हुए अपने ऊपर तथा आसन पर 3-3 बार कुशा या पुष्पादि से छींटें लगायें।

तत पश्चयात आचमन करें:

ॐ केशवाय नम:

ॐ नारायण नम:

ॐ मध्वाये नम:

ॐ गोविन्दाय नमः

तत पश्चयात हाथ धोकर, पुन: आसन शुद्धि मंत्र का उच्चारण करें:-

ॐ पृथ्वी त्वयाधृता लोका देवि त्यवं विष्णुनाधृता।
त्वं च धारयमां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

शुद्धि करण और आचमन के पश्चयात चंदन लगाना चाहिए।

अनामिका उंगली से श्रीखंड चंदन लगाते हुए इस मंत्र का उच्चारण करें:-

चन्दनस्य महत्पुण्यम् पवित्रं पापनाशनम्,
आपदां हरते नित्यम् लक्ष्मी तिष्ठतु सर्वदा।

पंचोपचार पूजन करने के पश्चयात संकल्प करना चाहिएं।

संकल्प में पुष्प, फल, सुपारी, पान, चांदी का सिक्का, श्रीफल (नारियल), मिठाई, मेवा, आदि सभी सामग्री थोड़ी-थोड़ी मात्रा में लेकर संकल्प मंत्र का उच्चारण करें:-

॥ संकल्प वाक्य॥

हरि ॐ तत्सत ।नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमाय श्री मद भगवते महा पुरुषस्य विष्णो राज्ञाया प्रवर्त मान स्याद्य ब्राह्मणों द्वितीय प्रहरार्द्ध श्रीश्वेत्वाराह काले वै वस्तव -मन्वन्तरे अश्त्विश्तित्मे कल्युगे कलि प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भरत खण्ड भारत वर्षे आर्या वर्तान्तर्गत देशैक पुण्य क्षेत्र षष्टि सम्वस्ताराणां मध्ये 'अमुक ' नामिन संवत्सरे 'अमुक ' अयने 'अमुक 'त्रृतौ .अमुक मासे 'अमुक पक्षे .अमुक तिथौ अमुक नक्षत्रे ,अमुक योग 'अमुक 'वासरे 'अमुक राशिस्ये सूर्ये, भौमें, बुधे, गुरौ, शुक्रे, शनौ, राहौ, केतौ एवं गुण विशिष्टाया तिथौ 'अमुक' गोत्रोत्पन्ने 'अमुक 'नाम्नि शर्मा (वर्मा इत्यादि) सकलपापक्षयपूर्वकं सर्वारिष्ट शांतिनिमित्तं सर्वमंगलकामनया श्रुतिस्मृत्योक्तफलप्राप्त्यर्थं मनेप्सित कार्य सिद्धयर्थं श्री दुर्गा पूजनं च अहं करिष्ये। तत्पूर्वागंत्वेन निर्विघ्नतापूर्वक कार्य सिद्धयर्थं यथा मिलितोपचारे गणपति पूजनं करिष्ये।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानोहर्विभि:। अहेडमानोवरुणेह बोध्युरुशं समानऽआयु: प्रमोषी:। अस्मिन कलशे वरुणं सांगं सपरिवारं सायुध सशक्तिकमावाहयामि, ॐ भूर्भुव: स्व: भो वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ। स्थापयामि पूजयामि।

तत पश्चयात जिस प्रकार गणेश जी की पूजा की है उसी प्रकार वरूण देवता की विधिवत पूजा करें।

दुर्गा पूजन:

दुर्गा पूजन हेतु सबसे पहले माता दुर्गा का ध्यान करें:

सर्व मंगल मागंल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्येत्रयम्बिके गौरी नारायणी नमोस्तुते ॥

तत पश्चयात आवाहन करें:

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम: ।
दुर्गादेवीमावाहयामि॥

तत पश्चयात फूल अर्पित करते हुए उच्चारण करें। श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। आसानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि॥

तत पश्चयात अर्घ्य दें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। हस्तयो: अर्घ्यं समर्पयामि॥

तत पश्चयात आचमन अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। आचमनं समर्पयामि॥

तत पश्चयात स्नान कराएं- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। स्नानार्थं जलं समर्पयामि॥

तत पश्चयात स्नानांग आचमन- स्नानान्ते पुनराचमनीयं जलं समर्पयामि।

तत पश्चयात पंचामृत स्नान कराएं- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। पंचामृतस्नानं समर्पयामि॥

तत पश्चयात गन्धोदक-स्नान कराएं- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। गन्धोदकस्नानं समर्पयामि॥

तत पश्चयात शुद्धोदक स्नान कराएं- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि॥

तत पश्चयात आचमन दें- शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

तत पश्चयात वस्त्र अर्पित करें-- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। वस्त्रं समर्पयामि ॥ वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

तत पश्चयात सौभाग्य सूत्र अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। सौभाग्य सूत्रं समर्पयामि ॥

तत पश्चयात चन्दन अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। चन्दनं समर्पयामि ॥

तत पश्चयात हरिद्राचूर्ण अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। हरिद्रां समर्पयामि ॥

तत पश्चयात कुंकुम अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। कुंकुम समर्पयामि ॥

तत पश्चयात सिन्दूर अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। सिन्दूरं समर्पयामि ॥

तत पश्चयात कज्जल अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। कज्जलं समर्पयामि ॥

तत पश्चयात दूर्वाकुंर अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। दूर्वाकुंरानि समर्पयामि ॥

तत पश्चयात आभूषण अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। आभूषणानि समर्पयामि ॥

तत पश्चयात पुष्पमाला अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। पुष्पमाला समर्पयामि ॥

तत पश्चयात धूप लगाएं- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। धूपमाघ्रापयामि॥

तत पश्चयात दीप जलाएं- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। दीपं दर्शयामि॥

तत पश्चयात नैवेद्य अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। नैवेद्यं निवेदयामि॥

तत पश्चयात जल अर्पित करें- नैवेद्यान्ते त्रिबारं आचमनीय जलं समर्पयामि।

तत पश्चयात फल अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। फलानि समर्पयामि॥

तत पश्चयात ताम्बूल अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। ताम्बूलं समर्पयामि॥

तत पश्चयात दक्षिणा दें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। दक्षिणां समर्पयामि॥

तत पश्चयात आरती करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। आरार्तिकं समर्पयामि॥

पूजन में हुई त्रुटि के निवारण हेतु क्षमा प्राथना करें।

क्षमा प्रार्थना

न मंत्रं नोयंत्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्॥1॥
विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।
तदेतत्क्षतव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥2॥
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयंत्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत् क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥3॥
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापित्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदप कुमाता न भवति ॥4॥
परित्यक्तादेवा विविधविधिसेवाकुलतया
मया पंचाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदर जननि कं यामि शरण्॥5॥
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातंको रंको विहरति चिरं कोटिकनकैः ।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥6॥
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतहारी पशुपतिः ।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥7॥
न मोक्षस्याकांक्षा भवविभव वांछापिचनमे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडाणी रुद्राणी शिवशिव भवानीति
जपतः ॥8॥
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रूक्षचिंतन परैर्नकृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किंचन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥9॥
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे
करुणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता
जननीं स्मरन्ति॥10॥
जगदंब विचित्रमत्र किं परिपूर्ण करुणास्ति चिन्मयि ।
अपराधपरंपरावृतं नहि मातासमुपेक्षते सुतम् ॥11 ॥
मत्समः पातकी नास्तिपापघ्नी त्वत्समा नहि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवियथायोग्यं तथा कुरु ॥12॥

***

विक्रम संवत 2077 और 9 ग्रहों का मंत्री मंड़ल

संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दू धर्म के अनुसार ब्रह्माजी ने सृष्टि का आरम्भ चैत्र माह में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से किया था, इस लिए हिन्दू संस्कृति में नव संवत का प्रारम्भ भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा किया जाता है।

हिन्दू परंपरा में सभी प्रकार के शुभ कार्यों या विधि-विधान का शुभारंभ का संकल्प करते समय उस समय के संवत्सर का उच्चारण किया जाता है। कुल संवत्सर 60 प्रकार के हैं। ज्योतिष सिद्धांत के अनुसार जब 60 संवत्सर पूरे हो जाते हैं तो फिर पहले से संवत्सर का प्रारंभ हो जाता है।

इस वर्ष हिन्दू नवसंवत्सर विक्रम संवत 2077 के नए साल की शुरुआत बुधवार के दिन हो रही है। ज्योतिष के अनुसार हर नवसंवत्सर के दौरान 9 ग्रहों के बीच बनने वाले मंत्रि-मंडल में राजा का चयन चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथी के वार के अनुसार होता है, उस दिन जो वार होता है उस वार के स्वामी को संवत का राजा माना जाता है। इस वर्ष के राजा बुध होंगे और मंत्री चंद्रमा होंगे। इस लिए विक्रम संवत 2077 के पूरे वर्ष तक बुध देव का अधिपत्य रहेगा।

बुध का संबंध पर्यावरण से होने के कारण पर्यावरण के में सकारात्मक परिवर्तन लाने के प्रयासों में वृद्धि होगी। ज्योतिष के अनुसार इस संवत के प्रभाव से कृषी के क्षेत्र में विशेष बदलाव एवं विकास देखने को मिलेगा। अनाज का उत्पादन अच्छा हो सकता है।

कुछ खाद्य पदार्थों के मूल्यों में अकस्मात रुप से वृद्धि देखने को मिलेगी। बुध एवं चंद्र के बीच में मित्रता की कमी होने से सरकार की तरफ से कुछ विशेष कड़े नियम-कानून बन सकते हैं। इससे प्रजा में कुछ समय के लिए असंतोष बढ़ सकता है।

इस संवत्सर वर्ष के राजा बुध होंगे। बुध के शुभ प्रभाव से विभिन्न शुभ एवं मांगलिक कार्यों को संपन्न करने अवसर मिलते रहेंगे। लेकिन अशुभ प्रभाव में किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा किसी कारण परेशानी हो सकती हैं। प्रियजनो के साथ विरोध रह सकता है। धन संपत्ति और सुख सुविधा की पूर्ति हेतु अत्याधिक परिश्रम करना पड़ सकता है।

विद्वानो के मत से इस दौरान कई लोगों में झूठ, छल, कपट तथा प्रपंच आदि की वृद्धि हो सकती है। नौकरी, कारोबार से जुड़े लोगों को परिश्रम के अनुरुप ही फल प्राप्त होगें।

संवत्सर के मंत्री चंद्रमा

नव संवत्सर के मंत्री चंद्रमा होगें। चंद्र के शुभ प्रभाव से जीवन में भौतिक सुख सुविधाओं वृद्धि होगी। वर्षा होने की संभावनाएं अच्छी हो सकती है। विभिन्न वस्तुओं के मूल्यों में लगातार अस्थिरता नज़र आसकती है।

साधारणतः लोगों में असंतोष और चिंता अत्याधिक हो सकती है। साधारण रुप से स्त्री वर्ग एव नौकरी पैसा की आर्थिक स्थिति में सुधार देखा जा सकता है।

धनेश बुध का प्रभाव

बुध के प्रभाव से धन का संग्रह अच्छे से हो सकता है। लोगों को व्यापार से लाभ होगा। एवं धार्मिक कार्यों में जुडे लोगों को धन लाभ हो सकता है।

धान्येश मंगल का प्रभाव

मंगल के प्रभाव से अनाज़ के मूल्य में वृद्धि देखने को मिल सकती है। तेल, द्रव्य आदि पदार्थों महंगे हो सकते है।

मेघश सूर्य का प्रभाव

सूर्य के प्रभाव से कई स्थानों पर वर्षा उत्तम होने से कई अनाज की पैदावार अच्छी हो सकती है। पानी के स्त्रोत जल्द सूख सकते है एवं कई स्थानों पर कम वर्षा हो सकती है।

फलेश सूर्य का प्रभाव

सूर्य के प्रभाव से कई प्रकार के फल-फूल का उत्पादन अपेक्षा से बेहतर हो सकता है एवं कई प्रकार के फल-फूल अपेक्षा से कम होंगे।

दुर्गेश सूर्य का प्रभाव

सूर्य के प्रभाव से सरकार के रक्षा क्षेत्र के कार्यों में तेजी आ सकती है।

रसेश शनि का प्रभाव

शनि के प्रभाव से कई स्थानों पर भूमीगत जल के स्रोत भी कम हो सकते है। वर्षा के उपरांत भी कई स्थानों पर जल कमी हो सकती है। बेमौसम की वर्षा से विभिन्न परेशानी या हो सकती हैं। कई जल्द ठीक न होने वाले रोग भी परेशान कर सकते है।

सस्येश का स्वामी गुरु

गुरु के प्रभाव से दूध का उत्पादन और फलों के उत्पादन में वृद्धि हो सकती है। धार्मिक कार्य से जुडे लोगों के लिए समय शुभ रहेगा। विरोध पक्ष द्वारा होने वाले अनावश्यक हो रहे वाद-विवाद, षड्यंत्र दूर हो सकते है। यथोचित उपचार से पुराने रोगों से मुक्ति मिल सकती है।

नीरसेश गुरु का प्रभाव

गुरु के प्रभाव से सोना, पीत्तल, तांबा आदि पीले रंग की धातुओं में लोगों की रुचि बढ़ सकती है। कृषि उत्पाद, पशु पालन आदि से जुड़े लोगो को लाभ हो सकता है।

द्वितीयं ब्रह्मचारिणी

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्र के दूसरे दिन मां के ब्रह्मचारिणी स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। क्योकि ब्रह्म का अर्थ हैं तप। मां ब्रह्मचारिणी तप का आचरण करने वाली भगवती हैं इसी कारण उन्हें ब्रह्मचारिणी कहा गया।

शास्त्रो में मां ब्रह्मचारिणी को समस्त विद्याओं की ज्ञाता माना गया हैं। शास्त्रो में ब्रह्मचारिणी देवी के स्वरूप का वर्णन पूर्ण ज्योतिर्मय एवं अत्यंत दिव्य दर्शाया गया हैं।

मां ब्रह्मचारिणी श्वेत वस्त्र पहने उनके दाहिने हाथ में अष्टदल कि जप माला एवं बायें हाथ में कमंडल सुशोभित रहता हैं। शक्ति स्वरुपा देवी ने भगवान शिव को प्राप्त करने के लिए 1000 साल तक सिर्फ फल खाकर तपस्या रत रहीं और 3000 साल तक शिव कि तपस्या सिर्फ पेड़ों से गिरी पत्तियां खाकर कि, उनकी इसी कठिन तपस्या के कारण उन्हें ब्रह्मचारिणी नाम से जाना गया।



मंत्र:

दधानापरपद्माभ्यामक्षमालाककमण्डलम्।
देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा।।

ध्यान:-

वन्दे वांछित लाभायचन्द्रार्घकृतशेखराम्।
जपमालाकमण्डलुधरांब्रह्मचारिणी शुभाम्।
गौरवर्णास्वाधिष्ठानस्थितांद्वितीय दुर्गा त्रिनेत्राम्।
धवल परिधानांब्रह्मरूपांपुष्पालंकारभूषिताम्।
पदमवंदनांपल्लवाधरांकातंकपोलांपीन पयोधराम्।
कमनीयांलावण्यांस्मेरमुखींनिम्न नाभिंनितम्बनीम्।।

स्तोत्र:-

तपश्चारिणीत्वंहितापत्रयनिवारणीम्। ब्रह्मरूपधराब्रह्मचारिणींप्रणमाम्यहम्।।
नवचग्रभेदनी त्वंहिनवऐश्वर्यप्रदायनीम्।
धनदासुखदा ब्रह्मचारिणी प्रणमाम्यहम्॥
शंकरप्रियात्वंहिभुक्ति-मुक्ति दायिनी शांतिदामानदाब्रह्मचारिणी प्रणमाम्यहम्।

कवच:-

त्रिपुरा मेहदयेपातुललाटेपातुशंकरभामिनी। अर्पणासदापातुनेत्रोअधरोचकपोलो॥ पंचदशीकण्ठेपातुमध्यदेशेपातुमाहेश्वरी षोडशीसदापातुनाभोगृहोचपादयो। अंग प्रत्यंग सतत पातुब्रह्मचारिणी॥

मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति को अनंत फल कि प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति में तप, त्याग, सदाचार, संयम जैसे सद् गुणों कि वृद्धि होती हैं।

***

चतुर्थ कूष्माण्डा

संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्र के चतुर्थ दिन मां के कूष्माण्डा स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। अपनी मंद हंसी द्वारा ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया था इसीके कारण इनका नाम कूष्माण्डा देवी रखा गया।

शास्त्रोक्त उल्लेख हैं, कि जब सृष्टि का अस्तित्व नहीं था, तो चारों तरफ सिर्फ अंधकार हि था। उस समय कूष्माण्डा देवी ने अपने मंद सी हास्य से ब्रह्मांड कि उत्पत्ति कि। कूष्माण्डा देवी सूरज के घेरे में निवास करती हैं। इसलिये कूष्माण्डा देवी के अंदर इतनी शक्ति हैं, जो सूरज कि गरमी को सहन कर सकें। कूष्माण्डा देवी को जीवन कि शक्ति प्रदान करता माना गया हैं।

कूष्माण्डा देवी का स्वरुप अपने वाहन सिंह पर सवार हैं, मां अष्ट भुजा वाली हैं। उनके मस्तक पर रत्न ज़डित मुकुट सुशोभित हैं, जिस्से उनका स्वरूप अत्यंय उज्जवल प्रतित होता हैं। उनके हाथमें हाथों में क्रमश: कमण्डल, माला, धनुष-बाण, कमल, पुष्प, कलश, चक्र तथा गदा सुशोभित रहती हैं।



मंत्र:

सुरासम्पूर्णकलशं रूधिराप्लुतमेव च।
दधाना हस्तपद्माभ्यां कुष्मांडा शुभदास्तुमे।।

ध्यान:-

वन्दे वांछित कामर्थेचन्द्रार्घकृतशेखराम्।
सिंहरूढाअष्टभुजा कुष्माण्डायशस्वनीम्॥
भास्वर भानु निभांअनाहत स्थितांचतुर्थ दुर्गा त्रिनेत्राम्।
कमण्डलु चाप, बाण, पदमसुधाकलशचक्र गदा जपवटीधराम्॥
पटाम्बरपरिधानांकमनीयाकृदुहगस्यानानालंकारभूषिताम्।
मंजीर हार केयूर किंकिणरत्नकुण्डलमण्डिताम्।
प्रफुल्ल वदनांनारू चिकुकांकांत कपोलांतुंग कूचाम्।
कोलांगीस्मेरमुखींक्षीणकटिनिम्ननाभिनितम्बनीम्॥

स्त्रोत:-

दुर्गतिनाशिनी त्वंहिदारिद्रादिविनाशिनीम्। जयंदाधनदांकूष्माण्डेप्रणमाम्यहम्॥
जगन्माता जगतकत्रीजगदाधाररूपणीम्। चराचरेश्वरीकूष्माण्डेप्रणमाम्यहम्॥
त्रैलोक्यसुंदरीत्वंहिदु:ख शोक निवारिणाम्। परमानंदमयीकूष्माण्डेप्रणमाम्यहम्॥

कवच:-

हसरै मेशिर: पातुकूष्माण्डेभवनाशिनीम्। हसलकरींनेत्रथ,हसरौश्चललाटकम्॥ कौमारी पातुसर्वगात्रेवाराहीउत्तरेतथा। पूर्वे पातुवैष्णवी इन्द्राणी दक्षिणेमम। दिग्दिधसर्वत्रैवकूंबीजंसर्वदावतु॥

मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का अनाहत चक्र जाग्रत हो हैं। मां कूष्माण्डाका के पूजन से सभी प्रकार के रोग, शोक और क्लेश से मुक्ति मिलती हैं, उसे आयुष्य, यश, बल और बुद्धि प्राप्त होती हैं।

***

षष्ठम् कात्यायनी

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्र के छठें दिन मां के कात्यायनी स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। महर्षि कात्यायन कि पुत्री होने के कारण उन्हें कात्यायनी के नामसे जाना जाता हैं। कात्यायनी माता का जन्म आश्विन कृष्ण चतुर्दशी को हुवा था, जन्म के पश्चयाता मां कात्यायनी ने शुक्ल सप्तमी, अष्टमी तथा नवमी तक तीन दिन तक कात्यायन ऋषि कि पूजा ग्रहण किथी एवं विजया दशमी को महिषासुर का वध किया था।

देवी कात्यायनी का वर्ण स्वर्ण के समान चमकीला हैं, इस कारण देवी कात्यायनी का स्वरूप अत्यंत ही भव्य एवं दिव्य प्रतित होता हैं। कात्यायनी कि चार भुजाएं हैं। उनेके दाहिनी तरफ का ऊपर वाला हाथ अभय मुद्रामें है, तथा नीचे वाला वरमुद्रामें, बाई तरफ के ऊपर वाले हाथ में कमल पुष्प सुशोभित हैं, नीचे वाले हाथमें तलवार सुशोभित रहती हैं। कात्यायनी देवी अपने वाहन सिंह विराजन होती हैं।



मंत्र:

चंद्रहासोज्जवलकरा शाइलवरवाहना। कात्यायनी शुभं दद्याद्देवी दानवघातिनी।।

ध्यान:-

वन्दे वांछित मनोरथार्थचन्द्रार्धकृतशेखराम्।
सिंहारूढचतुर्भुजाकात्यायनी यशस्वनीम्॥
स्वर्णवर्णाआज्ञाचक्रस्थितांषष्ठम्दुर्गा त्रिनेत्राम।
वराभीतंकरांषगपदधरांकात्यायनसुतांभजामि॥
पटाम्बरपरिधानांस्मेरमुखींनानालंकारभूषिताम्।
मंजीर हार केयुरकिंकिणिरत्नकुण्डलमण्डिताम्।।
प्रसन्नवंदनापज्जवाधरांकातंकपोलातुगकुचाम्।
कमनीयांलावण्यांत्रिवलीविभूषितनिम्न नाभिम्॥

स्तोत्र:-

कंचनाभां कराभयंपदमधरामुकुटोज्वलां। स्मेरमुखीशिवपत्नीकात्यायनसुतेनमोअस्तुते॥
पटाम्बरपरिधानांनानालंकारभूषितां। सिंहास्थितांपदमहस्तांकात्यायनसुतेनमोअस्तुते॥
परमदंदमयीदेवि परब्रह्म परमात्मा। परमशक्ति,परमभक्त्किात्यायनसुतेनमोअस्तुते॥
विश्वकर्ती,विश्वभर्ती,विश्वहर्ती,विश्वप्रीता। विश्वाचितां,विश्वातीताकात्यायनसुतेनमोअस्तुते॥
कां बीजा, कां जपानंदकां बीज जप तोषिते। कां कां बीज जपदासक्ताकां कां सन्तुता॥
कांकारहर्षिणीकां धनदाधनमासना। कां बीज जपकारिणीकां बीज तप मानसा॥
कां कारिणी कां मूत्रपूजिताकां बीज धारिणी। कां कीं कूंकै क:ठ:छ:स्वाहारूपणी॥

कवच:-

कात्यायनौमुख पातुकां कां स्वाहास्वरूपणी। ललाटेविजया पातुपातुमालिनी नित्य संदरी॥ कल्याणी हृदयंपातुजया भगमालिनी॥

मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का आज्ञा चक्र जाग्रत होता हैं। देवी कात्यायनी के पूजन से रोग, शोक, भय से मुक्ति मिलती हैं। कात्यायनी देवी को वैदिक युग में ये ऋषि-मुनियों को कष्ट देने वाले रक्ष-दानव, पापी जीव को अपने तेज से ही नष्ट कर देने वाली माना गया हैं।

***

अष्टम महागौरी

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्र के आठवें दिन मां के महागौरी स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। महागौरी स्वरूप उज्जवल, कोमल, श्वेतवर्णा तथा श्वेत वस्त्रधारी हैं। महागौरी मस्तक पर चन्द्र का मुकुट धारण किये हुए हैं। कान्तिमणि के समान कान्ति वाली देवी जो अपनी चारों भुजाओं में क्रमशः शंख, चक्र, धनुष और बाण धारण किए हुए हैं, उनके कानों में रत्न जडितकुण्डल झिलमिलाते रहते हैं। महागौरीवृषभ के पीठ पर विराजमान हैं। महागौरी गायन एवं संगीत से प्रसन्न होने वाली 'महागौरी' माना जाता हैं।



मंत्र:

श्वेते वृषे समरूढ़ा श्वेताम्बराधरा शुचि:।
महागौरी शुभं दद्यान्महादेवप्रमोददा।।

ध्यान:-

वन्दे वांछित कामार्थेचन्द्रार्घकृतशेखराम्।
सिंहारूढाचतुर्भुजामहागौरीयशस्वीनीम्॥
पुणेन्दुनिभांगौरी सोमवक्रस्थितांअष्टम दुर्गा त्रिनेत्रम।
वराभीतिकरांत्रिशूल ढमरूधरांमहागौरींभजेम्॥
पटाम्बरपरिधानामृदुहास्यानानालंकारभूषिताम्।
मंजीर, कार, केयूर, किंकिणिरत्न कुण्डल मण्डिताम्॥
प्रफुल्ल वदनांपल्लवाधरांकांत कपोलांचैवोक्यमोहनीम्।
कमनीयांलावण्यांमृणालांचंदन गन्ध लिप्ताम्॥

स्तोत्र:-

सर्वसंकट हंत्रीत्वंहिधन ऐश्वर्य प्रदायनीम्।
ज्ञानदाचतुर्वेदमयी,महागौरीप्रणमाम्यहम्॥
सुख शांति दात्री, धन धान्य प्रदायनीम्।
डमरूवाघप्रिया अघा महागौरीप्रणमाम्यहम्॥
त्रैलोक्यमंगलात्वंहितापत्रयप्रणमाम्यहम्।
वरदाचैतन्यमयीमहागौरीप्रणमाम्यहम्॥

कवच:-

ओंकारः पातुशीर्षोमां, हीं बीजंमां हृदयो। क्लींबीजंसदापातुनभोगृहोचपादयो॥
ललाट कर्णो,हूं, बीजंपात महागौरीमां नेत्र घ्राणों। कपोल चिबुकोफट् पातुस्वाहा मां सर्ववदनो॥

मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का सोमचक्र जाग्रत होता हैं। महागौरी के पूजन से व्यक्ति के समस्त पाप धुल जाते हैं। महागौरी के पूजन करने वाले साधन के लिये मां अन्नपूर्णा के समान, धन, वैभव और सुख-शांति प्रदान करने वाली एवं संकट से मुक्ति दिलाने वाली देवी महागौरी हैं।

***

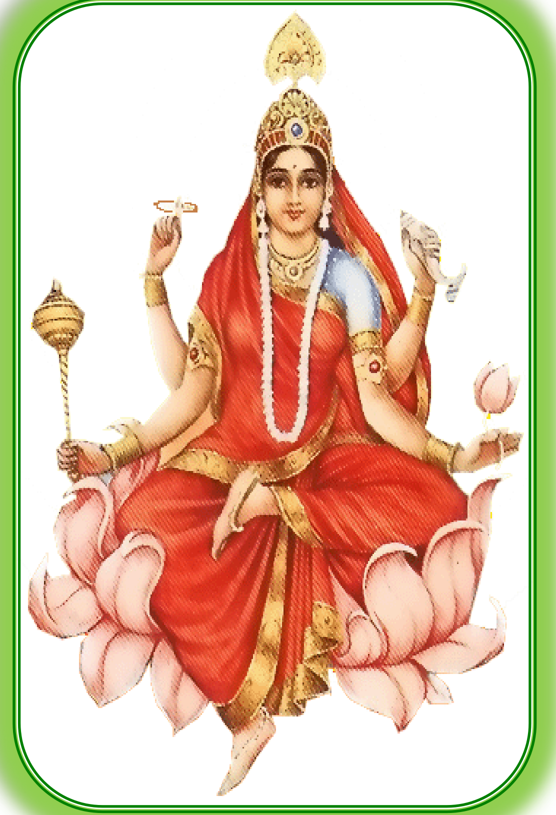
नवम् सिद्धिदात्री

संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्र के नौवें दिन मां के सिद्धिदात्री स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। देवी सिद्धिदात्री का स्वरूप कमल आसन पर विराजित, चार भुजा वाला, दाहिनी तरफ के नीचे वाले हाथ में चक्र, ऊपर वाले हाथ में गदा, बाई तरफ से नीचे वाले हाथ में शंख और ऊपर वाले हाथ में कमल पुष्प सुशोभित रहते हैं।

मंत्र : सिद्धगंधर्वयक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि। सेव्यमाना सदा भूयात सिद्धिदा सिद्धिदायिनी।।

ध्यान:-



वन्दे वांछितमनरोरार्थेचन्द्रार्घकृतशेखराम्।
कमलस्थिताचतुर्भुजासिद्धि यशस्वनीम्॥
स्वर्णावर्णानिर्वाणचक्रस्थितानवम् दुर्गा त्रिनेत्राम।
शंख, चक्र, गदा पदमधरा सिद्धिदात्रीभजेम्॥
पटाम्बरपरिधानांसुहास्यानानालंकारभूषिताम्।
मंजीर, हार केयूर, किंकिणिरत्नकुण्डलमण्डिताम्॥
प्रफुल्ल वदनापल्लवाधराकांत कपोलापीनपयोधराम्।
कमनीयांलावण्यांक्षीणकटिंनिम्ननाभिंनितम्बनीम्॥

स्तोत्र:-

कंचनाभा शंखचक्रगदामधरामुकुटोज्वलां।
स्मेरमुखीशिवपत्नीसिद्धिदात्रीनमोअस्तुते॥
पटाम्बरपरिधानांनानालंकारभूषितां।
नलिनस्थितांपलिनाक्षींसिद्धिदात्रीनमोअस्तुते॥
परमानंदमयीदेवि परब्रह्म परमात्मा।
परमशक्ति,परमभक्तिसिद्धिदात्रीनमोअस्तुते॥
विश्वकर्तीविश्वभर्तीविश्वहर्तीविश्वप्रीता। विश्वर्चिताविश्वतीतासिद्धिदात्रीनमोअस्तुते॥
भुक्तिमुक्तिकारणीभक्तकष्टनिवारिणी। भवसागर तारिणी सिद्धिदात्रीनमोअस्तुते।।
धर्मार्थकामप्रदायिनीमहामोह विनाशिनी। मोक्षदायिनीसिद्धिदात्रीसिद्धिदात्रीनमोअस्तुते॥

कवच:-

ओंकार: पातुशीर्षोमां, ऐं बीजंमां हृदयो। हीं बीजंसदापातुनभोगृहोचपादयो॥ ललाट कर्णोश्रींबीजंपातुक्लींबीजंमां नेत्र घ्राणो। कपोल चिबुकोहसौ:पातुजगत्प्रसूत्यैमां सर्व वदनो॥

मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का निर्वाण चक्र जाग्रत होता हैं। सिद्धिदात्री के पूजन से व्यक्ति कि समस्त कामनाओं कि पूर्ति होकर उसे ऋद्धि, सिद्धि कि प्राप्ति होती हैं। पूजन से यश, बल और धन कि प्राप्ति कार्यो में चले आ रहे बाधा-विध्न समाप्त हो जाते हैं। व्यक्ति को यश, बल और धन कि प्राप्ति होकर उसे मां कि कृपा से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष कि भी प्राप्ति स्वत: हो जाती हैं।

***

चैत्र नवरात्र में देवी आराधना विशेष फलदायी होती है।

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥

अर्थातः देवी को नमस्कार हैं, महादेवी को नमस्कार हैं। महादेवी शिवा को सर्वदा नमस्कार हैं। प्रकृति एवं भद्रा को मेरा प्रणाम हैं। हम लोग नियमपूर्वक देवी जगदम्बा को नमस्कार करते हैं।

उपरोक्त मंत्र से देवी दुर्गा का स्मरण कर प्रार्थना करने मात्र से देवी प्रसन्न होकर अपने भक्तों की इच्छा पूर्ण करती हैं। समस्त देव गण जिनकी स्तुति प्राथना करते हैं। माँ दुर्गा अपने भक्तो की रक्षा कर उन पर कृपा द्रष्टी वर्षाती हैं और उसको उन्नती के शिखर पर जाने का मार्ग प्रसस्त करती हैं। इस लिये ईश्वर में श्रद्धा विश्वार रखने वाले सभी मनुष्य को देवी की शरण में जाकर देवी से निर्मल हृदय से प्रार्थना करनी चाहिये।

देवी प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
पसीद विश्वेतरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवी चराचरस्य।

अर्थातः शरणागत कि पीड़ा दूर करने वाली देवी आप हम पर प्रसन्न हों। संपूर्ण जगत माता प्रसन्न हों। विश्वेश्वरी देवी विश्व कि रक्षा करो। देवी आप हि एक मात्र चराचर जगत कि अधिश्वरी हो।

सर्वमंगल-मांगल्ये शिवेसर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥
सृष्टिस्थिति विनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते॥

अर्थातः हे देवी नारायणी आप सब प्रकार का मंगल प्रदान करने वाली मंगलमयी हो। कल्याण दायिनी शिवा हो। सब पुरूषार्थों को सिद्ध करने वाली शरणा गतवत्सला तीन नेत्रों वाली गौरी हो, आपको नमस्कार हैं। आप सृष्टि का पालन और संहार करने वाली शक्तिभूता सनातनी देवी, आप गुणों का आधार तथा सर्वगुणमयी हो। नारायणी देवी तुम्हें नमस्कार है।

इस मंत्र के जप से माँ कि शरणागती प्राप्त होती हैं। जिस्से मनुष्य के जन्म-जन्म के पापों का नाश होता है। मां जननी सृष्टि कि आदि, अंत और मध्य हैं।

देवी से प्रार्थना करें –

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥

अर्थातः शरण में आए हुए दीनों एवं पीडितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली तथा सब कि पीड़ा दूर करने वाली नारायणी देवी आपको नमस्कार है।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रूष्टा तु कामान सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता हाश्रयतां प्रयान्ति।

अर्थातः देवी आप प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट कर देती हो और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके है। उनको विपत्ति आती ही नहीं। तुम्हारी शरण में गए हुए मनुष्य दूसरों को शरण देने वाले हो जाते हैं।

सर्वबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरी।
एवमेव त्वया कार्यमस्यध्दैरिविनाशनम्।

अर्थातः हे सर्वेश्वरी आप तीनों लोकों कि समस्त बाधाओं को शांत करो और हमारे सभी शत्रुओं का नाश करती रहो।

शांतिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने।
ग्रहपीडासु चोग्रासु महात्मयं शणुयात्मम।

अर्थातः सर्वत्र शांति कर्म में, बुरे स्वप्न दिखाई देने पर तथा ग्रह जनित पीड़ा उपस्थित होने पर माहात्म्य श्रवण करना चाहिए। इससे सब पीड़ाएँ शांत और दूर हो जाती हैं।

यहि कारण हैं सहस्त्रयुगों से मां भगवती जगतजननी दुर्गा की उपासना प्रति वर्ष वसंत, आश्विन एवं गुप्त नवरात्री में विशेष रुप से करने का विधान हिन्दु धर्म ग्रंथो में हैं।

***

चैत्र नवरात्र व्रत विशेष लाभदायी होता हैं।

संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दु संसकृति के अनुशार नववर्ष का शुभारंभ चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि से होता है। इस दिन से वसंतकालीन नवरात्र की शुरुआत होती हैं। विद्वानो के मतानुशार चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की समाप्ति के साथ भूलोक के परिवेश में एक विशेष परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगता हैं जिसके अनेक स्तर और स्वरूप होते हैं।



इस दौरान ऋतुओं के परिवर्तन के साथ नवरात्रों का तौहार मनुष्य के जीवन में बाह्य और आंतरिक परिवर्तन में एक विशेष संतुलन स्थापित करने में सहायक होता हैं। जिस तरह बाह्य जगत में परिवर्तन होता है उसी प्रकार मनुष्य के शरीर में भी परिवर्तन होता है। इस लिये नवरात्र उत्सव को आयोजित करने का उद्देश्य होता हैं की मनुष्य के भीतर में उपयुक्त परिवर्तन कर उसे बाह्य परिवर्तन के अनुकूल बनाकर उसे स्वयं के और प्रकृति के बीच में संतुलन बनाये रखना हैं।

नवरात्रों के दौरान किए जाने वाली पूजा-अर्चना, व्रत इत्यादि से पर्यावरण की शुद्धि होती हैं। उसीके साथ-साथ मनुष्य के शरीर और भावना की भी शुद्धि हो जाती हैं। क्योकि व्रत-उपवास शरीर को शुद्ध करने का पारंपरिक तरीका हैं जो प्राकृतिक-चिकित्सा का भी एक महत्वपूर्ण तत्व है। यही कारण हैं की विश्व के प्रायः सभी प्रमुख धर्मों में व्रत का महत्व हैं। इसी लिए हिन्दू संस्कृति में युगो-युगो से नवरात्रों के दौरान व्रत करने का विधान हैं। क्योकी व्रत के माध्यम से प्रथम मनुष्य का शरीर शुद्ध होता हैं, शरीर शुद्ध होतो मन एवं भावनाएं शुद्ध होती हैं। शरीर की शुद्धि के बिना मन व भाव की शुद्धि संभव नहीं हैं। चैत्र नवरात्रों के दौरान सभी प्रकार के व्रत-उपवास शरीर और मन की शुद्धि में सहायक होते हैं।

नवरात्रों में किये गये व्रत-उपवास का सीधा असर हमारे अच्छे स्वास्थ्य और रोगमुक्ति के लिये भी सहायक होता हैं। बड़ी धूम-धाम से किया गया नवरात्रों का आयोजन हमें सुखानुभूति एवं आनंदानुभूति प्रदान करता हैं।

मनुष्य के लिए आनंद की अवस्था सबसे अच्छी अवस्था हैं। जब व्यक्ति आनंद की अवस्था में होता हैं तो उसके शरीर में तनाव उत्पन्न करने वाले सूक्ष्म कोष समाप्त हो जाते हैं और जो सूक्ष्म कोष उत्सजिर्त होते हैं वे हमारे शरीर के लिए अत्यंत लाभदायक होते हैं। जो हमें नई व्याधियों से बचाने के साथ ही रोग होने की दशा में शीघ्र रोगमुक्ति प्रदान करने में भी सहायक होते हैं।

नवरात्र में दुर्गासप्तशती को पढने या सुनने से देवी अत्यन्त प्रसन्न होती हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। सप्तशती का पाठ उसकी मूल भाषा संस्कृत में करने पर ही पूर्ण प्रभावी होता हैं।

व्यक्ति को श्रीदुर्गासप्तशती को भगवती दुर्गा का ही स्वरूप समझना चाहिए। पाठ करने से पूर्व श्रीदुर्गासप्तशती कि पुस्तक का इस मंत्र से पंचोपचारपूजन करें-

नमोदेव्यैमहादेव्यैशिवायैसततंनमः । नमः प्रकृत्यैभद्रायैनियताः प्रणताः स्मताम्॥

जो व्यक्ति दुर्गासप्तशतीके मूल संस्कृत में पाठ करने में असमर्थ हों तो उस व्यक्ति को सप्तश्लोकी दुर्गा को पढने से लाभ प्राप्त होता हैं। क्योकि सात श्लोकों वाले इस स्तोत्र में श्रीदुर्गासप्तशती का सार समाया हुवा हैं।

जो व्यक्ति सप्तश्लोकी दुर्गा का भी न कर सके वह केवल नर्वाण मंत्र का अधिकाधिक जप करें।

देवी के पूजन के समय इस मंत्र का जप करे।

जयन्ती मङ्गलाकाली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधानमोऽस्तुते॥

देवी से प्रार्थना करें-

विधेहिदेविकल्याणंविधेहिपरमांश्रियम्। रूपंदेहिजयंदेहियशोदेहिद्विषोजहि॥

अर्थातः हे देवि! आप मेरा कल्याण करो। मुझे श्रेष्ठ सम्पत्ति प्रदान करो। मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे काम-क्रोध इत्यादि शत्रुओं का नाश करो।

विद्वानो के अनुशार सम्पूर्ण नवरात्रव्रत के पालन में जो लोगों असमर्थ हो वह नवरात्र के सात रात्री,पांच रात्री, दों रात्री और एक रात्री का व्रत भी करके लाभ प्राप्त कर सकते हैं। नवरात्र में नवदुर्गा की उपासना करने से नवग्रहों का प्रकोप शांत होता हैं।

सर्व कार्य सिद्धि कवच



जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

मनुष्य को अनुभूति होती हैं। जैसे उस शक्ति की उपस्थिती से वातावरण में आकस्मिक परिवर्तन होना, उनके उपस्थित होने से किसी दिव्य तेज अथवा शक्ति पूंज, वातावरण में सुगंध का फैलना इत्यादि का आभास होता हैं एवं देवी-देवता किसी मनुष्य देह में प्रवेश नहीं करते या वह किसी भी तरह के भौतिक चिह्न नहीं छोड़ते!

कुछ विद्वानों का कथ हैं की देवी-देवता के दर्शन साधक को तब होता है, जब उसके अंतर मन के भाव गहन होते हैं, तब साधना के दौरान एक समय आता हैं जब साधक को यह अनुभव होता हैं की देवी-देवता उसके सामने प्रकट हो गये हैं या उन्हें दर्शन दे रहे हैं, उसी रुप में या आकृति मे होते हैं जो आकृति साधक के अंतर मन में अंकित होती हैं। साधक को अनुभूति होती हैं की वह देवी-देवता उनसे बाते कर रहा हैं, यह साधक की कल्पना का साकार होना है। वह देवी-देवता वास्तव में साधक से बात करती हैं उसके प्रश्नो का उत्तर देती है या उसे आशीर्वाद देकर दर्शन देती हैं। यह सब केवल साधक को ही अनुभूत होती हैं, वहां कोई और अन्य व्यक्ति भी हो तो साधक के अलावा किसी दूसरे को उसकी अनुभूति या दर्शन नहीं होता।

यह सब साधक के गहन भाव के अनुरुप ही प्रकट होती हैं लेकिन किसी दूसरे मनुष्य के शरीर में प्रवेश नहीं करती!

विशेष सूचना: यहा वर्णित लेख केवल लेखक के शोध एवं अनुभवों के आधार पर लिखा गया हैं। इस लेख का उद्देश्य केवल पाठको का मार्गदर्शन मात्र हैं, किसी सी भी व्यक्ति विशेष की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का नहीं हैं। इस विषय में भिन्न-भिन्न लोगों के विचार भिन्न हो सकते हैं।

***

नवरात्र में लाभदायक कन्या पूजन

संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्र में कुमारिका पूजन-व्रत-अनुष्ठान को अनिवार्य अंग माना जाता हैं। नवरात्रमें कुंवारी कन्याओं का विधि-विधान से पूजन कर उनको भोजन कराके वस्त्र-दक्षिणा आदि भेट देकर संतुष्ट करना चाहिए। कुमारिका पूजन हेतु कन्या दो से दस वर्ष तक ही होनी चाहिए।

दो वर्ष की कन्या को कुमारी माना जाता हैं।

कुमारी पूजन से व्यक्ति के दु:ख-दरिद्रता का शमन होता हैं।

कुमारी के पूजन का मंत्र-

कुमारस्यचतत्त्वानिया सृजत्यपिलीलया।
कादीनपिचदेवांस्तांकुमारींपूजयाम्यहम्॥

अर्थातः जो कुमार कार्तिकेय कि जननी एवं ब्रह्मादि देवताओं की लीलापूर्वक रचना करती हैं, उन कुमारी देवी कि मैं पूजा करता हूं।

तीन वर्ष की कन्या को त्रिमूर्ति माना जाता हैं।

त्रिमूर्ति के पूजन से व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम कि प्राप्ति होती हैं। इसी के साथ घर में धन-धान्य में वृद्धि होता हैं, तथा पुत्र-पौत्रों का लाभ प्राप्त होता हैं।

त्रिमूर्ति के पूजन का मंत्र-

सत्वादिभिस्त्रिमूर्तिर्यातैर्हिनानास्वरूपिणी।
त्रिकालव्यापिनीशक्तिस्त्रिमूर्तिपूजयाम्यहम्॥

अर्थातः जो सत्व, रज, तम तीनों गुणों के तीन रूप धारण करती हैं, जिनके अनेक रूप हैं एवं जो तीनों कालों में व्याप्त हैं, उन भगवती त्रिमूर्ति कि मैं पूजा करता हूँ।

चार वर्ष की कन्या को कल्याणी माना जाता हैं।

कल्याणी के पूजन से व्यक्ति को विजय, विद्या, सत्ता एवं सुख कि प्राप्ति होकर व्यक्ति कि समस्त कामनाए पूर्ण होती हैं।

कल्याणी के पूजन का मंत्र-

कल्याणकारिणीनित्यंभक्तानांपूजितानिशम्।
पूजयामिचतांभक्त्याकल्याणीम्सर्वकामदाम्॥

अर्थातः निरंतर सुपूजितहोने पर भक्तों का कल्याण करना जिसका स्वभाव ही है, सब मनोरथ पूर्ण करने वाली उन भगवती कल्याणी की मैं पूजा करता हूं।

पांच वर्ष की कन्या को रोहिणी माना जाता हैं।

रोहिणी के पूजन से व्यक्ति को उत्तम स्वास्थ्य कि प्राप्ति होकर उसके समस्त रोग का विनाश होता हैं।

रोहिणी के पूजन का मंत्र-

रोहयन्तीचबीजानिप्राग्जन्मसंचितानिवै।

या देवी सर्वभूतानांरोहिणीम्पूजयाम्यहम्॥

अर्थातः जो सब प्राणियों के संचित बीजों का रोहण करती हैं, उन भगवती रोहिणी कि मैं उपासना करता हूं।

छः वर्ष की कन्या को कालिका माना जाता हैं।

कालिका के पूजन से व्यक्ति के विरोधि तथा शत्रु का शमन हो कर उसपर विजय प्राप्त होती हैं।

कालिका के पूजन का मंत्र-

काली कालयतेसर्वब्रह्माण्डंसचराचरम्।

कल्पान्तसमयेया तांकालिकाम्पूजयाम्यहम्॥

अर्थातः कल्प के अन्त में जो चर-अचर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अपने अंदर विलीन कर लेती हैं, उन भगवती कालिका कि मैं पूजा करता हूं।

सात वर्ष की कन्या को चण्डिका माना जाता हैं।

चण्डिका के पूजन से व्यक्ति को धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती हैं।

चण्डिका के पूजन का मंत्र-

चण्डिकांचण्डरूपांचचण्ड-मुण्ड विनाशिनीम्।

तांचण्डपापहरिणींचण्डिकांपूजयाम्यहम्॥

अर्थातः जो चण्ड-मुण्ड का संहार करने वाली हैं तथा जिनकी कृपा से घोर पाप भी तत्काल नष्ट हो जाता है, उन भगवती चण्डिका कि मैं पूजा करता हूं।

आठ वर्ष की कन्या को शाम्भवी माना जाता हैं।

शाम्भवी के पूजन से व्यक्ति कि निर्धनता दूर होती हैं, वाद-विवाद में विजय प्राप्त होता हैं।

शाम्भवी के पूजन का मंत्र-

अकारणात्समुत्पत्तिर्यन्मयैः परिकीर्तिता।

यस्यास्तांसुखदांदेवींशाम्भवींपूजयाम्यहम्॥

अर्थातः वेद जिनके प्राकट्य के विषय में कारण का अभाव बतलाते हैं तथा सबको सुखी बनाना जिनका स्वाभाविक गुण है, उन भगवती शाम्भवीकी मैं पूजा करता हूं।

नौ वर्ष की कन्या को दुर्गा माना जाता हैं।

दुर्गा के पूजन से व्यक्ति के दुष्ट से दुष्ट व्यक्ति का दमन होता हैं। व्यक्ति के कठिन से कठिन कार्य भी सरलता से सिद्धि होते हैं।

दुर्गा के पूजन का मंत्र-

दुर्गात्त्रायतिभक्तंया सदा दुर्गार्तिनाशिनी।

दुर्ज्ञेयासर्वदेवानांतांदुर्गापूजयाम्यहम्॥

अर्थातः जो भक्त को सदा संकट से बचाती हैं, दुःख दूर करना जिनका स्वभाव हैं तथा देवता लोग भी जिन्हें जानने में असमर्थ हैं, उन भगवती दुर्गा की मैं पूजा करता हूं।

दस वर्ष की कन्या को सुभद्रा माना जाता हैं।

सुभद्रा के पूजन से व्यक्ति को समस्त लोक में सुख प्राप्त होता हैं।

सुभद्रा के पूजन का मंत्र-

सुभद्राणि चभक्तानांकुरुतेपूजितासदा।

अभद्रनाशिनींदेवींसुभद्रांपूजयाम्यहम्॥

अर्थातः जो सुपूजित होने पर भक्तों का कल्याण करने में सदा संलग्न रहती हैं, उन अशुभविनाशिनीभगवती सुभद्रा की मैं पूजा करता हूं।

नवरात्रकी अष्टमी अथवा नवमी के दिन कुमारिका-पूजन करने पर विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

विद्या प्राप्ति हेतु सरस्वती कवच और यंत्र



आज के आधुनिक युग में शिक्षा प्राप्ति जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है। हिन्दू धर्म में विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती को माना जाता हैं। इस लिए देवी सरस्वती की पूजा-अर्चना से कृपा प्राप्त करने से बुद्धि कुशाग्र एवं तीव्र होती है।

आज के सुविकसित समाज में चारों ओर बदलते परिवेश एवं आधुनिकता की दौड में नये-नये खोज एवं संशोधन के आधारो पर बच्चो के बौधिक स्तर पर अच्छे विकास हेतु विभिन्न परीक्षा, प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धाएं होती रहती हैं, जिस में बच्चे का बुद्धिमान होना अति आवश्यक हो जाता हैं। अन्यथा बच्चा परीक्षा, प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धा में पीछड जाता हैं, जिससे आजके पढेलिखे आधुनिक बुद्धि से सुसंपन्न लोग बच्चे को मूर्ख अथवा बुद्धिहीन या अल्पबुद्धि समझते हैं। एसे बच्चो को हीन भावना से देखने लोगो को हमने देखा हैं, आपने भी कई सैकडो बार अवश्य देखा होगा?

ऐसे बच्चो की बुद्धि को कुशाग्र एवं तीव्र हो, बच्चो की बौद्धिक क्षमता और स्मरण शक्ति का विकास हो इस लिए सरस्वती कवच अत्यंत लाभदायक हो सकता हैं।

सरस्वती कवच को देवी सरस्वती के परंम दूर्लभ तेजस्वी मंत्रो द्वारा पूर्ण मंत्रसिद्ध और पूर्ण चैतन्ययुक्त किया जाता हैं। जिस्से जो बच्चे मंत्र जप अथवा पूजा-अर्चना नहीं कर सकते वह विशेष लाभ प्राप्त कर सके और जो बच्चे पूजा-अर्चना करते हैं, उन्हें देवी सरस्वती की कृपा शीघ्र प्राप्त हो इस लिये सरस्वती कवच अत्यंत लाभदायक होता हैं।

मां के चरणों निवास करते समस्त हैं तीर्थ

संकलन गुरुत्व कार्यालय

त्याग और नि:स्वार्थ प्रेम कि प्रति मूर्ति जन्म देने वाली मां अपनी संतान को नौ महिने गर्भ में उसका पोषण कर, असहनीय प्रसव कष्ट सहकर उसे जन्म देती हैं। मां के इस त्याग और नि:स्वार्थ प्रेम का बदला चाहकर भी कोई नहीं चुका सकता।

समस्त व्यक्ति कि प्रथन गुरु मां होती हैं। क्योकि मां से व्यक्ति को जीवन के आदर्श और संस्कार आदि ज्ञान प्राप्त होता हैं। हमारे धर्म शास्त्रो में उल्लेख मिलता हैं कि **उपाध्याओं से दस गुना श्रेष्ठ आचार्य होते हैं, एवं आचार्य से सौ गुना श्रेष्ठ पिता और पिता से हजार गुना श्रेष्ठ माता होती है।** क्योकि मां के शरीर में सभी देवताओं और सभी तीर्थों का वास होता है। इसी लिए विश्व कि सर्वश्रेष्ठ भारतीय संस्कृति में केवल मां को भगवान के समान माना गया हैं। इस लिये मां पूज्य, स्तुति योग्य और आह्वान करने योग्य होती हैं।

महाभारत में भी उल्लेख मिलता हैं कि जब यक्ष ने युधिष्ठिर से सवाल किया कि भूमि से भी भारी कौन हैं? तो युधिष्ठिर ने उत्तर दिया

माता गुरुतरा भूमेः।

अर्थातः मां इस भूमि से भी कहीं अधिक भारी होती हैं।

आदि शंकराचार्य का कथन हैं '

कुपुत्रो जायेत यद्यपि कुमाता न भवति।

अर्थातः पुत्र तो कुपुत्र हो सकता है, पर माता कभी कुमाता नहीं हो सकती।

भगवान श्री रामका वचन हैं।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

अर्थातः जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होते हैं।

तैत्तिरीयोपनिषद् में उल्लेख किया गया हैं।

मातृ देवो भव:

शतपथ ब्राह्मण के वचन

मातृमान पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद

अर्थातः जिसके पास माता, पिता और गुरु जेसे तीन उत्तम शिक्षक हों वहीं मनुष्य सही अर्थ में मानव बनता हैं।

संसार में मातृमान वह होता है, जिसकी माता गर्भाधान से लेकर जब तक गर्भ के शेष विधि-विधान पूरे न हो जाएं, तब तक संयमीत और सुशील व्यवहार करे। क्योकि मातृ गर्भ में संस्कारित होने का सबसे बड़ा आदर्श उदाहरण महाभारत में अभिमन्यु का देखने को मिलता हैं, जिसने अपनी मां से गर्भ में ही चक्रव्यूह तोड़ने का उपाय सीख लिया था।

इसी मां कि ममता और नि:स्वार्थ प्रेम को पाने के लिये मनुष्य हि नहीं देवता भी तरसते हैं। इस लिये बार-बार अवतार लेकर अपनी लीलाएं बिखेरने के लिये पृथ्वी पर जन्म लेते हैं। इस्से ज्ञात होता हैं कि मां के चरणों में ही सभी तीर्थ का पुण्य प्राप्त हो जाता है।

इस लिये बच्चा सबसे पहले जो बोल नीकलते हैं, वह मां शब्द होता हैं, एक बार में ही झटके से बच्चे के मुंह से मां निकल जाता है यानि मां का उच्चारण भी सबसे आसान। अन्य सभी सब्दो में उसे थोडी कठिनाई होती हैं जिस कारण वह उन शब्दो का उच्चराण धीरे-धीरे सिखता हैं। सबसे बडा उदाहरण हैं, जो आपने आये दिन देखा सुना और आजमाय होगा, व्यक्ति जब परेशानी में होता हैं, कष्ट झेल रहा होता हैं, या आकस्मिक संकट आने, किसी आघात से शरीर पर चोट लग जाये तो पर सबसे पेहले मां को याद करता हैं। इस लिये मां को कष्ट देने वाली संतान को दैवि आपदा, दुःख, कष्ट भोगना पडता हैं। अपने मां का निरादर न करें और उनकी सेवा अवश्य करें।

***

समस्त विधि-विधार करते हुवे मां दुर्गा के मंत्र का जप करते रहें। उक्त समस्त्र क्रिया के पश्चयात आसन पर बैठे-बैठे देवी की तेजस्वी प्रतिमा या स्वरुप का त्राटक में ध्यान करते हुवे प्रतिमा को स्थापित करें। प्रतिमा को स्थापित कर। मंत्र पढ़ते हुवे अग्नि में हवि दें। दस दिनों तक प्रतिदिन 1188 मंत्रों का जप करें। मंत्र जप के दौरान देवी दुर्गा की प्रतिमा पर अपना ध्यान बनाये रखें।

लाभ: उक्त विधि से साधना करने से मां दुर्गा के आशिर्वाद से साधक के आत्मबल, ओज, तेज, बल, पराक्रम में वृद्धि होती हैं, उसे स्वास्थ्यलाभ प्राप्त होता हैं। साधक को अपने कार्य में मनोवांछित सफलता की प्राप्ति होती हैं।

दुर्गाष्टाक्षर मंत्र साधना

विधि:–

दुर्गाष्टाक्षर मंत्र अत्यंत्र गोपनीय हैं। शास्त्रों में दुर्गाष्टाक्षर मंत्र को शीघ्र सिद्धिदायक एवं दुर्लभ माना गया हैं। इस लिए दुर्गाष्टाक्षर मंत्र के बारे में उल्लेख किया गया हैं..

साक्षात्सिद्धिप्रदो मंत्रो दुर्गायाः कलिनाशनः ।
अष्टाक्षरो अष्ट सिद्धिशो गोपनीयो दिगंबरैः ॥

अर्थात: यह दुर्गा मंत्र साक्षात सिद्धि प्रदान करने वाला, कलेशों का नाश करने वाला हैं, आठ अक्षरों वाले इस मंत्र में अष्ट सिद्धि या समाहित हैं अतः यह अत्यंत गोपनीय हैं।



विनियोग

ॐ अस्य श्री दुर्गाष्टाक्षर मन्त्रस्य महेश्वर ऋषिः,
श्री दुर्गाष्टाक्षरात्मिका देवता, दुं बीजम्।,
ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकाय नमः इति दिग्बंधः,
धर्मार्थ काम मोक्षार्थे जपे विनियोगः।

ध्यान

दुर्वानिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटाम्
शंखाब्जखड्ग शर खेटक शूल चापान् ।
संतर्जनी च दधतीं महिषासनस्थां
दुर्गां नवारकुल पीठगतां भजेऽहम् ॥

मंत्र:–

ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः।
Om Hreem Dum Durgayai Namah ।

लाभ: दुर्गाष्टाक्षर मंत्र का एक लाख जप करने से यह मंत्र सिद्ध होता है। जप हेतु प्रतिदिन निश्चित समय का चुनाव करें और प्रतिदिन अपनी सुविधा के अनुशार 5, 11, 21 दिन में में किसी निश्चित संख्या में एक लाख जप पूर्ण करें। मंत्र जाप पूर्ण होने के पश्चयात प्रतिदिन प्रातः एक माला जप करें। इस मंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने से साधक को वाक् सिद्धि, संतान प्राप्ति, शत्रु विजय, रोग-मुक्ति और जीवन में सभी प्रकार के भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए दुर्गाष्टाक्षर मंत्र अचूक एवं सिद्धिदायक है ।

दुर्गा स्मृता मंत्र साधना

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडाये विच्चै ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं कांसोस्मितां हिरण्य प्राकारा मार्द्राज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् , ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं दुर्गेस्मृता हरसि भीतिमशेष जंतोः स्वस्थैः स्मृतामति मतीव शुभां ददासि। यदंति, यच्च दूरके भयं विंदति मामिह पवमान वितज्जहि, दारिद्र्य दुःख भयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्र चिता ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कांसोस्मितां हिरण्य प्राकारा मार्द्राज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयंतीं, पद्मेस्थितां पद्मम् वर्णां तामिहोपह्व्ये श्रियम्, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चामुंडाये विच्चै ।

उक्त दुर्गा स्मृता मंत्र के एक लाख जप करने से मंत्र सिद्ध होता हैं। जप पूर्ण होने पर मंत्र की दशांश होम करना चाहिए। दुर्गा स्मृता मंत्र के सिद्ध होने पर साधक को जीवन में सभी कार्यों में पूर्ण सिद्धियं प्राप्त होने लगती हैं। साधक संसार में सर्वत्र आदरणिय हो जाता हैं।

दुर्गा साधना

साधना हेतु सामग्री:-

माला: स्फटिक | दिशा: उत्तर | जप संख्या: सवा लाख | आसन: सफेद | वस्त्र: लाल वस्त्र, | समय : रात्री काल | अन्य पूजन सामग्रीयां: दुर्गा यंत्र, घी का दीप, जलपात्र

मंत्र:–

हुं दुर्गायै नमः ।

Hum Durgayai Namah |

विधि:-

किसी भी मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी या चतुर्दशी से यह प्रयोग प्रारंभ करें।

विद्वानों का कथ हैं की पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वार से जाप करने से मां दुर्गा के दर्शन अवश्य होते हैं।

मंत्र जाप की समाप्ति पर किसी कुंवारी कन्या को भोजन कराये उसे यथा शक्ति भेट एवं दक्षिणा दें कर प्रसन्न करने से यह साधना संपन्न होती हैं।

लाभ: देवी दुर्गा की असिम कृपा प्राप्त होती हैं, साधक को जीवन में सभी प्रकार के सुख साधनों की प्राप्ति होती हैं।

नवरात्र व्रतकथा

संकलन गुरुत्व कार्यालय

प्राचीन काल में चैत्र वंशी सुरथ नामक एक राजा राज करते थे। एक बार उनके शत्रुओं ने आक्रमण कर दिया और उन्हें युद्ध में हरा दिया। राजा को बलहीन देखकर उसके दुष्ट मंत्रियों ने राजा की सेना और खजाना अपने अधिकार में ले लिया। जिसके परिणाम स्वरूप राजा सुरथ दुखी और निराश होकर वन की ओर चले गए और वहां महर्षि मेधा के आश्रम में निवास करने लगे।

एक दिन आश्रम में राजा की भेंट समाघि नामक एक वैश्य से हुई, जो अपनी स्त्री और पुत्रों के दुर्व्यवहार से अपमानित होकर वहां निवास कर रहा था।

समाघि ने राजा को बताया कि वह अपने दुष्ट स्त्री और पुत्र आदिकों से अपमानित होने के बाद भी उनका मोह नहीं छोड़ पा रहा है। उसके चित्त को शान्ति नहीं मिल पा रही है। इधर राजा का मन भी उसके अधीन नहीं था। राज्य, धनादि की चिंता अभी भी उसे बनी हुई थी, जिससे वह बहुत दुखी थे। तदान्तर दोनों महर्षि मेधा के पास गए।

महर्षि मेधा यथायोग्य सम्भाष्ण करके दोनों से वार्ता आरंभ की। उन्होने बताया "यद्यपि हम दोनों अपने स्वजनों से अत्यंत अपमानित और तिरस्कृत होकर यहाँ आए हैं, फिर भी उनके प्रति हमारा मोह नहीं छूटता । इसका क्या कारण है?

महर्षि मेधा ने कहा मन शक्ति के अधीन होता है। आदिशक्ति भगवती के दो रूप हैं- विद्या और अविद्या। विद्या मन का स्वरूप है तथा अविद्या अज्ञान का स्वरूप है। अविद्या मोह की जननी है किंतु लोग मां भगवती को संसार का आदि कारण मानकर भक्ति करते हैं, मां भगवती उन्हें जीवन मुक्त कर देती है।" राजा सुरध ने पूछा- भगवन वह देवी कौन सी है, जिसको आप महामाया कहते हैं?

हे ब्रह्मन्। वह कैसे उत्पन्न हुई। और उसका क्या कार्य है? उसके चरित्र कौन कौन से हैं? प्रभो ! उसका प्रभाव, स्वरूप आदि के बारे में हमे विस्तार में बताइए।

महर्षि मेधा बोले - राजन्! वह देवी तो नित्यास्वरूप है, उनके द्वारा यह संसार रचा गया है। तब भी उसकी उत्पत्ति अनेक प्रकार से होती है, जिसे मैं बताता हूं। संसार को जलमय करके जब भगवान विष्णु यागनिद्रा का आश्रय लेकर, शेषशय्या पर सो रहे थे, तब मधु-कैटभ नाम के असुर उनके कानों के मैल से प्रकट हुए और वह श्री ब्रह्माजी को मारने के लिए तैयार हो गए। उनके इस भयानक रूप को देखकर ब्रह्माजी ने अनुमान लगा लिया कि भगवान विष्णु के सिवाय मेरा कोई रक्षक नहीं है। किन्तु विडम्बना यह थी कि भगवान विष्णु सो रहे थे। तब उन्होंने श्री भगवान को जगाने के लिए उनके नेत्रों में निवास करने वाली योगनिद्रा की स्तुति की।

तब सभीगुण अधिष्ठात्री देवी योगनिद्रा भगवान विष्णु के नेत्र, नसिका, मुख, बाहु और ह्रदय से निकलकर ब्रह्मा जी के सामने खड़ी हो गई। योगनिद्रा के निकलते ही श्रीहरि तुरंत जाग उठे। उन्हें देखकर राक्षस क्रोघित हो उठे और युद्ध के लिए उनकी तरफ दौड़े। भगवान विष्णु और उन राक्षसों में पाँच हजार वर्षो तक युद्ध हुआ। अंत में दोनों राक्षसों ने भगवान की वीरता देख कर उन्हें वर माँगने को कहा।

भगवान ने कहा यदि तुम मुझ पर प्रसन्न हो तो अब मेरे हाथों मर जाओ। बस, इतना ही वर में तुम से माँगता हूँ।

महर्षि मेधा बोले - इस तरह से जब वह धोखे में आ गए और अपने चारों ओर जल ही जल देखा तो भगवान से कहने लगे कि जहां जल न हो, उसी जगह हमारा वध कीजिए।

तथास्तु कहकर भगवान श्री हरि ने उन दोनो को अपनी जांघ पर लिटा कर सिर काट डाले।

महर्षि मेधा बोले इस तरह से यह देवी श्री ब्रह्माजी की

स्तुति करने पर प्रकट हुई थी, अब तुम से उनके प्रभाव का वर्णन करता हूं, जिसको ध्यान से सुनो - प्राचीन काल में देवताओं के स्वामी इंद्र और असुरों के स्वामी महिषासुर के बीच पूरे सौ वर्षो तक युद्ध हुआ था। इस युद्ध में देवताओं की सेना परास्त हो गई और इस प्रकार देवताओं को जीत महिषासुर इन्द्र बन बैठा हारे हुए देवता श्री ब्रह्माजी को साथ लेकर भगवान शंकर व विष्णु जी के पास गए और अपनी हार का सारा वृतांत उन्हें कह सुनाया। उन्होने महिषासुर के वध की प्रथना के उपाय की प्रर्थना की। साथ ही राज्य वापस पाने के लिए उनकी कृपा की स्तुति की।

देवताओं की बातें सुनकर भगवान विष्णु और शंकर जी को देवताओं पर बड़ा गुस्सा आया। गुस्से से भरे हुए भगवान विष्णु के मुख से बड़ा भारी तेज निकला और उसी प्रकार का तेज भगवान शंकर, ब्रह्मा आदि देवताओं के मुख से प्रकट हुआ, जिससे दसों दिशाएं जलने लगी। अंत में यही तेज एक देवी के रूप में परिवर्तित हो गया।

देवी ने सभी देवताओं से आयुध, शक्ति तथा आभूषण प्राप्त कर उच्च स्वर में गगनभेदी गर्जना की। जिससे समस्त विश्व में हलचल मच गई पृथ्वी, पर्वत आदि डोल गए। क्रोघित महिषासुर दैत्य सेना लेकर इस सिंहनाद की ओर दौड़ा। उसने देखा कि देवी की प्रभा से तीनों लोक प्रकाशित हो रहे हैं। महिषासुर ने अपना समस्त बल और छल लगा दिया परंतु देवी के सामने उसकी एक न चली। अंत में वह देवी के हाथों मारा गया। आगे चलकर यही देवी शुम्भ-निशुम्भ नामक असुरों का वध करने के लिए गौरी देवी के शरीर से उत्पन्न हुई।

उस समय देवी हिमालय पर विचर रहीं थी। जब शुम्भ-निशुम्भ के सेवकों ने उस परम मनोहर रूप वाली जगदंबा देवी को देखा और तुरन्त अपने स्वामी के पास जाकर कहा कि "हे महाराज ! दुनिया के सारे रत्न आपके अघिकार में हैं। वे सब आपके यहाँ शोभा पाते हैं। ऎसे ही एक स्त्री रत्न को हमने हिमालय की पहाडियों में देखा है। आप हिमालय को प्रकाशित करने वाली दिव्य क्रांति युक्त इस देवी का वरण कीजिए। यह सुनकर दैत्यराज शुम्भ ने सुग्रीव को अपना दूत बनाकर देवी के पास अपना विवाह प्रस्ताव भेजा। देवी ने प्रस्ताव को ना मानकर कहा जो मुझसे युद्ध में जीतेगा। मैं उससे विवाह करूँगी। यह सुनकर असुरेन्द्र के क्रोध का पारावार न रहा और उसने अपने सेनापति धूम्रलोचन को देवी के केशों से पकड़कर लाने का आदेश दिया। इस पर धूम्रलोचन साठ हजार राक्षसों की सेना साथ लेकर देवी से युद्ध के लिए वहाँ पहुँचा और देवी को ललकारने लगा। देवी ने सिर्फ अपनी हुंकार से ही उसे भस्म कर दिया और देवी के वाहन सिंह ने बाकी असुर सेना का संहार कर दिया।

इसके बाद चण्ड मुण्ड नामक दैत्यों को एक बड़ी सेना के साथ युद्ध के लिए भेजा गया। जब असुर देवी को तलवारें लेकर उनकी ओर बढे तब देवी ने काली का विकराल रूप धारण कर उन पर टूट पड़ी। कुछ ही देर में सम्पूर्ण सेना को नष्ट कर दिया। फिर देवी ने "हूँ" शब्द कहकर चण्ड का सिर काट दिया और मुण्ड को यमलोक पहुँचा दिया। तब से देवी काली की संसार में चामुंडा के नाम से ख्याति होने लगी।

महर्षि मेधा ने आगे बताया - चण्ड मुण्ड और सारी सेना के मारे जाने की खबर सुनकर असुरों के राजा शुम्भ ने अपनी सम्पूर्ण सेना को युद्ध के लिए तैयार होने की आज्ञा दी। शुम्भ की सेना को अपनी ओर आता देखकर देवी ने अपने धनुष की टंकार से पृथ्वी और आकाश के बीच का भाग गुंजा दिया। ऎसे भयंकर शब्द सुनकर राक्षसी सेना ने देवी और सिंह को चारों ओर से घेर लिया। उस समय दैत्यों के नाश के लिए और देवताओं के हित के लिए समस्त देवताओं की शक्तियाँ उनके शरीर से निकलकर उन्हीं के रूप में आयुधों से सजकर दैत्यों से युद्ध करने के लिए प्रस्तुत हो गई। इन देव शक्तियों से घिरे हुए भगवान शंकर ने देवी से कहा मेरी प्रसन्नता के लिए तुम शीघ्र ही इन असुरों को मारो।

इसके पश्चयात् देवी के शरीर से अत्यंत उग्र रूप वाली और सैंकड़ों गीदडियों के समान आवाज करने वाली चण्डिका शक्ति प्रकट हुई। उस अपराजिता देवी ने भगवान शंकर को अपना दूत बनाकर शुम्भ, निशुम्भ के

पास इस संदेश के साथ भेजा जो तुम्हे अपने जीवित रहने की इच्छा हो तो त्रिलोकी का राज्य इन्द्र को दे दो, देवताओं को उनका यज्ञ भाग मिलना आरंभ हो जाए और तुम पाताल को लौट जाओ, किन्तु यदि बल के गर्व से तुम्हारी लड़ने की इच्छा हो तो फिर आ जाओ, तुम्हारे माँस से मेरी योनियाँ तृप्त होंगी।"

चूंकि उस देवी ने भगवान शंकर को दूत के कार्य में नियुक्त किया था, इसलिए वह संसार में शिवदूती के नाम से विख्यात हुई। मगर दैत्य भला कहां मानने वाले थे। वे तो अपनी शक्ति के मद में चूर थे। उन्होने देवी की बात अनसुनी कर दी और युद्ध को तत्पर हो उठे। देखते ही देखते पुनः युद्ध छिड़ गया। किंतु देवी के समक्ष असुर कब तक ठहर सकते थे। कुछ ही देर में देवी ने उनके अस्त्र, शस्त्रों को काट डाला। जब बहुत से दैत्य काल के मुख में समा गए तो महादैत्य रक्तबीज युद्ध के लिए आगे बढ़ा। उसके शरीर से रक्त की बूंदे पृथ्वी पर जैसे ही गिरती थीं। तुरंत वैसे ही शरीर वाला दैत्य पृथ्वी पर उत्पन्न हो जाता था। यह देखकर देवताओं को भय हुआ, देवताओं को भयभीत देखकर चंडिका ने काली से कहा "हे चामुण्डे" तुम अपने मुख को फैलाओ और मेरे शस्त्राघात से उत्पन्न हुए रक्त बिन्दुओं तथा रक्त बिन्दुओं से उत्पन्न हुए महाअसुरों को तुम अपने इस मुख से भक्षण करती हुई रणभूमि में विचरो। इस प्रकार उस दैत्य का रक्त क्षीण हो जाएगा और वह स्वयं नष्ट हो जाएगा। इस प्रकार अन्य दैत्य उत्पन्न नहीं होंगे।

काली के इस प्रकार कहकर चण्डिका देवी ने रक्तबीज पर अपने त्रिशुल से प्रहार किया और काली देवी ने अपने मुख में उसका रक्त ले लिया। चण्डिका ने उस दैत्य को बज्र, बाण, खड्ग इत्यादि से मार डाला। महादैत्य रक्तबीज के मरते ही देवता अत्यंत प्रसन्न हुए और माताएं उन असुरों का रक्त पीने के पश्चयात उद्धत होकर नृत्य करने लगीं। रक्तबीज के मारे जाने पर शुम्भ व निशुम्भ को बड़ा क्रोध आया और अपनी बहुत बड़ी सेना लेकर महाशक्ति से युद्ध करने चल दिए। महापराक्रमी शुम्भ भी अपनी सेना सहित मातृगणों से युद्ध करने के लिए आ पहुँचा। किन्तु शीघ्र ही सभी दैत्य मारे गए और देवी ने शुम्भ निशुम्भ का संहार कर दिया। सारे संसार में शांति छा गई और देवता गण हर्षित होकर देवी की वंदना करने लगे। इन सब उपाख्यानों को सुनकर मेधा ऋषि ने राजा सुरथ तथा वणिक समाधि से देवी स्तुवन की विधिवत व्याख्या की, जिसके प्रभाव से दोनों नदी तट पर जाकर तपस्या में लीन हो गए। तीन वर्ष बाद दुर्गा माता ने प्रकट होकर दोनों को आशीर्वाद दिया। इस प्रकार वणिक तो संसारिक मोह से मुक्त होकर आत्मचिंतन में लग गया तथा राजा ने शत्रुओं को पराजित कर अपना खोया हुआ राज वैभव पुनः प्राप्त कर लिया।

सप्तश्लोकी दुर्गा

देवि त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्यविधायिनी।
कलौ हि कार्यसिद्धयर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः॥

देव उवाचः

श्रृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम्।
मया तवैव स्नेहेनाप्यम्बास्तुतिः प्रकाश्यते॥

विनियोगः

ॐ अस्य श्री दुर्गासप्तश्लोकीस्तोत्रमन्त्रस्य
नारायण ऋषिः अनुष्टप्छन्दः,

श्रीमह्मकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः,
श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं सप्तश्लोकीदुर्गापाठे विनियोगः।

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हिसा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥

सर्वमंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते॥

रोगानशोषानपहंसि तुष्टा रूष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति॥
सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्र्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्यद्वैरिविनाशनम्॥
॥ इति श्रीसप्तश्लोकी दुर्गा संपूर्णम् ॥

दुर्गा आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निसदिन ध्यावत हरि ब्रम्हा शिवरी॥१॥
मांग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्जवल से दोऊ नैना चन्द्रवदन नीको॥२॥

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे।
रक्त पुष्प गल माला कण्ठन पर साजे॥३॥
केहरि वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी।
सुर नर मुनि जन सेवत तिनके दुःख हारी॥४॥

कानन कुंडल शोभित नासाग्रे मोती।
कोटिक चंद्र दिवाकर राजत सम ज्योति॥५॥
शुंभ निशंभु विदारे महिषासुरधाती।
धूम्रविलोचन नैना निशदिन मदमाती॥६॥

चण्ड मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे सुर भयहीन करे॥७॥
ब्रम्हाणी रुद्राणी तुम कमलारानी।
आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी॥८॥

चौसंठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरुँ।
बाजत ताल मृदंगा अरु डमरुँ॥९॥
तुम ही जग की माता तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःखहर्ता सुख सम्पत्ति कर्ता॥१०॥

भुजा चार अति शोभित वर मुद्रा धारी।
मनवांच्छित फल पावे सेवत नर नारी॥११॥
कंचन थाल विराजत अगर कपुर बात्ती।
श्री माल केतु में राजत कोटि रतन ज्योती॥१२॥
माँ अम्बे जी की आरती जो कोई नर गाये।
कहत शिवानंद स्वामी सुख संपत्ति पाये॥१३॥

॥दुर्गा चालीसा॥

नमो नमो दुर्गे सुख करनी।
नमो नमो दुर्गे दुःख हरनी ॥१॥
निरंकार है ज्योति तुम्हारी।
तिहूँ लोक फैली उजियारी ॥२॥
शशि ललाट मुख महाविशाला।
नेत्र लाल भृकुटि विकराला ॥३॥
रूप मातु को अधिक सुहावे।
दरशकरत जन अति सुखपावे ॥४॥
तुम संसार शक्ति लै कीना।
पालन हेतु अन्न धन दीना ॥५॥

अन्नपूर्णा हुई जग पाला।
तुम ही आदि सुन्दरी बाला ॥६॥
प्रलयकाल सब नाशन हारी।
तुम गौरी शिवशंकर प्यारी ॥७॥
शिव योगी तुम्हरे गुण गावें।
ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें ॥८॥
रूप सरस्वती को तुम धारा।
दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा ॥९॥
धरयो रूप नरसिंह को अम्बा।
परगट भई फाड़कर खम्बा ॥१०॥

रक्षा करि प्रह्लाद बचायो।
हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो॥११॥
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं।
श्री नारायण अंग समाहीं॥१२॥
क्षीरसिन्धु में करत विलासा।
दयासिन्धु दीजै मन आसा॥१३॥
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी।
महिमा अमित नजात बखानी॥१४॥
मातंगी अरु धूमावति माता।
भुवनेश्वरी बगला सुख दाता॥१५॥

श्री भैरव तारा जग तारिणी।
छिन्नभालभव दुःखनिवारिणी॥१६॥
केहरि वाहन सोह भवानी।
लांगुर वीर चलत अगवानी॥१७॥
कर में खप्पर खड्ग विराजै।
जाको देख काल डर भाजै॥१८॥
सोहै अस्त्र और त्रिशूला।
जाते उठत शत्रु हिय शूला॥१९॥
नगरकोट में तुम्हीं विराजत।
तिहुँलोक में डंका बाजत॥२०॥

शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे।
रक्तबीज शंखन संहारे॥२१॥
महिषासुर नृप अति अभिमानी।
जेहि अघ भार मही अकुलानी॥२२॥
रूप कराल कालिका धारा।
सेन सहित तुम तिहि संहारा॥२३॥
परी गाढ़ सन्तन पर जब जब।
भईसहाय मातु तुम तब तब॥२४॥
अमरपुरी अरु बासव लोका।
तब महिमा सब रहें अशोका॥२५॥

ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी।
तुम्हें सदा पूजें नर-नारी॥२६॥
प्रेम भक्ति से जो यश गावें।
दुःख दारिद्र निकट नहिं आवें॥२७॥
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई।
जन्म-मरण ताकौ छुटि जाई॥२८॥
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी।
योगन हो बिन शक्ति तुम्हारी॥२९॥
शंकर आचारज तप कीनो।
कामअरु क्रोधजीति सब लीनो॥३०॥

निशिदिन ध्यान धरो शंकर को।
काहुकाल नहिं सुमिरो तुमको॥३१॥
शक्ति रूप का मरम न पायो।
शक्ति गई तब मन पछितायो॥३२॥
शरणागत हुई कीर्ति बखानी।
जय जय जय जगदम्बभवानी॥३३॥
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा।
दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा॥३४॥
मोको मातु कष्ट अति घेरो।
तुम बिन कौन हरै दुःख मेरो॥३५॥
आशा तृष्णा निपट सतावें।
मोह मदादिक सब बिनशावें॥३६॥
शत्रु नाश कीजै महारानी।
सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी॥३७॥
करो कृपा हे मातु दयाला।
ऋद्धि-सिद्धि दै करहु निहाला।३८॥
जब लगि जिऊँ दया फल पाऊँ।
तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊँ॥३९॥
श्री दुर्गा चालीसा जो कोई गावै।
सब सुख भोग परमपद पावै॥४०॥

दोहा: देवीदास शरण निज जानी।
करहु कृपा जगदम्ब भवानी॥

श्रीकृष्ण कृत देवी स्तुति

नवरात्र में श्रद्धा और प्रेमपूर्वक महाशक्ति भगवती देवी की पूजा-उपासना करने से यह निर्गुण स्वरूपा देवी पृथ्वी के समस्त जीवों पर दया करके स्वयं ही सगुणभाव को प्राप्त होकर ब्रह्मा, विष्णु और महेश रूप से उत्पत्ति, पालन और संहार कार्य करती हैं।

श्रीकृष्ण उवाच

त्वमेव सर्वजननी मूलप्रकृतिरीश्वरी। त्वमेवाद्या सृष्टिविधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका॥१॥

कार्यार्थे सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम्। परब्रह्मास्वरूपा त्वं सत्या नित्या सनातनी॥२॥

तेजःस्वरूपा परमा भक्तानुग्रहविग्रहा। सर्वस्वरूपा सर्वेशा सर्वाधारा परात्पर॥३॥

सर्वबीजस्वरूपा च सर्वपूज्या निराश्रया। सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा सर्वमंगलमंगला॥४॥

अर्थातः आप विश्वजननी मूल प्रकृति ईश्वरी हो, आप सृष्टि की उत्पत्ति के समय आद्याशक्ति के रूप में विराजमान रहती हो और स्वेच्छा से त्रिगुणात्मिका बन जाती हो। यद्यपि वस्तुतः आप स्वयं निर्गुण हो तथापि प्रयोजनवश सगुण हो जाती हो। आप परब्रह्म स्वरूप, सत्य, नित्य एवं सनातनी हो। परम तेजस्वरूप और भक्तों पर अनुग्रह करने आप शरीर धारण करती हों। आप सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी, सर्वाधार एवं परात्पर हो। आप सर्वाबीजस्वरूप, सर्वपूज्या एवं आश्रयरहित हो। आप सर्वज्ञ, सर्वप्रकार से मंगल करने वाली एवं सर्व मंगलों कि भी मंगल हो।

ऋग्वेदोक्त देवी सूक्तम्

अहमित्यष्टर्चस्य सूक्त स्य वागाम्भृणी ऋषिः सच्चित्सुखात्मकः सर्वगतः परमात्मा देवता, द्वितीयाया ऋचो जगती, शिष्टानां त्रिष्टुप् छन्दः, देवीमाहात्म्य पाठे विनियोगः।

ध्यानम्

सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः शङ्खं चक्रधनुःशरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता।

आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीरणन्नूपुरा दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला॥

देवीसूक्तम्

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा॥१॥

अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्। अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते॥२॥

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्य्यावेशयन्तीम्॥३॥

मयासो अन्नमत्ति योविपश्यति यः प्राणिति यईश्रृणोत्युक्त म्। अमन्तवो मां तउप क्षियन्ति श्रुधिश्रुत श्रद्धिवं ते वदामि॥४॥

अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः। यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्॥५॥

अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ। अहं जनाय समदं कृणोम्यहंद्यावापृथिवीआविवेश॥६॥

अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे। ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पशमि॥७॥

अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा। परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना संबभूव॥८॥

॥ सिद्धकुंजिकास्तोत्रम् ॥

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुंजिकास्तोत्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्॥१॥
न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम्॥२॥
कुंजिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम्॥३॥
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठमात्रेण संसिद्ध्येत्कुंजिकास्तोत्रमुत्तमम्॥४॥

अथ मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा

इति मंत्रः

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि॥१॥
नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि।
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे॥२॥
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका।
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते॥३॥
चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी॥४॥
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मंत्ररूपिणि।
धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी॥५॥
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु॥६॥
हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः
अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं॥७॥
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा॥
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा ॥८॥
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मंत्रसिद्धिं कुरुष्व मे॥
इदं तु कुंजिकास्तोत्रं मंत्रजागर्तिहेतवे।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति॥
यस्तु कुंजिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा॥
। इति श्री कुंजिकास्तोत्रम् संपूर्णम्।

दुर्गाष्टकम्

दुर्गे परेशि शुभदेशि परात्परेशि।
वन्द्ये महेशदयितेकरुणार्णवेशि।
स्तुत्ये स्वधे सकलतापहरे सुरेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां
ललितेऽखिलेशि॥१॥
दिव्ये नुते श्रुतिशतैर्विमले भवेशि।
कन्दर्पदारशतयुन्दरि माधवेशि।
मेधे गिरीशतनये नियते शिवेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां
ललितेऽखिलेशि॥२॥
रासेश्वरि प्रणततापहरे कुलेशि।
धर्मप्रिये भयहरे वरदाग्रगेशि।
वाग्देवते विधिनुते कमलासनेशि।
कृष्णस्तुतेकुरु कृपां ललितेऽखिलेशि॥३॥
पूज्ये महावृषभवाहिनि मंगलेशि।
पद्मे दिगम्बरि महेश्वरि काननेशि।
रम्येधरे सकलदेवनुते गयेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपा
ललितेऽखिलेशि॥४॥
श्रद्धे सुराऽसुरनुते सकले जलेशि।
गंगे गिरीशदयिते गणनायकेशि।
दक्षे स्मशाननिलये सुरनायकेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां
ललितेऽखिलेशि॥५॥
तारे कृपार्द्रनयने मधुकैटभेशि।
विद्येश्वरेश्वरि यमे निखलाक्षरेशि।
ऊर्जे चतुःस्तनि सनातनि मुक्तकेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां
ललितऽखिलेशि॥६॥
मोक्षेऽस्थिरे त्रिपुरसुन्दरिपाटलेशि।
माहेश्वरि त्रिनयने प्रबले मखेशि।
तृष्णे तरंगिणि बले गतिदे ध्रुवेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां
ललितेऽखिलेशि॥७॥
विश्वम्भरे सकलदे विदिते जयेशि।
विन्ध्यस्थिते शशिमुखि क्षणदे दयेशि।
मातः सरोजनयने रसिके स्मरेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां
ललितेऽखिलेशि॥८॥
दुर्गाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते
सर्वार्थदं हरिहरादिनुतां वरेण्याम्।
दुर्गां सुपूज्य महितां विविधोपचारैः
प्राप्नोति वांछितफलं न
चिरान्मनुष्यः॥९॥
॥ इति श्री दुर्गाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ भवान्यष्टकम् ॥

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥१॥

भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः।
कुसंसार-पाश-प्रबद्धः सदाऽहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥२॥

न जानामि दानं न च ध्यान-योगं
न जानामि तंत्र न च स्तोत्र-मन्त्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥३॥

न जानामि पुण्यं न जानानि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्ति व्रतं वाऽपि मात-
र्गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥४॥

कुकर्मी कुसंगी कुबुद्धि कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबंधः सदाऽह
गतिस्त्व गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥५॥

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चाऽन्यत्सदाऽहं शरण्ये
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥६॥

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चाऽनले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥७॥

अनाथो दरिद्रो जरा-रोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाऽहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥८॥

॥ इति श्रीभवान्यष्टकं संपूर्णम् ॥

क्षमा-प्रार्थना

अपराधसहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि॥१॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि॥२॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि। यत्पूजितं मया देवि परिपूर्ण तदस्तु मे॥३॥
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्। यां गतिं समवापनेति न तां ब्रह्मादयः सुराः॥४॥
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके। इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु॥५॥
अज्ञानाद्विस्मृतेभ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्। तत्सर्व क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि॥६॥
कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे। गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि॥७॥
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि॥८॥

दुर्गाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने।
यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती॥१॥
सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी॥२॥
पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः।
मनो बुद्धिरहंकारा चित्तरूपा चिता चितिः॥३॥
सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्दस्वरूपिणी।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याभव्या सदागतिः॥४॥
शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा।
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी॥५॥
अपर्णानेकवर्णा च पाटला पाटलावती।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी॥६॥
अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी।
वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता॥७॥
ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः॥८॥
विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा।
बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना॥९॥
निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी।
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी॥१०॥
सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी।
सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा॥११॥
अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रस्य धारिणी।
कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यतिः॥१२॥
अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा।
महोदरी मुक्त केशी घोररूपा महाबला॥१३॥
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी॥१४॥
शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी॥१५॥
य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम्।
नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति॥१६॥
धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च।
चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम्॥१७॥
कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम्।
पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम्॥१८॥
तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि सर्वैः सुरवरैरपि।
राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवापनुयात्॥१९॥
गोरोचनालक्त ककुङ्कुमेन सिन्दूरकर्पूरमधुत्रयेण।
विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो भवेत् सदा धारयते पुरारिः॥२०॥
भौमावास्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषां गते।
विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् सम्पदां पदम्॥२१॥

दुर्गा पूजन में रखे सावधानियां

- माता दुर्गा की पूजा करने वाले साधकों को उपासना संबंधी इन बातों का ध्यान रखना लाभदायक रहता हैं। विद्वानो के मत में शास्त्रोक्त विधान से एक ही घर में तीन शक्तियों की पूजा करना वर्जित हैं।
- देवीपीठ पर वाद्य-शहनाई का वादन नहीं करें।
- भगवती दुर्गा का आह्वान बिल्व पत्र, बिल्व शाखा या त्रिशूल पर ही किया जाना चाहिए।
- देवी दुर्गा को केवल लाल कनेर और सुगंधित पुष्प अति प्रिय हैं। इस लिये आराधना में सुगंधित पुष्प ही लें।
- नवरात्र में कलश की स्थापना केवल दिन में करनी चाहिए।
- मां भगवती की प्रतिमा हमेशा लाल वस्त्र से बिराजीत रहे।
- देवी को भी लाल रंग की चुनरी चढाएं।

नवरात्र में नवार्ण मंत्र जप देवी मां के सामने लाल आसन पर बैठकर लाल चंदन की माला से करना लाभ प्रद होता हैं।

विश्वंभरी स्तुति

विश्वंभरी स्तुति मूल रुपसे गुजराती में वल्लभ भट्ट द्वारा लिखी गई हैं। ✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

विश्वंभरी अखिल विश्वतणी जनेता।
विद्या धरी वदनमां वसजो विधाता॥
दुर्बुद्धि दुर करी सद्दबुद्धि आपो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥१॥

भूलो पडि भवरने भटकुं भवानी।
सुझे नहि लगीर कोइ दिशा जवानी॥
भासे भयंकर वळी मनना उतापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥२॥

आ रंकने उगरवा नथी कोइ आरो।
जन्मांध छु जननी हु ग्रही हाथ तारो॥
ना शुं सुणो भगवती शिशुना विलापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥३॥

मा कर्म जन्म कथनी करतां विचारु।
आ सृष्टिमां तुज विना नथी कोइ मारु॥
कोने कहुं कठण काळ तणो बळापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥४॥

हुं काम क्रोध मध मोह थकी भरेलो।
आडंबरे अति धणो मद्‌थी छकेलो॥
दोषो बधा दूर करी माफ पापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥५॥

ना शास्त्रना श्रवणनु पयःपान पीधु।
ना मंत्र के स्तुति कथा नथी काइ कीधु॥
श्रद्धा धरी नथी कर्या तव नाम जापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥६॥

रे रे भवानी बहु भूल थई ज मारी।
आ जिंदगी थई मने अतिशे अकारी॥
दोषो प्रजाळि सधळा तव छाप छापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥७॥

खाली न कोइ स्थळ छे विण आप धारो।
ब्रह्मांडमां अणु-अणु महीं वास तारो॥
शक्ति न माप गणवा अगणित मापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥८॥

पापो प्रपंच करवा बधी रीते पूरो।
खोटो खरो भगवती पण हुं तमारो॥
जाडयांधकार करी दूर सुबुद्धि स्थापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥९॥

शीखे सुणे रसिक छंद ज एक चित्ते।
तेना थकी त्रिविध ताप टळे खचिते॥
बुद्धि विशेष जगदंब तणा प्रतापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥१०॥

श्री सदगुरु शरनमां रहीने यजुं छुं।
रात्रि दिने भगवती तुजने भजुं छु॥
सदभक्त सेवक तणा परिताप चापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥११॥

अंतर विषे अधिक उर्मि थतां भवानी।
गाऊ स्तुति तव बळे नमीने मृडानी॥
संसारना सकळ रोग समूळ कापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥१२॥

महिषासुरमर्दिनिस्तोत्रम्

||भगवतीपद्यपुष्पांजलिस्तोत्र महिषासुरमर्दिनिस्तोत्रम् ||

श्री त्रिपुरसुन्दर्यै नमः ||

भगवती भगवत्पदपङ्कजं भ्रमरभूतसुरासुरसेवितम् | सुजनमानसहंसपरिस्तुतं कमलयाऽमलया निभृतं भजे ||१|| ते उभे अभिवन्देऽहं विघ्नेशकुलदैवते | नरनागाननस्त्वेको नरसिंह नमोऽस्तुते ||२|| हरिगुरुपदपद्मं शुद्धपद्येऽनुरागाद् विगतपरमभागे सन्निधायादरेण | तदनुचरि करोमि प्रीतये भक्तिभाजां भगवति पदपद्मे पद्यपुष्पाञ्जलिं ते ||३|| केनैते रचिताः कुतो न निहिताः शुम्भादयो दुर्मदाः केनैते तव पालिता इति हि तत् प्रश्ने किमाचक्ष्महे | ब्रह्माद्या अपि शंकिताः स्वविषये यस्याः प्रसादावधि प्रीता सा महिषासुरप्रमथिनीच्छ्याद्वद्यानि मे ||४|| पातु श्रीस्तु चतुर्भुजा किमु चतुर्बाहोर्महौजान्भुजान् धत्तेऽष्टादशधा हि कारणगुणान्कार्ये गुणारम्भकाः | सत्यं दिक्पतिदन्तिसंख्यभुजभृच्छम्भुः स्वयम्भूः स्वयं धामैकप्रतिपत्तये किमथवा पातुं दशाष्टौ दिशः ||५|| प्रीत्याऽष्टादशसंमितेषु युगपद्द्वीपेषु दातुं वरान् त्रातुं वा भयतो बिभर्षि भगवत्यष्टादशैतान् भुजान् | यद्वाऽष्टादशधा भुजांस्तु बिभृतः काली सरस्वत्युभे मीलित्वैकमिहानयोः प्रथयितुं सा त्वं रमे रक्षमाम् ||६|| अयि गिरिनंदिनि नंदितमेदिनि विश्वविनोदिनि नंदनुते गिरिवर विंध्य शिरोधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते | भगवति हे शितिकण्ठकुटुंबिनि भूरि कुटुंबिनि भूरि कृते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||७|| सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते त्रिभुवनपोषिणि शंकरतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते | दनुज निरोषिणि दितिसुत रोषिणि दुर्मद शोषिणि सिन्धुसुते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||८|| अयि जगदंब मदंब कदंब वनप्रिय वासिनि हासरते शिखरि शिरोमणि तुङ्ग हिमालय शृंग निजालय मध्यगते | मधु मधुरे मधु कैटभ गंजिनि कैटभ भंजिनि रासरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||९|| अयि शतखण्ड विखण्डित रुण्ड वितुण्डित शुण्ड गजाधिपते रिपु गज गण्ड विदारण चण्ड पराक्रम शुण्ड मृगाधिपते | निज भुज दण्ड निपातित खण्ड विपातित मुण्ड भटाधिपते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१०|| अयि रण दुर्मद शत्रु वधोदित दुर्धर निर्जर शक्तिभृते चतुर विचार धुरीण महाशिव दूतकृत प्रमथाधिपते | दुरित दुरीह दुराशय दुर्मति दानवदूत कृतांतमते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||११|| अयि शरणागत वैरि वधूवर वीर वराभय दायकरे त्रिभुवन मस्तक शूल विरोधि शिरोधि कृतामल शूलकरे | दुमिदुमि तामर दुंदुभिनाद महो मुखरीकृत तिग्मकरे जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१२|| अयि निज हुँकृति मात्र निराकृत धूम्र विलोचन धूम्र शते समर विशोषित शोणित बीज समुद्भव शोणित बीज लते | शिव शिव शुंभ निशुंभ महाहव तर्पित भूत पिशाचरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१३|| धनुरनु संग रणक्षणसंग परिस्फुर दंग नटत्कटके कनक पिशंग पृषत्क निषंग रसद्भट शृंग हतावटुके | कृत चतुरङ्ग बलक्षिति रङ्ग घटद्बहुरङ्ग रटद्बटुके जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१४|| सुरललनाततथेयितथेयितथाभिनयोत्तरनृत्यरते हासविलासहुलासमयि प्रणतार्तजनेऽमितप्रेमभरे |

धिमिकिटधिक्कटधिकटधिमिध्वनिघोरमृदंगनिनादरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१५|| जय जय जप्य जयेजय शब्द परस्तुति तत्पर विश्वनुते झण झण झिञ्जिमि झिंकृत नूपुर सिंजित मोहित भूतपते | नटित नटार्ध नटीनट नायक नाटित नाट्य सुगानरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१६|| अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहर कांतियुते श्रित रजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्रवृते | सुनयन विभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराधिपते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१७|| सहित महाहव मल्लम तल्लिक मल्लित रल्लक मल्लरते विरचित वल्लिक पल्लिक मल्लिक झिल्लिक भिल्लिक वर्ग वृते | सितकृत फुल्लिसमुल्ल सितारुण तल्लज पल्लव सल्ललिते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१८|| अविरल गण्ड गलन्मद मेदुर मत्त मतङ्गज राजपते त्रिभुवन भूषण भूत कलानिधि रूप पयोनिधि राजसुते | अयि सुद तीजन लालसमानस मोहन मन्मथ राजसुते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१९|| कमल दलामल कोमल कांति कलाकलितामल भाललते सकल विलास कलानिलयक्रम केलि चलत्कल हंस कुले | अलिकुल सङ्कुल कुवलय मण्डल मौलिमिलद्बकुलालि कुले जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२०|| कर मुरली रव वीजित कूजित लज्जित कोकिल मञ्जुमते मिलित पुलिन्द मनोहर गुञ्जित रंजितशैल निकुञ्जगते | निजगुण भूत महाशबरीगण सद्गुण संभृत केलितले जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२१|| कटितट पीत दुकूल विचित्र मयूखतिरस्कृत चंद्र रुचे प्रणत सुरासुर मौलिमणिस्फुर दंशुल सन्नख चंद्र रुचे | जित कनकाचल मौलिपदोर्जित निर्भर कुंजर कुंभकुचे जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२२|| विजित सहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैकनुते कृत सुरतारक सङ्गरतारक सङ्गरतारक सूनुसुते | सुरथ समाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२३|| पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं स शिवे अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत् | तव पदमेव परंपदमित्यनुशीलयतो मम किं न शिवे जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२४|| कनकलसत्कल सिन्धु जलैरनु सिञ्चिनुते गुण रङ्गभुवं भजति स किं न शचीकुच कुंभ तटी परिरंभ सुखानुभवम् | तव चरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवं जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२५|| तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते किमु पुरुहूत पुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते | मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमुत क्रियते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२६|| अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथाऽनुमितासिरते | यदुचितमत्र भवत्युररि कुरुतादुरुतापमपाकुरुते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२७|| स्तुतिमितस्तिमितः सुसमाधिना नियमतोऽयमतोऽनुदिनं पठेत् | परमया रमयापि निषेव्यते परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत् ||२८|| रमयति किल कर्षस्तेषु चित्तं नराणामवरजवर यस्माद्रामकृष्णः कवीनाम् | अकृत सुकृतिगम्यं रम्यपद्यैकहर्म्यं स्तवनमवनहेतुं प्रीतये विश्वमातुः ||२९|| इन्दुरम्यो मुहुर्बिन्दुरम्यो मुहुर्बिन्दुरम्यो यतः सोऽनवद्यः स्मृतः | श्रीपतेः सूनूना कारितो योऽधुना विश्वमातुः पदे पद्यपुष्पाञ्जलिः ||३०|| || इति श्रीभगवतीपद्यपुष्पाञ्जलिस्तोत्रम् ||

शाप विमोचन मंत्र

संकलन गुरुत्व कार्यालय

चण्डिका शाप विमोचन मंत्र

चण्डिका शाप विमोचन मंत्र के पाठ को करने से देवी की पूजा में की गयी किसी भी प्रकार त्रुटि (भूल) से मिला श्राप खत्म हो जाता है।

शाप-विमोचन संकल्प

ॐ अस्य श्रीचण्डिकाया ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापविमोचन मन्त्रस्य वसिष्ठनारदसंवादसामवेदाधिपतिब्रह्माण ऋषय: सर्वैश्वर्यकारिणी श्रीदुर्गा देवता चरित्रत्रयं बीजं ह्रीं शक्तिः त्रिगुणात्मस्वरूपचण्डिकाशापविमुक्तो मम संकल्पितकार्यसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

शापविमोचन मंत्र

ॐ (ह्रीं) रीं रेत:स्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१॥

ॐ रं रक्तस्वरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै,ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥२॥

ॐ क्षुं क्षुधास्वरूपिण्यै देववन्दितायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥३॥

ॐ छां छायास्वरूपिण्यै दूतसंवादिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥४॥

ॐ शं शक्तिस्वरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥५॥

ॐ तं तृषास्वरूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥६॥

ॐ क्षां क्षान्तिस्वरूपिण्यै रक्तबीजवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥७॥

ॐ जां जातिरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥८॥

ॐ लं लज्जास्वरूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥९॥

ॐ शां शान्तिस्वरूपिण्यै देवस्तुत्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१०॥

ॐ श्रं श्रद्धास्वरूपिण्यै सकलफ़लदात्र्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥११॥

ॐ श्रीं बुद्धिस्वरूपिण्यै महिषासुरसैन्यनाशिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१२॥

ॐ कां कान्तिस्वरूपिण्यै राजवरप्रदायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१३॥

ॐ माँ मातृस्वरूपिण्यै अनर्गलमहिमासहितायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१४॥

ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै सं सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१५॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नम: शिवायै अभेद्यकवचस्वरूपिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१६॥

ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फ़ट स्वाहायै ऋग्वेदस्वरूपिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१७॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नम:॥१८॥

इत्येवं हि महामन्त्रान पठित्वा परमेश्वर, चण्डीपाठं दिवा रात्रौ कुर्यादेव न संशय:॥१९॥

एवं मन्त्रं न जानाति चण्डीपाठं करोति य:, आत्मानं चैव दातारं क्षीणं कुर्यान्न संशय:॥२०॥

(श्रीदुर्गामार्पणामस्तु)

श्रीदुर्गाअष्टोत्तर शतनाम पूजन

संकलन गुरुत्व कार्यालय

संकल्पः

ॐ तत्सत् अद्यैतस्य ब्रह्मणोह्नि द्वितीय प्रहरार्द्धे श्वेत वराह कल्पे जम्बू-द्वीपे भरत खण्डे आर्यावर्त देशे **अमुक** पुण्य क्षेत्रे कलियुगे कलि प्रथम चरणे **अमुक** सम्वत्सरे **अमुक** मासे **अमुक** पक्षे **अमुक** तिथौ **अमुक** वासरे **अमुक** गोत्रो **अमुक** (शर्मा, वर्मा अपने या जिसके लिये अनुष्ठान कर रहे हो उनके **नाम** का उच्चारण करें।) अहं श्रीदुर्गा-प्रीत्यर्थे अष्टोत्तर शत नाम मन्त्रैः यथा शक्ति यजनं करिष्ये।

(**अमुक** के स्थान पर अपना वर्तमान स्थान-संवत्स-मास-पक्ष-तिथि-वास- का उचारण करें और अमुक गोत्रो व नाम के स्थान पर जिसके लिये जप किया जा रहा हो उस व्यक्ति के गोत्र व नाम का उचारण करना चाहिए यदि स्वयं जप कर रहे हो तो स्वयंका गोत्र नाम लें)

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीदुर्गा अष्टोत्तर शतनाम माला मन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीदुर्गा देवता, दुं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं, श्रीदुर्गा प्रीत्यर्थे श्रीदुर्गा अष्टोत्तर शत नाम पूजने विनियोगः।

नोटः

श्रीदुर्गा अष्टोत्तर नामावली के मन्त्रों से पूजन करते समय उक्त मन्त्र का उच्चारण कर विनियोग करना चाहिये। यदि सिर्फ नाम अर्थात मन्त्रों के द्वारा जप करना हो, तो पूजने विनियोग। के स्थान पर जपे विनियोगः। का उचारण करें और यदि पूजन के साथ विधिवत तर्पण करना हो, तो पूजने तर्पणे च विनियोगः। का उचारण करें। नाम मन्त्रों का होम करना हो, तो होमे विनियोगः। का उचारण करें । ऋष्यादि न्यास में भी उपरोक्त विधि से योजन करें।

ऋष्यादि न्यासः

श्रीनारद-ऋषये नमः। शिरसि, गायत्री छन्दसे नमः। मुखे, श्रीदुर्गा देवतायै नमः। हृदि, दुं बीजाय नमः। गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः। पादयो, ॐ कीलकाय नमः। नाभौ, श्रीदुर्गा-प्रीत्यर्थं श्रीदुर्गा अष्टोत्तर शत नाम पूजने विनियोगाय नमः। सर्वांगे।

षडङ्ग न्यासः

ह्रां ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै। ह्रीं ॐ ह्रीं दुं दुर्गाय। ह्रूं ॐ ह्रीं दुं दुर्गाय। ह्रैं ॐ ह्रीं दुं दुर्गाय। ह्रौं ॐ ह्रीं दुं दुर्गाय। ह्रः ॐ ह्रीं दुं दुर्गाय।

कर न्यासः

अंगुष्ठाभ्यां नमः। तर्जनीभ्यां नमः। मध्यमाभ्यां नमः। अनामिकाभ्यां हुम। कनिष्ठिकाभ्यां वौषट। करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

अंग न्यासः

हृदयाय नमः। शिरसे स्वाहा। शिखायै वषट्। कवचाय हुम्। नेत्र-त्रयाय वौषट। अस्त्राय फट्।

ध्यानः

सिंहस्था शशि-शेखरा मरकत-प्रख्या चतुर्भिर्भुजैः।
शंख चक्र-धनुः-शरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता॥
आमुक्तांगद-हार-कंकण-रणत्-काञ्ची-क्वणन्-नूपुरा।
दुर्गा दुर्गति-हारिणी भवतु वो रत्नोल्लसत्-कुण्डला॥

उक्त प्रकार 'ध्यान' करने के बाद माँ दुर्गा का मानसिक पूजन करें।

मानस पूजनः

ॐ लं पृथ्वी तत्त्वात्मकम् गन्धम् श्रीजगदम्बा दुर्गा प्रीतये समर्पयामि नमः॥ ॐ हं आकाश तत्त्वात्मकम् पुष्पं श्रीजगदम्बा दुर्गा प्रीतये समर्पयामि नमः॥ ॐ यं वायु तत्त्वात्मकं धूपं श्रीजगदम्बा दुर्गा प्रीतये घर्पायामि नमः॥

ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीजगदम्बा-दुर्गा-प्रीतये दर्शयामि नमः॥ ॐ वं जल तत्वात्मकं नैवेद्य श्रीजगदम्बा दुर्गा प्रीतये निवेदयामि नमः॥ ॐ शं सर्व तत्वात्मकं ताम्बूलम् श्रीजगदम्बा दुर्गा प्रीतये समर्पयामि नमः॥

उक्त मन्त्र के उचारण के बाद में दुर्गा अष्टोत्तर शत नामावली का पाठ करें।

त्रिबीज युक्त चतुर्थ्यन्त अष्टोत्तर शत नामावली

ॐ ह्रीं दुं श्रीसत्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसाध्व्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीभव-प्रीतायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीभवान्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीभव-मोचिन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीआर्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीदुर्गायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीजयायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीआद्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीत्रि-नेत्रायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीशूल-धारिण्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीपिनाक-धारिण्ये पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचित्रायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचण्ड-घण्टायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमहा-तपायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमनो-रुपायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीबुद्धयै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअहंकारायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचित्त-रुपायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचितायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचित्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसर्व-मन्त्र-मय्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीनित्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसत्यानन्द-स्वरुपिण्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअनन्तायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीभाविन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीभाव्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअभव्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसदा-गत्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीशाम्भव्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीदेव-मातायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचिन्तायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीरत्न-प्रयायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसर्व-विद्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीदक्ष-कन्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीदक्ष-यज्ञ-विनाशिन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअपर्णायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअनेक-वर्णायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीपाटलायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीपाटलावत्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीपटाम्बर-परीधानायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकल-मञ्जीर-रञ्जिन्यै नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअमेय-विक्रमायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीक्रूरायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसुन्दर्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसुर-सुन्दर्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीवन-दुर्गायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमातंगयै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमतंग-मुनि-पूजितायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीब्राह्मयै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमाहेश्वर्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीऐन्द्रयै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकौमार्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीवैष्णव्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचामुण्डायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीवाराह्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीलक्ष्म्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीपुरुषाकृत्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीविमलायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीउत्कर्षिण्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीज्ञानायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीक्रियायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसत्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीबुद्धिदायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीबहुलायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीबहुल-प्रियायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसर्व-वाहनायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीनिशुम्भ-शुम्भ-हनन्यै पूजयामि नमः।

ॐ ह्रीं दुं श्रीमहिषासुर-मर्दिन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमधु-कैटभ-हन्त्र्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचण्ड-मुण्ड-विनाशिन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसर्वासुर-विनाशायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसर्व-दानव-घातिन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसर्व-शास्त्र-मय्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीविद्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसर्वास्त्र-धारिण्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअनेक-शस्त्र-हस्तायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअनेकास्त्र-विधारिण्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकुमार्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकन्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकैशोर्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीयुवत्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीयत्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअप्रौढायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीप्रौढायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीवृद्ध-मातायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीबल-प्रदायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमहा-देव्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमुक्त-केश्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीघोर-रुपायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमहा-बलायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअग्नि-ज्वालायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीरौद्र-मुख्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकाल-रात्र्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीतपस्विन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीनारायण्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीभद्रकाल्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीविष्णु-मायायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीजलोदर्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीशिव-दूत्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकराल्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअनन्तायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीपरमेश्वर्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकात्यायन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसावित्र्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीप्रत्यक्षायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीब्रह्म-वादिन्यै पूजयामि नमः।

परशुराम कृत श्रीदुर्गास्तोत्र

संकलन गुरुत्व कार्यालय

॥ परशुराम उवाच ॥
श्रीकृष्णस्य च गोलोकेपरिपूर्णतमस्य चः।
आविर्भूता विग्रहतः, परा सृष्ट्युन्मुखस्य च॥
सूर्य-कोटि-प्रभा-युक्ता, वस्त्रालंकार भूषिता।
वह्नि शुद्धांशुकाधाना सुस्मिता, सुमनोहरा॥
नव यौवन सम्पन्ना सिन्दूर विन्दु शोभिता।
ललितं कबरीभारं मालती माल्य मण्डितम्॥
अहोनिर्वचनीया त्वं, चारुमूर्ति च बिभ्रती।
मोक्षप्रदा मुमुक्षूणां, महाविष्णोर्विधिः स्वयम्॥
मुमोह क्षणमात्रेण दृष्ट्वा, त्वां सर्वमोहिनीम्।
बालैः सम्भूय सहसा, सस्मिता धाविता पुरा॥
सद्भिः ख्याता तेन, राधा मूलप्रकृतिरीश्वरी।
कृष्णस्त्वां सहसाहूय, वीर्याधानं चकार ह॥
ततो डिम्भं महज्जज्ञे, ततो जातो महाविराट्।
यस्यैव लोमकूपेषु, ब्रह्माण्डान्यखिलानि च॥
तच्छृंगारक्रमेणैव त्वन्निःश्वासो बभूव ह।
स निःश्वासो महावायुः स विराड् विश्वधारकः॥
तव घर्मजलेनैव पुप्लुवे विश्वगोलकम्।
स विराड् विश्वनिलयो जलराशिर्बभूव ह॥
ततस्त्वं पञ्चधाभूय पञ्चमूर्तीश्च बिभ्रती।
प्राणाधिष्ठातृमूर्त्तिर्या कृष्णस्य परमात्मनः॥
कृष्णप्राणाधिकां राधां तां वदन्ति पुराविदः॥
वेदाधिष्ठात्रीमूर्तियां वेदाशास्त्रप्रसूरपि।
तं सावित्रीं शुद्धरूपां प्रवदन्ति मनीषिणः॥
ऐश्वर्याधिष्ठात्रीमूर्तिः शान्तिश्च शान्तरूपिणी।
लक्ष्मीं वदन्ति संतस्तां शुद्धां सत्त्वस्वरुपिणीम् ॥
रागाधिष्ठात्री या देवी, शुक्लमूर्तिः सतां प्रसूः।
सरस्वतीं तां शास्त्रज्ञां प्रवदन्ति बुधा भुवि॥
बुद्धिर्विद्या सर्वशक्तिर्ज्या मूर्तिरधिदेवता।
सर्वमंगलमंगल्या सर्वमंगलरूपिणी॥
सर्वमंगलबीजस्य शिवस्य निलयेधुना॥
शिवे शिवास्वरूपा त्वं लक्ष्मीर्नारायणान्तिके।
सरस्वती च सावित्री वेदसूर्ब्रह्मणः प्रिया॥
राधा रासेश्वरस्यैव परिपूर्णतमस्य च।
परमानन्द-रूपस्य परमानन्दरूपिणी॥
त्वत्कलांशांशकलया देवानामपि योषितः॥
त्वं विद्या योषितः सर्वास्त्वं सर्वबीजरूपिणी।
छाया सूर्यस्य चन्द्रस्य रोहिणी सर्वमोहिनी॥
शची शक्रस्य कामस्य कामिनी रतिरीश्वरी।
वरुणानी जलेशस्य वायोः स्त्री प्राणवल्लभा॥
वह्नेः प्रिया हि स्वाहा च कुबेरस्य च सुन्दरी।
यमस्य तु सुशीला च नैर्ऋतस्य च कैटभी॥
ईशानस्य शशिकला शतरूपा मनोः प्रिया।
देवहूतिः कर्दमस्य वसिष्ठस्याप्यरुन्धती॥
लोपामुद्राप्यगस्त्यस्य देवमातादितिस्तथा। अहल्या
गौतमस्यापि सर्वाधारा वसुन्धरा॥
गंगा च तुलसी चापि पृथिव्यां याः सरिद्वराः।
एताः सर्वाश्च या ह्यन्याः सर्वास्त्वत्कलयाम्बिके॥
गृहलक्ष्मीगृहे नृणांराजलक्ष्मीश्च राजसु।
तपस्विनां तपस्या त्वं गायत्री ब्राह्मणस्य च॥
सतां सत्त्वस्वरूपा त्वमसतां कलहांकुरा।
ज्योतीरूपा निर्गुणस्य शक्ति स्त्वं सगुणस्य च॥
सूर्ये प्रभास्वरूपा त्वं दाहिका च हुताशने।
जले शैत्यस्वरूपा च शोभारूपा निशाकरे॥
त्वं भूमौ गन्धरूपा च आकाशे शब्दरूपिणी।
क्षुत्पिपासादयस्त्वं च जीविनां सर्वशक्तयः॥
सर्वबीजस्वरूपा त्वं संसारे साररूपिणी।
स्मृतिर्मेधा च बुद्धिर्वा ज्ञानशक्ति र्विपश्चिताम्॥
कृष्णेन विद्या या दत्ता सर्वज्ञानप्रसूः शुभा।
शूलिने कृपया सा त्वं यतो मृत्युञ्जयः शिवः॥
सृष्टिपालनसंहारशक्त यस्त्रिविधाश्च याः।
ब्रह्मविष्णुमहेशानां सा त्वमेव नमोस्तु ते॥
मधुकैटभभीत्या च त्रस्तो धाता प्रकम्पितः।
स्तुत्वा मुमोच यां देवीं तां मूर्ध्ना प्रणमाम्यहम्॥
मधुकैटभयोर्युद्धे त्रातासौ विष्णुरीश्वरीम्।
बभूव शक्तिमान् स्तुत्वा तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥

त्रिपुरस्य महायुद्धे सरथे पतिते शिवे।
यां तुष्टुवुः सुराः सर्वे तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥
विष्णुना वृषरूपेण स्वयं शम्भुः समुत्थितः।
जघान त्रिपुरं स्तुत्वा तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥
यदाज्ञया वाति वातः सूर्यस्तपति संततम्।
वर्षतीन्द्रो दहत्यग्निस्तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥
यदाज्ञया हि कालश्च शश्वद् भ्रमति वेगतः।
मृत्युश्चरति जन्त्वोघे तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥
स्त्रष्टा सृजति सृष्टिं च पाता पाति यदाज्ञया।
संहर्ता संहरेत् काले तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥
ज्योतिःस्वरूपो भगवाञ्छ्रीकृष्णो निर्गुणः स्वयम्।
यया विना न शक्तश्च सृष्टिं कर्तुं नमामि ताम्॥
रक्ष रक्ष जगन्मातरपराधं क्षमस्व मे।
शिशूनामपराधेन कुतो माता हि कुप्यति॥
इत्युक्त्वा पर्शुरामश्च प्रणम्य तां रुरोद ह।
तुष्टा दुर्गा सम्भ्रमेण चाभयं च वरं ददौ॥
अमरो भव हे पुत्र वत्स सुस्थिरतां व्रज।
शर्वप्रसादात् सर्वत्र ज्योस्तु तव संततम्॥
सर्वान्तरात्मा भगवांस्तुष्टोस्तु संततं हरिः।
भक्तिर्भवतु ते कृष्णे शिवदे च शिवे गुरौ॥
इष्टदेवे गुरौ यस्य भक्तिर्भवति शाश्वती।
तं हन्तु न हि शक्ताश्च रुष्टाश्च सर्वदेवताः॥
श्रीकृष्णस्य च भक्तस्त्वं शिष्यो हि शंकरस्य च।
गुरुपत्नीं स्तौषि यस्मात् कस्त्वां हन्तुमिहेश्वरः॥
अहो न कृष्णभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित्।
अन्यदेवेषु ये भक्ता न भक्ता वा निरेन्कुशाः ॥
चन्द्रमा बलवांस्तुष्टो येषां भाग्यवतां भृगो।
तेषां तारागणा रुष्टाः किं कुर्वन्ति च दुर्बलाः ॥
यस्य तुष्टः सभायां चेन्नरदेवो महान् सुखी।
तस्य किं वा करिष्यन्ति रुष्टा भृत्याश्च दुर्बलाः॥
इत्युक्त्वा पार्वती तुष्टा दत्वा रामं शुभाशिषम्।
जगामान्तःपुरं तूर्णं हरिशब्दो बभूव ह॥

॥फल-श्रुति॥

स्तोत्रम् वै काण्वशाखोक्तम् पूजाकाले च यः पठेत्।
यात्राकाले च प्रातर्वा वाञ्छितार्थं लभेद्ध्रुवम॥
पुत्रार्थी लभते पुत्रं कन्यार्थी कन्यकां लभेत्।
विद्यार्थी लभते विद्यां प्रजार्थी चाप्नुयात् प्रजाम्॥
भ्रष्टराज्यो लभेद् राज्यं नष्टवित्तो धनं लभेत्॥
यस्य रुष्टो गुरुर्देवो राजा वा बान्धवोथवा।
तस्य तुष्टश्च वरदः स्तोत्रराजप्रसादतः॥
दस्युग्रस्तोहिग्रस्तश्च शत्रुग्रस्तो भयानकः।
व्याधिग्रस्तो भवेन्मुक्तः स्तोत्रस्मरणमात्रतः॥
राजद्वारे श्मशाने च कारागारे च बन्धने।
जलराशौ निमग्नश्च मुक्त स्ततस्मृतिमात्रतः॥
स्वामिभेदे पुत्रभेदे मित्रभेदे च दारुणे।
स्तोत्रस्मरणमात्रेण वाञ्छितार्थं लभेद् ध्रुवम॥
कृत्वा हविष्यं वर्षं च स्तोत्रराजं श्रृणोति या।
भक्तया दुर्गां च सम्पूज्य महावन्ध्या प्रसूयते॥
लभते सा दिव्यपुत्रं ज्ञानिनं चिरजीविनम्।
असौभाग्या च सौभाग्यं षण्मासश्रवणाल्लभेत् ॥
नवमासं काकवन्ध्या मृतवत्सा च भक्तितः।
स्तोत्रराजं या श्रृणोति सा पुत्रं लभते ध्रुवम्॥
कन्यामाता पुत्रहीना पञ्चमासं श्रृणोति या।
घटे सम्पूज्य दुर्गां च सा पुत्रं लभते ध्रुवम्॥

भावार्थः

परशुराम ने कहाः पोराणिक काल की बात हैं; गौ-लोक में जब सभी तरह से श्रीकृष्ण सृष्टिरचना के लिए तैयार हुए, उस समय उनके शरीर से आपका प्राकटय हुआ था। आपकी कान्ति करोडों सूर्यो के समान थी। आप वस्त्र और अलंकारों से विभूषित थीं। आपके शरीर पर अग्नि में तपाकर शुद्ध की हुई साड़ी का परिधान था। नव तरुण अवस्था थी। ललाट पर सिंदूर का टिका शोभित हो रहा था। मालती के फूलो की मालाओं से मण्डित गुँथी हुई सुन्दर केश थे। बडा ही मनोहर रूप था। मुख पर मन्द मुस्कान थी। अहो ! आपकी मूर्ति बडी सुन्दर थी, उसका वर्णन करना कठिन हैं। आप मुमुक्षुओं को मोक्ष प्रदान करने वाली तथा स्वयं महाविष्णु की विधि हो।

बाले ! आप सबको मोहित कर लेने वाली हो। आपको देखकर श्रीकृष्ण उसी क्षण मोहित हो गये। तब आप उनसे सम्भावित होकर सहसा मुस्कराती हुई भाग चलीं। इसी कारण सत्पुरुष आपको मूलप्रकृति ईश्वरी राधा कहते हैं। उस समय सहसा श्रीकृष्ण ने आपको बुलाकर वीर्य का आधान किया। उससे एक महान् डिम्ब उत्पन्न

हुआ। उस डिम्ब से महाविराट् की उत्पत्ति हुई, जिसके रोमकूपों में समस्त ब्रह्माण्ड स्थित हैं। फिर राधा के श्रृंगार क्रम से आपका निःश्वास प्रकट हुआ। वह निःश्वास महावायु हुआ और वही विश्व को धारण करने वाला विराट् कहलाया। आपके पसीने से विश्वगोलक पिघल गया। तब विश्व का निवासस्थान वह विराट् जल की राशि हो गया। तब आपने अपने को पाँच भागों में विभक्त करके पाँच मूर्ति धारण कर ली। उनमें परमात्मा श्रीकृष्ण की जो प्राणाधिष्ठात्री मूर्ति हैं, उसे भविष्यवेत्ता लोग कृष्णप्राणाधिका राधा कहते हैं। जो मूर्ति वेद-शास्त्रों की जननी तथा वेदाधिष्ठात्री हैं, उस शुद्धरूपा मूर्ति को मनीषीगण सावित्री नाम से पुकारते हैं। जो शान्ति तथा शान्तरूपिणी ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री मूर्ति हैं, उस सत्त्वस्वरूपिणी शुद्ध मुर्ति को संत लोग लक्ष्मी नाम से अभिहित करते हैं। अहो ! जो राग की अधिष्ठात्री देवी तथा सत्पुरुषों को पैदा करने वाली हैं, जिसकी मूर्ति शुक्ल वर्ण की हैं, उस शास्त्र की ज्ञाता मूर्ति को शास्त्रज्ञ सरस्वती कहते हैं। जो मूर्ति बुद्धि, विद्या, समस्त शक्ति की अधिदेवता, सम्पूर्ण मंगलों की मंगलस्थान, सर्वमंगलरूपिणी और सम्पूर्ण मंगलों की कारण हैं, वही आप इस समय शिव के भवन में विराजमान हो।

आप ही शिव के समीप शिवा अर्थात पार्वती, नारायण के निकट लक्ष्मी और ब्रह्मा की प्रिया वेदजननी सावित्री और सरस्वती हो। जो पूरिपूर्णतम एवं परमानन्दस्वरूप हैं, उन रासेश्वर श्रीकृष्ण की आप परमानन्दरूपिणी राधा हो। देवान्गनाएँ भी आपके कलांश की अंशकला से प्रादुर्भूत हुई हैं। सारी नारियाँ आपकी विद्यास्वरूपा हैं और आप सबकी कारणरूपा हो। अम्बिके ! सूर्य की पत्नी छाया, चन्द्रमा की भार्या सर्वमोहिनी रोहिणी, इन्द्र की पत्नी शची, कामदेव की पत्नी ऐश्वर्यशालिनी रति, वरुण की पत्नी वरुणानी, वायु की प्राणप्रिया स्त्री, अग्नि की प्रिया स्वाहा, कुबेर की सुन्दरी भार्या, यम की पत्नी सुशीला, नैर्ऋत की जाया कैटभी, ईशान की पत्नी शशिकला, मनु की प्रिया शतरूपा, कर्दम की भार्या देवहूति, वसिष्ठ की पत्नी अरुन्धती, देवमाता अदिति, अगस्त्य मुनि की प्रिया लोपामुद्रा, गौतम की पत्नी अहिल्या, सबकी आधाररूपा वसुन्धरा, गंगा, तुलसी तथा भूतल की सारी श्रेष्ठ सरिताएँ-ये सभी तथा इनके अतिरिक्ति जो अन्य स्त्रियाँ हैं, वे सभी आपकी कला से उत्पन्न हुई हैं। आप मनुष्यों के घर में गृहलक्ष्मी, राजाओं के भवनों में राजलक्ष्मी, तपस्वियों की तपस्या और ब्राह्मणों की गायत्री हो। आप सत्पुरुषों के लिए सत्त्वस्वरूप और दुष्टों के लिये कलह की अन्कुर हो। निर्गुण की ज्योति और सगुण की शक्ति आप ही हो।

आप सूर्य में प्रभा, अगिन् में दाहिका शक्ति, जल में शीतलता और चन्द्रमा में शोभा हो। भूमि में गन्ध और आकाश में शब्द आपका ही रूप हैं। आप भूख-प्यास आदि तथा प्राणियों की समस्त शक्ति हो। संसार में सबकी उत्पत्ति की कारण, साररूपा, स्मृति, मेधा, बुद्धि अथवा विद्वानों की ज्ञानशक्ति आप ही हो। श्रीकृष्ण ने शिवजी को कृपापूर्वक सम्पूर्ण ज्ञान की प्रसविनी जो शुभ विद्या प्रदान की थी, वह आप ही हो; उसी से शिवजी मृत्युज्जय हुए हैं। ब्रह्मा, विष्णु और महेश की सृष्टि, पालन और संहार करने वाली जो त्रिविध शक्तियाँ हैं, उनके रूप में आप ही विद्यमान हो; अतः आपको नमस्कार हैं।

जब मधु कैटभ के भय से डरकर ब्रह्मा काँप उठे थे, उस समय जिनकी स्तुति करके वे भयमुक्त हुए थे; उस देवी को मैं सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ। मधु-कैटभ के युद्ध में जगत के रक्षक ये भगवान विष्णु जिन परमेश्वरी का स्तवन करके शक्तिमान हुए थे, उन दुर्गा को मैं नमस्कार करता हूँ। त्रिपुर के महायुद्ध में रथसहित शिवजी के गिर जाने पर सभी देवताओं ने जिनकी स्तुति की थी; उस दुर्गा को मैं प्रणाम करता हूँ। जिनका स्तवन करके वृषरूपधारी विष्णु द्वारा उठाये गये स्वयं शम्भु ने त्रिपुर का संहार किया था; उन दुर्गा को मैं अभिवादन करता हूँ। जिनकी आज्ञा से निरन्तर वायु बहती हैं, सूर्य तपते हैं, इन्द्र वर्षा करते हैं और अग्नि जलाती हैं; उन दुर्गा को मैं सिर झुकाता हूँ। जिनकी आज्ञा से काल सदा वेगपूर्वक चक्कर काटता रहता हैं और मृत्यु जीव-समुदाय में विचरती रहती हैं; उन दुर्गा को मैं नमस्कार करता हूँ। जिनके आदेश से सृष्टिकर्ता सृष्टि की रचना करते हैं, पालनकर्ता रक्षा करते हैं और संहर्ता समय आने पर संहार करते हैं; उन दुर्गा को मैं

प्रणाम करता हूँ। जिनके बिना स्वयं भगवान श्रीकृष्ण, जो ज्योतिःस्वरूप एवं निर्गुण हैं, सृष्टि-रचना करने में समर्थ नहीं होते; उन देवी को मेरा नमस्कार हैं। जगज्जननी, रक्षा करो, रक्षा करो; मेरे अपराध को क्षमा कर दो । भला, कहीं बच्चे के अपराध करने से माता कुपित होती हैं।

इतना कहकर परशुराम उन्हें प्रणाम करके रोने लगे। तब दुर्गा प्रसन्न हो गयीं और शीघ्र ही उन्हें अभय का वरदान देती हुई बोलीं- हे वत्स ! तुम अमर हो जाओ। बेटा ! अब शान्ति धारण करो। शिवजी की कृपा से सदा सर्वत्र तुम्हारी विजय हो। सर्वान्तरात्मा भगवान् श्रीहरि सदा तुमपर प्रसन्न रहें। श्रीकृष्ण में तथा कल्याणदाता गुरुदेव शिव में तुम्हारी सुदृढ भक्ति बनी रहे; क्योंकि जिसकी इष्टदेव तथा गुरु में शाश्वती भक्ति होती हैं, उस पर यदि सभी देवता कुपित हो जायँ तो भी उसे मार नहीं सकते। तुम तो श्रीकृष्ण के भक्त और शंकर के शिष्य हो तथा मुझ गुरुपत्नी की स्तुति कर रहे हो; इसलिए किसकी शक्ति हैं जो तुम्हें मार सके। अहो ! जो अन्यान्य देवताओं के भक्त हैं अथवा उनकी भक्ति न करके निरंकुश ही हैं, परंतु श्रीकृष्ण के भक्त हैं तो उनका कहीं भी अमंगल नहीं होता।

भार्गव ! भला, जिन भाग्यवानों पर बलवान् चन्द्रमा प्रसन्न हैं तो दुर्बल तारागण रुष्ट होकर उनका क्या बिगाड सकते हैं। सभा में महान आत्मबल से सम्पन्न सुखी नरेश जिसपर संतुष्ट हैं, उसका दुर्बल भृत्यवर्ग कुपित होकर क्या कर लेगा? यों कहकर पार्वती हर्षित हो परशुराम को शुभ आशीर्वाद देकर अन्तःपुर में चली गयीं । तब तुरंत हरि नाम का घोष गूँज उठा ।

फलश्रुतिः जो मनुष्य इस काण्वशाखोक्त स्तोत्र का पूजा के समय, यात्रा के अवसर पर अथवा प्रातःकाल पाठ करता हैं, वह अवश्य ही अपनी अभीष्ट वस्तु प्राप्त कर लेता हैं। इसके पाठ से पुत्रार्थी को पुत्र, कन्यार्थी को कन्या, विद्यार्थी को विद्या, प्रजार्थी को प्रजा, राज्यभ्रष्ट को राज्य और धनहीन को धन की प्राप्ति होती हैं। जिसपर गुरु, देवता, राजा अथवा बन्धु-बान्धव क्रुद्ध हो गये हों, उसके लिये ये सभी इस स्तोत्रराज की कृपा से प्रसन्न होकर वरदाता हो जाते हैं। जिसे चोर-डाकुओं ने घेर लिया हो, साँप ने डस लिया हो, जो भयानक शत्रु के चंगुल में फँस गया हो अथवा व्याधिग्रस्त हो; वह इस स्तोत्र के स्मरण मात्र से मुक्त हो जाता हैं। राजद्वार पर, श्मशान में, कारागार में और बन्धन में पडा हुआ तथा अगाध जलराशि में डूबता हुआ मनुष्य इस स्तोत्र के प्रभाव से मुक्त हो जाता हैं। स्वामिभेद, पुत्रभेद तथा भयंकर मित्रभेद के अवसर पर इस स्तोत्र के स्मरण मात्र से निश्चय ही अभीष्टार्थ की प्राप्ति होती हैं। जो स्त्री वर्षपर्यन्त भक्ति पूर्वक दुर्गा का भलीभाँति पूजन करके हविष्यान्न खाकर इस स्तोत्रराज को सुनती हैं, वह महावन्ध्या हो तो भी प्रसववाली हो जाती हैं। उसे ज्ञानी एवं चिरजीवी दिव्य पुत्र प्राप्त होता हैं। छः महीने तक इसका श्रवण करने से दुर्भगा सौभाग्यवती हो जाती हैं। जो काकवन्ध्या और मृतवत्सा नारी भक्ति पूर्वक नौ मास तक इस स्तोत्रराज को सुनती हैं, वह निश्चय ही पुत्र पाती हैं। जो कन्या की माता तो हैं परंतु पुत्र से हीन हैं, वह यदि पाँच महीने तक कलश पर दुर्गा की सम्यक् पूजा करके इस स्तोत्र को श्रवण करती हैं तो उसे अवश्य ही पुत्र की प्राप्ति होती हैं।

श्री दुर्गा कवचम् (रुद्रयामलोक्त)

संकलन गुरुत्व कार्यालय

॥श्री भैरव उवाच॥
अधुना देवि वक्ष्येऽहम् कवचं मन्त्रगर्भकम्।
दुर्गायाः सारसर्वस्वं कवचेश्वरसञ्ज्ञकम्॥१॥
परमार्थप्रदं नित्यं महापातकनाशनम्।
योगिप्रियं योगीगम्यं देवानामपि दुर्लभम्॥२॥
विना दानेन मन्त्रस्य सिद्धिर्देवि कलौ भवेत्।
धारणादस्य देवेशि शिवस्त्रैलोक्यनायकः॥३॥
भैरवो भैरवेशानि विष्णुर्नारायणो बली।
ब्रह्मा पार्वति लोकेशो विघ्नध्वंशी गजाननः॥४॥
सूर्यस्तमोपहश्चन्द्रो मन्त्रामृतनिधिस्तथा।
सेनानीश्च महासेनो जिष्णुर्लेखर्षभः॥५॥
बहुनोक्तेन किं देवि दुर्गाकवचधारणात्।
मर्त्योऽप्यमरतां याति साधको मन्त्रसाधकः॥६॥
॥विनियोग॥
कवचस्यास्य देवशि ऋषिः प्रोक्तो महेश्वरः।
छन्दोऽनुष्टुप् प्रिये दुर्गा देवताष्टाक्षरा स्मृता॥७॥
चक्रिबीजं च बीजं स्यान्मायाशक्तिरितीरिता।
ॐ मे पातु शिरो दुर्गा ह्रीं मे पातु ललाटकम्॥८॥
ॐ दुँ नेत्रेऽष्टाक्षरा पातु चक्री पातु श्रुती मम।
मं ठं गण्डौ च मे पातु देवेशि रक्तकुण्डला॥९॥
वायुर्नासां सदा पातु रक्तबीजनिषूदिनी।
लवणं पातु मे चोष्ठौ चामुण्डा चण्डघातिनी॥१०॥
भेकी बीजं सदा पातु दन्तान्मे रक्तदन्तिका।
ॐ ह्रीं श्री पातु मे कण्ठं नीलकण्ठांकवासिनी॥११॥
ॐ ऐं क्लीं पातु मे स्कन्धौ स्कन्दमाता महेश्वरी।
ॐ सौं क्लीं मे पातु बाहू देवेशी बगलामुखी॥१२॥
सौं ऐं ह्रीं पातु मे हस्तौ वक्षो देवता विन्ध्यवासिनी।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पातु कुक्षिं मम मातंगिनी परा॥१३॥
ॐ ह्रीं श्रीं ऐं पातु मे पार्श्वे हिमाचलनिवासिनी।
ॐ स्त्रीं ह्रूँ ऐं पातु पृष्ठं मम दुर्गतिनाशिनी॥१४॥
ॐ क्रीं ह्रूँ पातु मे नाभिं देवी नारायणी सदा।
ॐ ऐं क्लीं सौः सदा पातु कटिं कात्यायनी मम॥१५॥
ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं पातु शिश्नं देवी श्रीबगलामुखी।
ॐ ऐं सौः क्लीं सौः पातु गुह्यं गुह्यकेश्वरपूजिता॥१६॥
ॐ ह्रीं ऐं श्रीं ह् सौः पायादूरु मम मनोन्मनी।
ॐ जूं सः सौः पातु जानू जगदीश्वरपूजिता॥१७॥
ॐ ऐं क्लीं पातु मे जंघे मेरुवासिनी।
ॐ ह्रीं श्रीं गीं सदा पातु गुल्फौ मम गणेश्वरी॥१८॥
ॐ ह्रीं दुँ पातु मे पादौ पार्वती षोडशाक्षरी।
पूर्वे मां पातु ब्रह्माणी वह्नौ माँ वैष्णवी तथा॥१९॥
दक्षिणे चण्डिका पातु नैर्ऋते नारसिंहिका।
पश्चिमे पातु वाराही वायव्ये मापराजिता॥२०॥
उत्तरे पातु कौमारी चैशान्यां शांभवी तथा।
ऊर्ध्वं दुर्गा सदा पातु पात्वधस्ताच्छिवा सदा॥२१॥
प्रभाते त्रिपुरा पातु निशीथे छिन्नमस्तका।
निशान्ते भैरवी पातु सर्वदा भद्रकालिका॥२२॥
अग्नेरम्बा च मां पातु जलान्मां जगदम्बिका।
वायोर्मां पातु वाग्देवी वनाद् वनजलोचना॥२३॥
सिंहात् सिंहासना पातु सर्पात् सर्पान्तकासना।
रोगान्मां राजमातंगी भूताद् भूतेशवल्लभा॥२४॥
यक्षेभ्यो यक्षिणी पातु रक्षोभ्यो राक्षसान्तका।
भूतप्रेतपिशाचेभ्यः सुमुखी पातु मां सदा॥२५॥
सर्वत्र सर्वदा पातु ॐ ह्रीं दुर्गा नवाक्षरा।
इतीदं कवचं गुह्यं दुर्गा सर्वस्वमुत्तमम्॥२६॥
॥फल-श्रुति॥
मन्त्रगर्भं महेशानि कवचेश्वरसंज्ञकम्।
वित्तदं पुण्यदं पुण्यं वर्म सिद्धिप्रदं कलौ॥२७॥
वर्म सिद्धिप्रदं गोप्यं परापररहस्यकम्।
श्रेयस्करं मनुमयं रोगनाशकरं परम्॥२८॥
महापातककोटिघ्नं मानदं च यशस्करम्।
अश्वमेधसहस्त्रस्य फलदं परमार्थदम्॥२९॥
अत्यन्तगोप्यं देवेशि कवचं मन्त्रसिद्धिदम्।
पठनात् सिद्धिदं लोके धारणान्मुक्तिदं शिवे॥३०॥
रवौ भूर्जे लिखेद् श्रीमान् कृत्वा कर्माह्निकं प्रिये।
श्रीचक्राग्रेऽष्टगन्धेन साधको मन्त्रसिद्धये॥३१॥
लिखित्वा धारयेद् बाहौ गुटिकां पुण्यवर्धिनीम्।

किं किं साधयेल्लोके गुटिका वर्मणोऽचिरात्॥३२॥
गुटिकां धारयेन्मूर्ध्नि राजानं वशमानयेत्।
धनार्थी धारयेत्कण्ठे पुत्रार्थी कुक्षिमण्डले॥३३॥
तामेव धारयेन्मूर्ध्नि लिखित्वा भूर्जपत्रके।
श्वेतसूत्रेण संवेष्टय लाक्षया परिवेष्टयेत्॥३४॥
सुवर्णेनाथ संवेष्टय धारयेद् रक्तरज्जुना।
गुटिका कामदा देवि देवनामपि दुर्लभा॥३५॥
कवचस्यास्य गुटिकां धत्वा मुक्तिप्रदायिनीम्।
कवचस्यास्य देवेशि वर्णितुं नैव शक्यते॥३६॥
महिमानं महादेवि जिह्वाकोटिशतैरपि।
अदातव्यमिदं वर्म मन्त्रगर्भ रहस्यकम्॥३७॥
अवक्तव्यं महापुण्यं सर्वसारस्वतप्रदम्।
अदीक्षिताय नो दद्यात् कुचैलाय दुरात्मने॥३८॥
अन्यशिष्याय दुष्टाय निन्दकाय कुलार्थिनाम्।
दीक्षिताय कुलीनाय गुरुभक्तिरताय च॥३९॥
शान्ताय कुलसक्ताय शान्ताय कुलकामिने ।
इदं वर्म शिवे दद्यात्कुलभागी भवेन्नरः॥४॥
इदं रहस्यं परमं दुर्गाकवचमुत्तमम्।
गुह्यं गोप्यतमं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत्॥४१॥
॥इति रुद्रयामल तन्त्रे, श्रीदेवीरहस्ये दुर्गाकवचं॥

श्री मार्कण्डेय कृत लघु दुर्गा सप्तशती स्तोत्रम्

संकलन गुरुत्व कार्यालय

ॐ वींवींवीं वेणुहस्ते स्तुतिविधवटुके हां तथा तानमाता, स्वानंदेमंदरुपे अविहतनिरुते भक्तिदे मुक्तिदे त्वम्। हंसः सोहं विशाले वलयगतिहसे सिद्धिदे वाममार्गे, ह्रीं ह्रीं ह्रीं सिद्धलोके कष कष विपुले वीरभद्रे नमस्ते॥१॥

ॐ ह्रीं-कारं चोच्चरंती ममहरतु भयं चर्ममुंडे प्रचंडे, खांखांखां खड्गपाणे ध्रकध्रकध्रकिते उग्ररुपे स्वरुपे। हुंहुंहुं-कार-नादे गगन-भुवि तथा व्यापिनी व्योमरुपे, हंहंहं-कारनादे सुरगणनमिते राक्षसानां निहंत्रि॥२॥

ऐं लोके कीर्तयंती मम हरतु भयं चंडरुपे नमस्ते, घ्रां घ्रां घ्रां घोररुपे घघघघघटिते घर्घरे घोररावे। निर्मांसे काकजंघे घसित-नख-नखा-धूम्र-नेत्रे त्रिनेत्रे, हस्ताब्जे शूलमुंडे कलकुलकुकुले श्रीमहेशी नमस्ते॥३॥

क्रीं क्रीं क्रीं ऐं कुमारी कुहकुहमखिले कोकिले, मानुरागे मुद्रासंज्ञत्रिरेखां कुरु कुरु सततं श्रीमहामारि गुह्ये। तेजोंगे सिद्धिनाथे मनुपवनचले नैव आज्ञा निधाने, ऐंकारे रात्रिमध्ये शयितपशुजने तंत्रकांते नमस्ते॥४॥

ॐ व्रां व्रीं व्रुं व्रूं कवित्ये दहनपुरगते रुक्मरुपेण चक्रे, त्रिःशक्त्या युक्तवर्णादिककरनमिते दादिवंपूर्णवर्णे। ह्रीं-स्थाने कामराजे ज्वल ज्वल ज्वलिते कोशितैस्तास्तुपत्रे स्वच्छंदं कष्टनाशे सुरवरवपुषे गुह्यमुंडे नमस्ते॥५॥

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोरतुंडे घघघघघघघे घर्घरान्यांघ्रिघोषे, ह्रीं क्रीं द्रं द्रौं च चक्र र र र र रमिते सर्वबोधप्रधाने। द्रीं तीर्थे द्रीं तज्येष्ठ जुगजुगजजुगे म्लेच्छदे कालमुंडे, सर्वांगे रक्तघोरामथनकरवरे वज्रदंडे नमस्ते॥६॥

ॐ क्रां क्रीं क्रूं वामभित्ते गगनगडगडे गुह्ययोन्याहिमुंडे, वज्रांगे वज्रहस्ते सुरपतिवरदे मत्तमातंगरुढे। सूतेजे शुद्धदेहे ललललललिते छेदिते पाशजाले, कुंडल्याकाररुपे वृषवृषभहरे ऐंद्रि मातर्नमस्ते॥७॥

ॐ हुंहुंहुंकारनादे कषकषवसिनी मांसि वैतालहस्ते, सुंसिद्धर्षैः सुसिद्धिर्ढढढढढढढः सर्वभक्षी प्रचंडी। जूं सः सौं शांतिकर्मे मृतमृतनिगडे निःसमे सीसमुद्रे, देवि त्वं साधकानां भवभयहरणे भद्रकाली नमस्ते॥८॥

ॐ देवि त्वं तुर्यहस्ते करधृतपरिघे त्वं वराहस्वरुपे, त्वं चेंद्री त्वं कुबेरी त्वमसि च जननी त्वं पुराणी महेंद्री। ऐं ह्रीं ह्रीं कारभूते अतलतलतले भूतले स्वर्गमार्गे, पाताले शैलभृंगे हरिहरभुवने सिद्धिचंडी नमस्ते॥९॥

हंसि त्वं शौंडदुःखं शमितभवभये सर्वविघ्नांतकार्ये, गांगींगूंगैंषडंगे गगनगटितटे सिद्धिदे सिद्धिसाध्ये। क्रूं क्रूं मुद्रागजांशो गसपवनगते त्र्यक्षरे वै कराले, ॐ हीं हूं गां गणेशी गजमुखजननी त्वं गणेशी नमस्ते॥१०॥

॥इति मार्कण्डेय कृत लघु सप्तशती दुर्गा स्तोत्रम्॥

नव दुर्गा स्तुति

अमर पति मुकुट चुम्बित चरणाम्बुज सकल भुवन सुख जननी।
जयति जगदीश वन्दिता सकलामल निष्कला दुर्गा॥१॥
विकृत नख दशन भूषण रुधिर वसाच्क्षुरित खड्ग कृत हस्ता।
जयति नर मुण्ड मण्डित पिशित सुरासव रता चण्डी॥२॥
प्रज्वलित शिखि गणोज्ज्वल विकट जटा बद्ध चन्द्र मणि शोभा।
जयति दिगम्बर भूषा सिद्ध वटेशा महा लक्ष्मीः॥३॥
कर कमल जनित शोभा पद्मासन बद्ध वदना च।
जयति कमण्डलु हस्ता नन्दा देवी नतार्ति हरा॥४॥
दिग् वसना विकृत मुखा फेतकारोद्दाम पूरित दिगौघा।
जयति विकराल देहा क्षेम करी रौद्र भावस्था॥५॥
क्षोभित ब्रह्माण्डोदर स्व मुख स्वर हुं कृत निनादा।
जयति मही महिता सा शिव दूत्याख्या प्रथम शक्तिः॥६॥
मुक्ताट्टहास भैरव दुस्सह रव चकित सकल दिक् चक्रा।
जयति भुजगेन्द्र बन्धन शोभित कर्णा महा रुण्डा॥७॥
पटु पटह मुरज मर्दल झल्लरि काराव नर्तितावयवा।
जयति मधु वृत रुपा दैन्य हरी भ्रामरी देवी॥८॥
शान्ता प्रशान्त वदना सिंह रथा ध्यान योग सन्निष्ठा।
जयति चतुर्भुज देहा चन्द्र कला चन्द्र मंगला देवी॥९॥
पक्ष पुट चञ्चु घातैः सञ्चूर्णित विवुध शत्रु संघाता।
जयति शित शूल हस्ता बहु रुपा रेवती रौद्रा॥१०॥
पर्यटति शक्ति हस्ता पितृ वन निलयेषु योगिनी सहिता।
जयति हर सिद्धि नाम्नो हरि सिद्धि वन्दिता सिद्धैः॥११॥

नवदुर्गा रक्षामंत्र

ॐ शैलपुत्री मैया रक्षा करो।
ॐ जगजननि देवी रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ ब्रह्मचारिणी मैया रक्षा करो।
ॐ भवतारिणी देवी रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ चंद्रघणटा चंडी रक्षा करो।
ॐ भयहारिणी मैया रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ कुषमाणडा तुम ही रक्षा करो।
ॐ शक्तिरूपा मैया रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ स्कन्दमाता माता मैया रक्षा करो।
ॐ जगदम्बा जननि रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ कात्यायिनी मैया रक्षा करो।
ॐ पापनाशिनी अंबे रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ कालरात्रि काली रक्षा करो।
ॐ सुखदाती मैया रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ महागौरी मैया रक्षा करो।
ॐ भक्तिदाती रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ सिद्धिरात्रि मैया रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा देवी रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

देव्पराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथा:।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥१॥

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्व चिदपि कुमाता न भवति ॥२॥

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बह्व: सन्ति सरला:
परं तेषां मध्ये विरलतरलोहं तव सुत:।
मदीयोऽयं त्याग: समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्व चिदपि कुमाता न भवति ॥३॥

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्व चिदपि कुमाता न भवति ॥४॥

परित्यक्ता देवा विविधविधिसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ॥५॥

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरित चिरं कोटिकनकै:।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जन: को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥६॥

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपति:।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥७॥

न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुन:।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपत: ॥८॥

नाराधितासि विधिना विविधोपचारै:
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभि:।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥९॥

आपत्सु मग्न: स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथा:
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥

जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।
अपराधपरम्परापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम्॥११॥

मत्सम: पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथा योग्यं तथा कुरु॥१२॥

भावार्थ:- हे माँ!, मैं न मंत्र जानता हूँ और न ही यंत्र, मुझे तो आपकी स्तुति का भी ज्ञान नहीं है। ना आवाह्न का पता है, न ही ध्यान का। आपकी स्तुति और कथा की भी जानकारी मुझे नहीं है। मैं ना तो तुम्हारी मुद्राएँ जानता हूँ और न ही मुझे व्याकुल होकर विलाप करना ही आता है। परंतु, एक बात जानता हूँ कि केवल तुम्हारा अनुसरण करने से ही मेरी सारी विपत्ति और क्लेशों को हर लेने वाला है॥१॥

सबका उद्धार करनेवाली कल्याणमयी माता! मैं आपकी पूजा की विधि नहीं जानता। मेरे पास धन का भी अभाव है। मैं स्वभाव से ही आलसी हूँ तथा मुझसे ठीक-ठीक पूजा का सम्पादन हो भी नहीं सकता। इन सब कारणों से तुम्हारे चरणों की सेवा में मुझसे जो भी त्रुटि रह गयी हो, उसे क्षमा करना, क्योंकि इस संसार में पुत्र कुपुत्र हो सकता है, किंतु माता कभी कुमाता नहीं होती॥२॥

माँ इस पृथ्वी पर तुम्हारे सीधे-सादे पुत्र तो बहुत से हैं, किंतु उन सबमें मैं ही तुम्हारा बालक हूँ, जो अत्यंत चपल है। मेरे जैसा चंचल कोई विरला ही होगा। शिवे! मेरा जो यह त्याग हुआ है, यह तुम्हारे लिए कदापि उचित नहीं है क्योंकि संसार में कुपुत्र का होना तो सम्भव है परंतु माता कभी कुमाता नहीं होती॥३॥

हे जगदम्बा मातः, मैंने कभी तुम्हारे चरणों की सेवा नहीं की है। देवि! तुम्हें अधिक धन भी अर्पण नहीं किया है। तथापि मुझ जैसे अधम पर जो तुम अनुपम स्नेह करती हो। इसका यहीं कारण है कि संसार में कुपुत्र पैदा हो सकता है, किंतु माता कभी कुमाता नहीं होती॥४॥

गणेश जी को जन्म देने वाली माता पार्वती! एवं अन्य देवताओं की आराधना करते समय मुझे नाना प्रकार की सेवाओं में व्यग्र रहना पडता था, इसलिये पचासी वर्ष से अधिक अवस्था बीत जाने पर मैंने देवताओं को छोड दिया है, अब उनकी सेवा पूजा मुझसे नहीं हो पाती; अतएव उनसे कुछ भी सहायता मिलने की आशा नहीं है। इस समय यदि तुम्हारी कृपा नहीं होगी तो मैं अवलम्बरहित होकर किसकी शरण में जाऊँगा॥५॥

माता अपर्णा तुम्हारे मंत्र का एक अक्षर भी कान में पड़ जाय तो उसका फल यह होता है कि मूर्ख चाण्डाल भी मधुपाक के समान मधुर वाणी का उच्चारण करनेवाला उत्तम वक्ता हो जाता है, दीन मनुष्य भी करोड़ों स्वर्ण मुद्राओं से सम्पन्न हो चिरकाल तक निर्भय होकर विहार करता रहता है। अगर मंत्र के एक अक्षर के श्रवण का ऐसा फल है तो जो लोग विधिपूर्वक जप में लगे रहते हैं, उनके जप से प्राप्त होनेवाला फल कैसा होगा। इसको कौन मनुष्य जान सकता है॥६॥

हे भवानी! जो अपने अङ्गों में चिता की राख-भभूत लपेटे रहते हैं, जिनका विष ही भोजन है, जो दिगम्बरधारी (नग्न रहने वाले) हैं, मस्तक पर जटा और कण्ठ में नागराज वासुकि को हार के रूप में धाराण् करते हैं तथा जिनके हाथ में कपाल (भिक्षापात्र) शोभा पाता है, ऐसे भूतनाथ पशुपति भी जो एकमात्र जगदीश की पदवी धारण करते हैं, इसका क्या कारण है? यह महत्व उन्हें कैसे मिला।; यह केवल तुम्हारे पाणिग्रहण की परिपाटी का फल है॥ तुम्हारे साथ विवाह होने से ही उनका महत्व बढ गया॥७॥

मुख में चन्द्रमा की शोभा धारण करने वाली माँ! मुझे मोक्ष की इच्छा नहीं है, संसार के वैभव की भी अभिलाषा नहीं है; न विज्ञान की अपेक्षा है, न सुख की आकांक्षा; अतः तुमसे मेरी यहीं याचना है कि मेरा जन्म मृडानी, रुद्राणी, शिव, शिव, भवानी- इन नामों का जप करते हुए बीते॥८॥

माँ श्यामा! नाना प्रकार की पूजन सामग्रियों से कभी विधिपूर्वक तुम्हारी आराधना मुझसे न हो सकी। सदा कठोर भाव का चिन्तन करने वाली मेरी वाणी ने कौन सा अपराध नहीं किया है! फिर भी तुम स्वयं ही प्रयत्न करके मुझ अनाथ पर जो किञ्चित् कृपादृष्टि रखती हो, माँ! यह तुम्हारे ही योग्य है। तुम्हारी जैसी दयामयी माता ही मेरे जैसे कुपुत्र को भी आश्रय दे सकती है॥९॥

माता दुर्गे! करुणासिन्धु महेश्वरी! मैं विपत्तियों में फँसकर आज जो तुम्हारा स्मरण करता हूँ, पहले कभी नहीं करता रहा। इसे मेरी शठता न मान लेना; क्योंकि भूख-प्यास से पीडित बालक माता का ही स्मरण करते हैं॥१०॥

जगदम्ब! मुझ पर जो तुम्हारी पूर्ण कृपा बनी हुई है, इसमें आश्चर्य की कौन सी बात है, पुत्र अपराध पर अपराध क्यों न करता जाता हो, फिर भी माता उसकी उपेक्षा नहीं करती॥११॥

महादेवि! मेरे समान कोई पातकी नहीं है और तुम्हारे समान दूसरी कोई पापहारिणी नहीं है। यह समझ कर तुम जैसा उचित समझो वैसा करो॥१२॥

गुप्त सप्तशती

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

संपूर्ण श्री दुर्गा सप्तशती के मंत्रो का पाठ करने से साधक को जो फल प्राप्त होता है, वैसा ही कल्याणकारी फल प्रदान करने वाला गुप्त सप्तशती के मंत्रो का पाठ हैं।

गुप्त सप्तशती में अधिकतर मंत्र बीजों के होने से यह साधकों के लिए अमोघ फल प्रदान करने में समर्थ हैं।

गुप्त सप्तशती के पाठ का क्रम इस प्रकार हैं।

प्रारम्भ में **कुञ्जिका स्तोत्र** उसके बाद **गुप्त सप्तशती** उसके पश्चयात स्तवन का पाठ करे।

कुञ्जिका-स्तोत्र

पूर्व-पीठिका-ईश्वर उवाच:

श्रृणु देवि, प्रवक्ष्यामि कुञ्जिका-मन्त्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेन चण्डीजापं शुभम् भवेत्॥१॥
न वर्म नार्गला-स्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तम् नापि ध्यानम् च न न्यासम् च न चार्चनम्॥२॥
कुञ्जिका-पाठ-मात्रेण दुर्गा-पाठ-फलं लभेत्।
अति गुह्यतमम् देवि देवानामपि दुर्लभम्॥३॥
गोपनीयम् प्रयत्नेन स्व-योनि-वच्च पार्वति।
मारणम् मोहनम् वश्यम् स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठ-मात्रेण संसिद्धिः कुञ्जिकामन्त्रमुत्तमम्॥४॥

अथ मन्त्र

ॐ श्लैं दुँ क्लीं क्लौं जुं सः ज्वलयोज्ज्वल ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल प्रबल-प्रबल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा

इति मन्त्र

इस कुञ्जिका मन्त्र का दस बार जप करना चाहिए। इसी प्रकार स्तव-पाठ के अन्त में पुनः इस मन्त्र का दस बार जप कर कुञ्जिका स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

कुञ्जिका स्तोत्र मूल-पाठ

नमस्ते रुद्र-रूपायै, नमस्ते मधु-मर्दिनि।
नमस्ते कैटभारी च, नमस्ते महिषासनि॥
नमस्ते शुम्भहंत्रेति, निशुम्भासुर-घातिनि।
जाग्रतं हि महा-देवि जप-सिद्धिं कुरुष्व मे॥
ऐं-कारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रति-पालिका॥
क्लीं-कारी कामरूपिण्यै बीजरूपा नमोऽस्तु ते।
चामुण्डा चण्ड-घाती च यैं-कारी वर-दायिनी॥
विच्चे नोऽभयदा नित्यं नमस्ते मंत्ररूपिणि॥
धां धीं धूं धूर्जटेर्पत्नी वां वीं वागेश्वरी तथा।
क्रां क्रीं श्रीं मे शुभं कुरु, ऐं ॐ ऐं रक्ष सर्वदा।।
ॐ ॐ ॐ-कार-रुपायै, ज्रां-ज्रां ज्रम्भाल-नादिनी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि, शां शीं शूं मे शुभं कुरु॥
हूं हूं हूं-काररूपिण्यै ज्रं ज्रं ज्रम्भाल-नादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवानि ते नमो नमः॥7॥

मन्त्र:

अं कं चं टं तं पं यं शं बिन्दुराविर्भव, आविर्भव, हं सं लं क्षं मयि जाग्रय-जाग्रय, त्रोटय-त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा॥

पां पीं पूं पार्वती पूर्णा, खां खीं खूं खेचरी तथा॥
म्लां म्लीं म्लूं दीव्यती पूर्णा, कुञ्जिकायै नमो नमः॥
सां सीं सप्तशती-सिद्धिं, कुरुष्व जप-मात्रतः॥
इदं तु कुञ्जिका-स्तोत्रं मंत्र-जाल-ग्रहां प्रिये।
अभक्ते च न दातव्यं, गोपयेत् सर्वदा श्रृणु॥
कुंजिका-विहितं देवि यस्तु सप्तशतीं पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धिं, अरण्ये रुदनं यथा॥
॥इति श्रीरुद्रयामले गौरीतंत्रे शिवपार्वतीसंवादे कुंजिकास्तोत्रं संपूर्णम्॥

गुप्त-सप्तशती

ॐ ब्रीं-ब्रीं-ब्रीं वेणु-हस्ते, स्तुत-सुर-बटुकैर्हां गणेशस्य माता।
स्वानन्दे नन्द-रुपे, अनहत-निरते, मुक्तिदे मुक्ति-मार्गे॥
हंसः सोहं विशाले, वलय-गति-हसे, सिद्ध-देवी समस्ता।
हीं-हीं-हीं सिद्ध-लोके, कच-रुचि-विपुले, वीर-भद्रे नमस्ते॥१॥

ॐ हींकारोच्चारयन्ती, मम हरति भयं, चण्ड-मुण्डौ प्रचण्डे।
खां-खां-खां खड्ग-पाणे, ध्रक-ध्रक ध्रकिते, उग्र-रुपे स्वरुपे॥

हुँ-हुँ हुँकांर-नादे, गगन-भुवि-तले, व्यापिनी व्योम-रुपे।
हं-हं हंकार-नादे, सुर-गण-नमिते, चण्ड-रुपे नमस्ते॥२॥

ऐं लोके कीर्तयन्ती, मम हरतु भयं, राक्षसान् हन्यमाने।
घ्रां-घ्रां-घ्रां घोर-रुपे, घघ-घघ-घटिते, घर्घरे घोर-रावे॥
निर्मांसे काक-जंघे, घसित-नख-नखा, धूम्र-नेत्रे त्रि-नेत्रे।
हस्ताब्जे शूल-मुण्डे, कुल-कुल ककुले, सिद्ध-हस्ते नमस्ते॥३॥

ॐ क्रीं-क्रीं-क्रीं ऐं कुमारी, कुह-कुह-मखिले, कोकिलेनानुरागे।
मुद्रा-संज्ञ-त्रि-रेखा, कुरु-कुरु सततं, श्री महा-मारि गुह्ये॥
तेजांगे सिद्धि-नाथे, मन-पवन-चले, नैव आज्ञा-निधाने।
ऐंकारे रात्रि-मध्ये, स्वपित-पशु-जने, तत्र कान्ते नमस्ते॥४॥

ॐ व्रां-व्रीं-व्रूं व्रैं कवित्वे, दहन-पुर-गते रुक्मि-रुपेण चक्रे।
त्रिः-शक्तया, युक्त-वर्णादिक, कर-नमिते, दादिवं पूर्व-वर्णे॥
ह्रीं-स्थाने काम-राजे,ज्वल-ज्वल ज्वलिते,कोशिनि कोश-पत्रे।
स्वच्छन्दे कष्ट-नाशे, सुर-वर-वपुषे, गुह्य-मुण्डे नमस्ते॥५॥

ॐ घ्रां-घ्रीं-घ्रूं घोर-तुण्डे, घघ-घघ घघघे घर्घरान्याङ्घ्रि-घोषे।
ह्रीं क्रीं द्रूं द्रोञ्च-चक्रे, रर-रर-रमिते, सर्व-ज्ञाने प्रधाने॥
द्रीं तीर्थेषु च ज्येष्ठे, जुग-जुग जजुगे म्लीं पदे काल-मुण्डे।
सर्वांगे रक्त-धारा-मथन-कर-वरे, वज्र-दण्डे नमस्ते॥६॥

ॐ क्रां क्रीं क्रूं वाम-नमिते, गगन गड-गडे गुह्य-योनि-स्वरुपे।
वज्रांगे, वज्र-हस्ते, सुर-पति-वरदे, मत्त-मातंग-रुढे॥
स्वस्तेजे, शुद्ध-देहे, लल-लल-ललिते, छेदिते पाश-जाले।
किण्डल्याकार-रुपे, वृष वृषभ-ध्वजे, ऐन्द्रि मातर्नमस्ते॥७॥

ॐ हुँ हुँ हुंकार-नादे, विषमवश-करे, यक्ष-वैताल-नाथे।
सु-सिद्धयर्थे सु-सिद्धैः, ठठ-ठठ-ठठठः, सर्व-भक्षे प्रचण्डे॥
जूं सः सौं शान्ति-कर्मेऽमृत-मृत-हरे, निःसमेसं समुद्रे।
देवि, त्वं साधकानां, भव-भव वरदे, भद्र-काली नमस्ते॥८॥
ब्रह्माणी वैष्णवी त्वं, त्वमसि बहुचरा, त्वं वराह-स्वरुपा।
त्वं ऐन्द्री त्वं कुबेरी, त्वमसि च जननी, त्वं कुमारी महेन्द्री॥
ऐं ह्रीं क्लींकार-भूते, वितल-तल-तले, भू-तले स्वर्ग-मार्गे।
पाताले शैल-श्रृंगे, हरि-हर-भुवने, सिद्ध-चण्डी नमस्ते॥९॥

हं लं क्षं शौण्डि-रुपे, शमित भव-भये, सर्व-विघ्नान्त-विघ्ने।
गां गीं गूं गैं षडंगे, गगन-गति-गते, सिद्धिदे सिद्ध-साध्ये॥
वं क्रं मुद्रा हिमांशोर्प्रहसति-वदने, त्र्यक्षरे ह्सैं निनादे।
हां हूं गां गीं गणेशी, गज-मुख-जननी, त्वां महेशीं नमामि॥१०॥

स्तवन

या देवी खड्ग-हस्ता, सकल-जन-पदा, व्यापिनी विशऽव-दुर्गा।
श्यामांगी शुक्ल-पाशाब्दि जगण-गणिता, ब्रह्म-देहार्ध-वासा॥
ज्ञानानां साधयन्ती, तिमिर-विरहिता, ज्ञान-दिव्य-प्रबोधा।
सा देवी, दिव्य-मूर्तिर्प्रदहतु दुरितं, मुण्ड-चण्डे प्रचण्डे॥१॥

ॐ हां हीं हूं वर्म-युक्ते, शव-गमन-गतिर्भीषणे भीम-वक्त्रे।
क्रां क्रीं क्रूं क्रोध-मूर्तिर्विकृत-स्तन-मुखे, रौद्र-दंष्ट्रा-कराले॥
कं कं कंकाल-धारी भ्रमसि, जगदिदं भक्षयन्ती ग्रसन्ती-
हुंकारोच्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं, मुण्ड-चण्डे प्रचण्डे॥२॥

ॐ ह्रां ह्रीं हूं रुद्र-रुपे, त्रिभुवन-नमिते, पाश-हस्ते त्रि-नेत्रे।
रां रीं रुं रंगे किले किलित रवा, शूल-हस्ते प्रचण्डे॥
लां लीं लूं लम्ब-जिह्वे हसति, कह-कहा शुद्ध-घोराट्ट-हासैः।
कंकाली काल-रात्रिः प्रदहतु दुरितं, मुण्ड-चण्डे प्रचण्डे॥३॥

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोर-रुपे घघ-घघ-घटिते घर्घराराव घोरे।
निमाँसे शुष्क-जंघे पिबति नर-वसा धूम्र-धूम्रायमाने॥
ॐ द्रां द्रीं द्रूं द्रावयन्ती, सकल-भुवि-तले, यक्ष-गन्धर्व-नागान्।
क्षां क्षीं क्षूं क्षोभयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्ड-मुण्डे प्रचण्डे॥४॥

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भद्र-काली, हरि-हर-नमिते, रुद्र-मूर्ते विकर्णे।
चन्द्रादित्यौ च कर्णौ, शशि-मुकुट-शिरो वेष्ठितां केतु-मालाम्॥

स्त्रक्-सर्व-चोरगेन्द्रा शशि-करण-निभा तारकाः हार-कण्ठे।
सा देवी दिव्य-मूर्तिः, प्रदहतु दुरितं चण्ड-मुण्डे प्रचण्डे॥५॥
ॐ खं-खं-खं खड्ग-हस्ते, वर-कनक-निभे सूर्य-कान्ति-स्वतेजा।
विद्युज्ज्वालावलीनां, भव-निशित महा-कर्त्रिका दक्षिणेन॥
वामे हस्ते कपालं, वर-विमल-सुरा-पूरितं धारयन्ती।
सा देवी दिव्य-मूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्ड-मुण्डे प्रचण्डे॥६॥

ॐ हुँ हुँ फट् काल-रात्रीं पुर-सुर-मथनीं धूम्र-मारी कुमारी।
ह्रां ह्रीं ह्रूं हन्ति दुष्टान् कलित किल-किला शब्द
अट्टाट्टहासे॥
हा-हा भूत-प्रभूते, किल-किलित-मुखा, कीलयन्ती ग्रसन्ती।
हुंकारोच्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्ड-मुण्डे प्रचण्डे॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं कपालीं परिजन-सहिता चण्डि चामुण्डा-नित्ये।
रं-रं रंकार-शब्दे शशि-कर-धवले काल-कूटे दुरन्ते॥
हुँ हुँ हुंकार-कारि सुर-गण-नमिते, काल-कारी विकारी।
त्र्यैलोक्यं वश्य-कारी, प्रदहतु दुरितं चण्ड-मुण्डे प्रचण्डे॥८॥

वन्दे दण्ड-प्रचण्डा डमरु-डिमि-डिमा, घण्ट टंकार-नादे।
नृत्यन्ती ताण्डवैषा थथ-थइ विभवैर्निर्मला मन्त्र-माला॥
रुक्षौ कुक्षौ वहन्ती, खर-खरिता रवा चार्चिनि प्रेत-माला।
उच्चैस्तैश्चाट्टहासै, हह हसित रवा, चर्म-मुण्डा प्रचण्डे॥९॥

ॐ त्वं ब्राह्मी त्वं च रौद्री स च शिखि-गमना त्वं च देवी कुमारी।
त्वं चक्री चक्र-हासा घुर-घुरित रवा, त्वं वराह-स्वरुपा॥
रौद्रे त्वं चर्म-मुण्डा सकल-भुवि-तले संस्थिते स्वर्ग-मार्गे।
पाताले शैल-श्रृंगे हरि-हर-नमिते देवि चण्डी नमस्ते॥१०॥

रक्ष त्वं मुण्ड-धारी गिरि-गुह-विवरे निर्झरे पर्वते वा।
संग्रामे शत्रु-मध्ये विश विषम-विषे संकटे कुत्सिते वा॥
व्याघ्रे चौरे च सर्पेऽप्युदधि-भुवि-तले वह्नि-मध्ये च दुर्गे।
रक्षेत् सा दिव्य-मूर्तिः प्रदहतु दुरितं मुण्ड-चण्डे
प्रचण्डे॥११॥

इत्येवं बीज-मन्त्रैः स्तवनमति-
शिवं पातक-व्याधि-नाशनम्।
प्रत्यक्षं दिव्य-रुपं ग्रह-गण-मथनं मर्दनं शाकिनीनाम्॥
इत्येवं वेद-वेद्यं सकल-भय-हरं मन्त्र-शक्तिश्च नित्यम्।

मंत्राणां स्तोत्रकं यः पठति स लभते प्रार्थितां मन्त्र सिद्धिम्॥१२॥

चं-चं-चं चन्द्र-हासा चचम चम-चमा चातुरी चित्त-केशी।
यं-यं-यं योग-माया जननि जग-हिता योगिनी योग-रुपा॥
डं-डं-डं डाकिनीनां डमरुक-सहिता दोल हिण्डोल डिम्भा।
रं-रं-रं रक्त-वस्त्रा सरसिज-नयना पातु मां देवि दुर्गा॥१३॥

भारतिय पंचांग का मूल आधार?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दू संस्कृति में पंचांग का विशेष महत्व है। हमारे यहां पंचांग में वर्णित तिथि, पक्ष, ग्रह, नक्षत्र आदि की स्थिती के आधार पर जीवन के विभिन्न 16 संस्कारों से लेकर यात्रा इत्यादि कार्यों हेतु भी शुभ मुहूर्त का चयन करने पर विशेष जोर दिया जाता हैं।

शुभ मुहूर्त देखने का मुख्य उद्देश्य होता हैं की व्यक्ति को अपने शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त हो सके मुख्यतः अयन, विषुव, ऋतु, सूर्य एवं चंद्र, पक्ष, तिथि, नक्षत्र, करण, योग, सूर्योदय व चंद्रोदय, दिनमान, रात्रिमान और पंचांग के मुख्य अंग माने जाते हैं। उपरोक्त सभी महत्वपूर्ण स्थितीयों का गणित के आधार पर सूक्ष्म विश्लेषण किया जाता है।

विद्वानो के मत से वैदिक प्रणाली में इनका कोई विशेष निर्देश नहीं है। लेकिन कालगणना में परिशुद्धता के लिए इन्हें अपनाया जाता हैं।

पृथ्वी सूर्य के आकर्षण से निर्धारित एक नियत मार्ग में सतत भ्रमण करती है। साधारणतः पृथ्वी से सूर्य जिस मार्ग पर चलता हुआ प्रतीत होता है, उसे ज्योतिष की पारिभाषिक शब्दावली में क्रांतिवृत्त अर्थात एकलिप्टिक (Ecliptic) कहते हैं। इस क्रांतिवृत्त मार्ग के 9 अंश से बने विस्तार को भचक्र कहते हैं। पृथ्वी की नियत गति के कारण ही अयन, विषुव, ऋतु एवं दिन-रात होते हैं।

संक्रांति निर्धारण और पंचांग की परिशुद्धता में अयन और विषुव तिथियों की भूमिका प्रमुख मानी जाती हैं। जिस प्रकार पृथ्वी का संबंध सूर्य क्रांतिवृत्त से रहता है उसी प्रकार पृथ्वी का संबंध से चंद्र अपने निश्चित माग्र में भ्रमण करता है। अन्य ग्रहो की अपेक्षा चंद्र अति शीघ्र गति करता है इस लिए चंद्र जब सूर्य से 12 अंशों के अंतर पर आता है, तब एक तिथि का क्रम पूरा हो जाता है। इस प्रकार क्रमशः 12-12 अंशों के अंतर से नियमित तिथियां बदलती हैं।

भारतिय संस्कृति मे मुहूर्त का महत्व

भारतिय संस्कृति मे मुहूर्त का विशेष महत्व हैं। हमारे ऋषि-मुनि विद्वान आचार्यो ने जन्म से अंत्येष्टि(मृत व्यक्ति कि अंतिम क्रिया) तक सभी संस्कारों एवं अन्य सभी मांगलिक कार्यों के लिए मुहूर्त का विधान आवश्यक बताया गया हैं।किसी कार्य विशेष में सफलता कि प्राप्ति हेतु निश्चित मुहूर्त का चुनाव किया जाता हैं।

भारतीय ज्योतिष सिद्धान्त के अनुशार हर मुहूर्त का अपना वैज्ञानिक प्रभाव एवं महत्व हैं। कोई भी व्यक्ति इन मुहूर्त के प्रभाव एवं महत्व के बारे मे पूर्ण जानकारी प्राप्त कर व्यक्ति अपने किसी भी कार्य उद्देश्य में विशेष सफलता प्राप्ति हेतु उचित मुहूर्त का चुनाव कर सफलता प्राप्ति कि संभावना बढा सकते हैं। एवं ज्योतिषीय मत से शुभ फल प्रदान करने वाले मुहूर्त में किये गये कार्यो में उस कार्य की सफलता की संभावना कई गुणा बढ़ जाती है।

प्रायः हर मुहूर्त का निर्णय ब्रह्मांड में स्थित ग्रहो कि स्थितियों कि गणना कर किया जाता हैं। भारतिय संस्कृति में प्रायः हर शुभ कार्य में भारत के प्रमुख 16 संस्कारो को संपन्न करने हेतु मुहूर्त का चुनाव अति आवश्यक माना गया हैं। क्योकि शुभा मुहूर्त में किये गये हर शुभ कार्य अत्याधिक शुभ फल प्रदान करने वाले होते हैं।

दिशाशूल महत्वपूर्ण या कर्तव्य महत्वपूर्ण है?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

एक बार एक राजा के ऊपर उसके प्रतिद्वंदी राजा ने हमला कर दिया। राजा ने राज ज्योतिषी को बुलाया और उनसे पूछा कि इस वक्त हमें क्या करना चाहिए। ज्योतिषी ने उत्तर दिया महाराज जिस दिशा से हमला हुआ हे वह दिशा पूर्व हैं और आज उस दिशा में दिशाशूल हे, आज हमें उस दिशा में नहीं जाना चाहिये। ज्योतिषी की बात को व़जीर बीच में काट कर बराबर कह रहा हे कि महाराज फौरन हमला करो। राजा ने कहा नहीं हम को ज्योतिषी की बात मननी है। ज्योतिशी ने कहा हम को इस समय उलटी दिशा में अर्थात पश्चिम दिशा में जाना चाहिए। और वो पश्चिम की और चल दिए।

रास्ते में उनका व़जीर बार-बार कह रहा था महारज हमला करो। लेकिन व़जीर की बात को राजा ने नहीं सुना।

रासते में उन्हें एक किसान मिला जो पूर्व दिशा की और जा रह था। ज्योतिषी ने उसे रोका और कहाँ आज इधर दिशाशूल है इधर मत जाओ । किसान बोला पंडितजी इस दिशा में तो मैंने जब होश सम्भाला हैं अपने खेत पर जाता रहा हूँ और मेरे पिताजी से लेकर दादा परदादा भी जाते रहे हैं। ज्योतिषी ने कहा अच्छा अपना हाथ दिखा। किसान ने ज्योतिषी को अपना हाथ उलटा दिखाया ज्योतिषी ने कहा सीधा कर के दिखाओ।

किसान बोला हम भिखारी नही हैं जो हाथ फेलाए। हमारे क्षेत्र मे साक्षात शिवजी का वास हे हम को किसी चिज का डर नहीं हैं। वह किसान जय महाकाल बोल कर चला गया।

किसान की बात से राजा को भी अकल आइ और उसने मंत्री से कहा वापस चलो और हमला बोलो, राजा ने भी जय महकाल का नारा लगा कर हमला बोल दिया और जीत गया।

नोटः दिशाशूल मात्र से अपने कर्तव्य से पीछे हटना कोरी मूर्खत होती हैं। इस लिए आकस्मिक प्रसंगो एवं घटनाओं से निपटने के लिए दिशाशूल का विचार त्याग कर अपनी बुद्धि एवं विवेक से कार्य करना चाहिए।

कालसर्प योग एक कष्टदायक योग !

काल का मतलब है मृत्यु । ज्योतिष के जानकारों के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म अशुभकारी कालसर्प योग मे हुवा हो वह व्यक्ति जीवन भर मृत्यु के समान कष्ट भोगने वाला होता है, व्यक्ति जीवन भर कोइ ना कोइ समस्या से ग्रस्त होकर अशांत चित होता है।

कालसर्प योग अशुभ एवं पीड़ादायक होने पर व्यक्ति के जीवन को अत्यंत दुःखदायी बना देता है।

कालसर्प योग मतलब क्या?

जब जन्म कुंडली में सारे ग्रह राहु और केतु के बीच स्थित रहते हैं तो उससे ज्योतिष विद्या के जानकार उसे कालसर्प योग कहा जाता है।

कालसर्प योग किस प्रकार बनता है और क्यों बनता हैं?

जब 7 ग्रह राहु और केतु के मध्य मे स्थित हो यह अच्छि स्थिति नहि है। राहु और केतु के मध्य मे बाकी सब ग्रह आजाने से राहु केतु अन्य शुभ ग्रहों के प्रभावों को क्षीण कर देते हों!, तो अशुभ कालसर्प योग बनता है, क्योकि ज्योतिष मे राहु को सर्प(साप) का मुह(मुख) एवं केतु को पूंछ कहा जाता है।

कालसर्प योग का प्रभाव क्य होता है?

जिस प्रकार किसी व्यक्ति को साप काट ले तो वह व्यक्ति शांति से नही बेठ सकता वेसे ही कालसर्प योग से पीड़ित व्यक्ति को जीवन पर्यन्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक परेशानी का सामना करना पडता है। विवाह विलम्ब से होता है एवं विवाह के पश्च्यात संतान से संबंधी कष्ट जेसे उसे संतान होती ही नहीं या होती है तो रोग ग्रस्त होती है। उसे जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव रहता है। जातक को कालसर्प योग के कारण सभी कार्यों में अत्याधिक संघर्ष करना पड़ताअ है। उसकी रोजी-रोटी का जुगाड़ भी बड़ी मुश्किल से हो पाता है। अगर जुगाड़ होजाये तो लम्बे समय तक टिकती नही है। बार-बार व्यवसाय या नौकरी मे बदलाव आते रेहते है। धनाढय घर में पैदा होने के बावजूद किसी न किसी वजह से उसे अप्रत्याशित रूप से आर्थिक क्षति होती रहती है। तरह-तरह की परेशानी से घिरे रहते हैं। एक समस्या खतम होते ही दूसरी पाव पसारे खडी होजाती है। कालसर्प योग से व्यक्ति को चैन नही मिलता उसके कार्य बनते ही नही और बन जाये आधे मे रुक जाते है। व्यक्ति के 99% हो चुका कार्य भी आखरी पलो मे अकस्मात ही रुक जात है।

परंतु यह ध्यान रहे, कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नही पड़ता। क्योकि किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां स्थित हैं और दृष्टि कर रहे है उस्का प्रभाव बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

इसलिए मात्रा कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका जानकार या कुशल ज्योतिषी से ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता है। जब असली कारण ज्योतिषीय विश्लेषण से स्पष्ट हो जाये तो तत्काल उसका उपाय करना चाहिए। उपाय से कालसर्प योग के कुप्रभावो को कम किया जा सकता है।

यदि आपकी जन्म कुंडली मे भी अशुभ कालसर्प योग का बन रहा हो और आप उसके अशुभ प्रभावों से परेशान हो, तो कालसर्प योग के अशुभ प्राभावों को शांत करने के लिये विशेष अनुभूत उपायों को अपना कर अपने जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाए।

***

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 190, 280, Real -1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है। >> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

सर्व कार्य सिद्धि कवच



जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

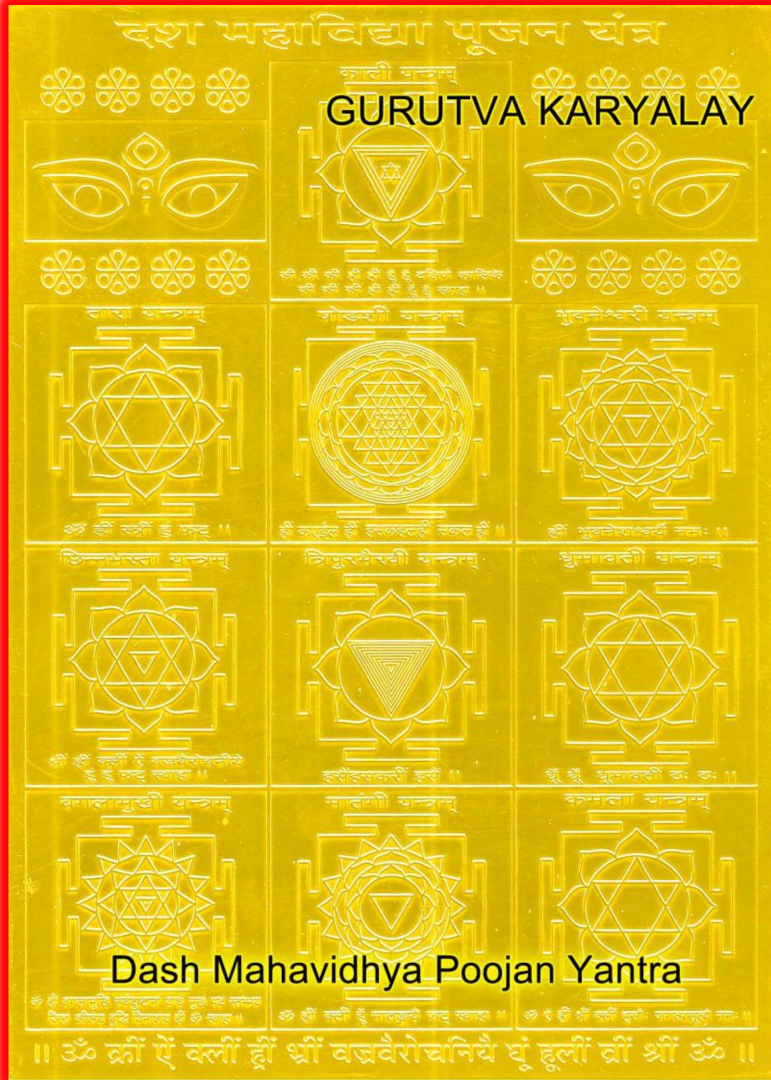
श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं।
- विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रात: काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : लक्ष्मी गणेश यंत्र | गणेश यंत्र | गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित) | गणेश सिद्ध यंत्र | एकाक्षर गणपति यंत्र | हरिद्रा गणेश यंत्र भी उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं।

दस महाविद्या पूजन यंत्र



दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्ति संपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इसलिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा

पारद श्री यंत्र	पारद लक्ष्मी गणेश	पारद लक्ष्मी नारायण	पारद लक्ष्मी नारायण
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	100 Gram	121 Gram	100 Gram
पारद शिवलिंग	पारद शिवलिंग+नंदि	पारद शिवजी	पारद काली
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	75 Gram	37 Gram
पारद दुर्गा	पारद दुर्गा	पारद सरस्वती	पारद सरस्वती
82 Gram	100 Gram	50 Gram	225 Gram
पारद हनुमान 2	पारद हनुमान 3	पारद हनुमान 1	पारद कुबेर
100 Gram	125 Gram	100 Gram	100 Gram

हमारें यहां सभी प्रकार की मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमाएं, शिवलिंग, पिरामिड, माला एवं गुटिका शुद्ध पारद में उपलब्ध हैं।

बिना मंत्र सिद्ध की हुई पारद प्रतिमाएं थोक व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं।

ज्योतिष, रत्न व्यवसाय, पूजा-पाठ इत्यादि क्षेत्र से जुडे बंधु/बहन के लिये हमारें विशेष यंत्र, कवच, रत्न, रुद्राक्ष व अन्य दुलभ सामग्रीयों पर विशेष सुबिधाएं उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

आर्थिक लाभ एवं सुख समृद्धि हेतु 19 दुर्लभ लक्ष्मी यंत्र >> Shop Online | Order Now

विभिन्न लक्ष्मी यंत्र

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र	श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र	अंकात्मक बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी बीसा यंत्र	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	लक्ष्मी गणेश यंत्र	धनदा यंत्र > Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY :Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इसलिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-**

>> **Shop Online** | **Order Now**

(**नोटः** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- ❖ परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- ❖ भाग्योदय यंत्र
- ❖ मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- ❖ राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- ❖ गृहस्थ सुख यंत्र
- ❖ शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- ❖ सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- ❖ आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- ❖ पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- ❖ रोग निवृत्ति यंत्र
- ❖ साधना सिद्धि यंत्र
- ❖ शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

- ❖ क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 325 से 12700 तक

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 910 से 12700 तक



विभिन्न देवताओं के यंत्र		
गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र
मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र		
व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	संतान प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रह्माण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र

ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्घायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1" X 1"	550	1" X 1"	370	1" X 1"	325
2" X 2"	910	2" X 2"	640	2" X 2"	550
3" X 3"	1450	3" X 3"	1050	3" X 3"	910
4" X 4"	2350	4" X 4"	1450	4" X 4"	1225
6" X 6"	3700	6" X 6"	2800	6" X 6"	2350
9" X 9"	9100	9" X 9"	4600	9" X 9"	4150
12" X12"	12700	12" X12"	9100	12" X12"	9100

मार्च 2020 मासिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
1	रवि	फाल्गुन	शुक्ल	षष्ठी	11:34	भरणी	06:42	इन्द्र	12:19	तैतिल	11:34	मेष	13:19
2	सोम	फाल्गुन	शुक्ल	सप्तमी	13:11	कृतिका	08:54	वैधृति	12:27	वणिज	13:11	वृष	-
3	मंगल	फाल्गुन	शुक्ल	अष्टमी	14:08	रोहिणि	10:31	विषकुंभ	12:06	बव	14:08	वृष	23:04
4	बुध	फाल्गुन	शुक्ल	नवमी	14:16	मृगशिरा	11:23	प्रीति	11:10	कौलव	14:16	मिथुन	-
5	गुरु	फाल्गुन	शुक्ल	दशमी	13:33	आद्रा	11:25	आयुष्मान	09:34	गर	13:33	मिथुन	28:55
6	शुक्र	फाल्गुन	शुक्ल	एकादशी - द्वादशी	11:58	पुनर्वसु	10:38	सौभाग्य	07:19	विष्टि	11:58	कर्क	-
7	शनि	फाल्गुन	शुक्ल	द्वादशी - त्रयोदशी	09:37	पुष्य	09:04	अतिगंड	25:00	बालव	09:37	कर्क	-
8	रवि	फाल्गुन	शुक्ल	त्रयोदशी - चतुर्दशी	06:32 -27:06	आश्लेषा - मघा	06:52-04:09	सुकर्मा	21:07	गर	16:55	कर्क	06:53
9	सोम	फाल्गुन	शुक्ल	पूर्णिमा	23:17	पूर्वाफाल्गुनी	25:08	धृति	16:56	विष्टि	13:13	सिंह	-
10	मंगल	चैत्र	कृष्ण	प्रतिपदा	19:20	उत्तराफाल्गुनी	22:01	शूल	12:35	बालव	09:19	सिंह	06:22
11	बुध	चैत्र	कृष्ण	द्वितीया	15:28	हस्त	18:59	गंड	08:15	गर	15:28	कन्या	-
12	गुरु	चैत्र	कृष्ण	तृतीया	11:50	चित्रा	16:15	ध्रुव	24:11	विष्टि	11:50	कन्या	05:35
13	शुक्र	चैत्र	कृष्ण	चतुर्थी- पंचमी	08:39-30:04	स्वाती	13:59	व्याघात	20:44	बालव	08:39	तुला	-

14	शनि	चैत्र	कृष्ण	षष्ठी	28:10	विशाखा	12:19	हर्षण	17:49	गर	17:01	तुला	06:41
15	रवि	चैत्र	कृष्ण	सप्तमी	27:02	अनुराधा	11:23	वज्र	15:29	विष्टि	15:30	वृश्चिक	-
16	सोम	चैत्र	कृष्ण	अष्टमी	26:42	जेष्ठा	11:12	सिद्धि	13:45	बालव	14:46	वृश्चिक	11:13
17	मंगल	चैत्र	कृष्ण	नवमी	27:06	मूल	11:45	व्यतिपात	12:37	तैतिल	14:49	धनु	-
18	बुध	चैत्र	कृष्ण	दशमी	28:09	पूर्वाषाढ़	13:00	वरियान	12:01	वणिज	15:33	धनु	19:25
19	गुरु	चैत्र	कृष्ण	एकादशी	-	उत्तराषाढ़	14:49	परिग्रह	11:51	बव	16:54	मकर	-
20	शुक्र	चैत्र	कृष्ण	एकादशी द्वादशी	05:45-	श्रवण	17:04	शिव	12:03	कौलव	18:42	मकर	-
21	शनि	चैत्र	कृष्ण	द्वादशी	07:44	धनिष्ठा	19:39	सिद्ध	12:30	तैतिल	07:44	मकर	06:21
22	रवि	चैत्र	कृष्ण	त्रयोदशी	10:00	शतभिषा	22:26	साध्य	13:08	वणिज	10:00	कुंभ	-
23	सोम	चैत्र	कृष्ण	चतुर्दशी	12:26	पूर्वाभाद्रपद	25:20	शुभ	13:53	शकुनि	12:26	कुंभ	18:37
24	मंगल	चैत्र	कृष्ण	अमावस्या	14:57	उत्तराभाद्रपद	28:18	शुक्ल	14:42	नाग	14:57	मीन	-
25	बुध	चैत्र	शुक्ल	प्रतिपदा	17:31	रेवति	....	ब्रह्म	15:32	बव	17:31	मीन	-
26	गुरु	चैत्र	शुक्ल	द्वितीया	20:01	रेवति	07:16	इन्द्र	16:21	बालव	06:47	मीन	07:17
27	शुक्र	चैत्र	शुक्ल	तृतीया	22:24	अश्विनी	10:08	वैधृति	17:05	तैतिल	09:14	मेष	-
28	शनि	चैत्र	शुक्ल	चतुर्थी	24:32	भरणी	12:51	विषकुंभ	17:40	वणिज	11:30	मेष	19:31
29	रवि	चैत्र	शुक्ल	पंचमी	26:18	कृतिका	15:17	प्रीति	18:01	बव	13:28	वृष	-
30	सोम	चैत्र	शुक्ल	षष्ठी	27:32	रोहिणि	17:17	आयुष्मान	18:03	कौलव	14:59	वृष	-
31	मंगल	चैत्र	शुक्ल	सप्तमी	28:07	मृगशिरा	18:43	सौभाग्य	17:37	गर	15:55	वृष	06:06

मार्च 2020 मासिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
1	रवि	फाल्गुन	शुक्ल	षष्ठी	11:34	गोरूपिणी षष्ठी,
2	सोम	फाल्गुन	शुक्ल	सप्तमी	13:11	कामदा सप्तमी व्रत, कल्याण सप्तमी, कौमुदी सप्तमी, भानु सप्तमी, होलाष्टक प्रारंभ (शुभ कार्यों हेतु वर्जित),
3	मंगल	फाल्गुन	शुक्ल	अष्टमी	14:08	श्रीदुर्गाष्टमी व्रत, श्रीअन्नपूर्णाष्टमी व्रत, तैलाष्टमी,
4	बुध	फाल्गुन	शुक्ल	नवमी	14:16	आनन्द नवमी, ब्रजमें होली शुरू, लट्ठमार होली (बरसाना, मथुरा),
5	गुरु	फाल्गुन	शुक्ल	दशमी	13:33	फागु दशमी, लट्ठमार होली, लट्ठमार होली, खाटूश्याम मेला(राज)
6	शुक्र	फाल्गुन	शुक्ल	एकादशी - द्वादशी	11:58	आमलकी (आंवला) एकादशीव्रत, रंगभरी एकादशी, लट्ठमार होली (मथुरा), पुष्य नक्षत्रयुक्त महाद्वादशी,
7	शनि	फाल्गुन	शुक्ल	द्वादशी - त्रयोदशी	09:37	श्रीजगन्नाथ दर्शन, गोविन्द द्वादशी, नृसिंह द्वादशी व्रत, श्यामबाबा द्वादशी, पापनाशिनी द्वादशी, सुकृत द्वादशी, जया द्वादशी, शनि प्रदोष व्रत, संध्या कालीन नंद त्रयोदशी व्रत,
8	रवि	फाल्गुन	शुक्ल	त्रयोदशी - चतुर्दशी	06:32 -27:06	सूर्योदय कालीन नंद त्रयोदशी व्रत, होलिकोत्सव (वृन्दावन), महेश्वर व्रत, सर्वार्तिहर व्रत,
9	सोम	फाल्गुन	शुक्ल	पूर्णिमा	23:17	पूर्णिमा व्रत, हुताशनी पूर्णिमा, (होलिका-दहन), स्नान-दान-व्रत हेतु उत्तम फाल्गुनी पूर्णिमा, होली-रंगोत्सव (धुलैण्डी), दोल यात्रा, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयंती व्रतोत्सव, होलाष्टक समाप्त, गणगौर पूजा प्रारंभ (राज)
10	मंगल	चैत्र	कृष्ण	प्रतिपदा	19:20	चैत्र मास कृष्ण पक्ष आरम्भ, चैत्र-मासीय व्रत-नियमादि प्रारम्भ, होली, धुलेंडी, छारेंडी, वसन्तोत्सव, होलिका विभूति धारण, धूलि वंदन, साभ्यंग स्नान, आम्र कुसुम प्राशन, बसन्त प्रतिपदा, बसंत स्नान, रतिकाम महोत्सव,
11	बुध	चैत्र	कृष्ण	द्वितीया	15:28	भ्रातृ द्वितीया, भैया दूज, भगिनी गृह में भोजन, कलम दान-पूजन, चित्रगुप्त पूजन, संत तुकाराम जयन्ती,
12	गुरु	चैत्र	कृष्ण	तृतीया	11:50	संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात 09.31 बजे,
13	शुक्र	चैत्र	कृष्ण	चतुर्थी-पंचमी	08:39-30:04	क्षयतिथि, रंग पंचमी, श्री जयन्ती, श्री पंचमी
14	शनि	चैत्र	कृष्ण	षष्ठी	28:10	शीतला षष्ठी, स्कन्द षष्ठी (प.बं), श्री एकनाथ षष्ठी,
15	रवि	चैत्र	कृष्ण	सप्तमी	27:02	शीतला सप्तमी व्रत-पूजन , भानु सप्तमी, सूर्य की मीन संक्रान्ति (दोपहर 12:09 बजे) गौ-अन्न दान श्रेष्ठ, गोदावरी में स्नान का विशेष महत्व, पूण्य काल 12:09 से 18:29 तक (06 घंटे 20 मिनट), महा पूण्य काल 12:09 से 14:09 तक (02 घंटे 00 मिनट), संकल्पादि में प्रयोजनीय बसन्त ऋतु प्रारम्भ, मीन (खर) मासारम्भ,

16	सोम	चैत्र	कृष्ण	अष्टमी	26:42	श्री शीतलाष्टमी व्रत (शास्त्रोक्त विधान से आज के दिन बासी भोजन निर्धारित है),
17	मंगल	चैत्र	कृष्ण	नवमी	27:06	-
18	बुध	चैत्र	कृष्ण	दशमी	28:09	-
19	गुरु	चैत्र	कृष्ण	एकादशी	-	पापमोचिनी एकादशी
20	शुक्र	चैत्र	कृष्ण	एकादशी द्वादशी	05:45-	**सुबह 05:45 तक** पापमोचिनी एकादशी व्रत, त्रिस्पर्श महाद्वादशी
21	शनि	चैत्र	कृष्ण	द्वादशी	07:44	प्रदोष व्रत, **शनि प्रदोष व्रत**, दमनोत्सव, मधुश्रवा त्रयोदशी,
22	रवि	चैत्र	कृष्ण	त्रयोदशी	10:00	**संध्या कालीन** शिव चतुर्दशी
23	सोम	चैत्र	कृष्ण	चतुर्दशी	12:26	**दोपहर 12:26 तक** शिव चतुर्दशी, श्राद्ध हेतु उत्तम चैत्री अमावस्या,
24	मंगल	चैत्र	कृष्ण	अमावस्या	14:57	व्रत-स्नान-दान हेतु उत्तम चैत्री अमावस्या, मन्वादि, आज के दिन गंगा स्नान से सहस्त्र गायों के दान का फल प्राप्त होता है, चान्द्र सम्वत्सर 2076 (**परिधावी**) विक्रमीय समाप्त, अन्वाधान,
25	बुध	चैत्र	शुक्ल	प्रतिपदा	17:31	**नवरात्र के प्रथम दिन देवी शैलपुत्री का पूजन**, चैत्र मास शुक्ल पक्ष आरम्भ, चैत्र वासन्तिक नवरात्रारम्भ, विक्रम सम्वत् 2077 (**प्रमादी**) प्रारम्भ, कलश स्थापन, ध्वजारोहण, वर्षपति पूजा, कल्पादि, आरोग्य व्रत, विद्या व्रत, नवसम्वत्सरोत्सव, गुडी पड़वा, राष्ट्रीय शक सम्वत् 1942 (**शार्वरी**) प्रारम्भ,
26	गुरु	चैत्र	शुक्ल	द्वितीया	20:01	**नवरात्र के द्वितीय दिन देवी ब्रह्मचारिणी का पूजन**, **सिंघारा दोज**, मत्स्य जयन्ती,
27	शुक्र	चैत्र	शुक्ल	तृतीया	22:24	**नवरात्र के तृतीय दिन देवी चन्द्रघण्टा का पूजन**, गणगौर, गणगौरी व्रत, सौभाग्य शयन तृतीया, दोलारुढ़ शिव गौरी पूजन, सरहुल (बिहार), मनोरथ तृतीया व्रत, अरून्धती व्रत-पूजन, मन्वादि,
28	शनि	चैत्र	शुक्ल	चतुर्थी	24:32	**नवरात्र के चतुर्थ दिन देवी कूष्माण्डा का पूजन**, वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, सौभाग्य सुंदरी व्रत (चंद्र अस्त रात 10:06 बजे)
29	रवि	चैत्र	शुक्ल	पंचमी	26:18	**नवरात्र के पंचम दिन देवी स्कंदमाता का पूजन**, पंचमी, कल्पादि, डोलोत्सव,
30	सोम	चैत्र	शुक्ल	षष्ठी	27:32	**नवरात्र के षष्ठम दिन देवी कात्यायनी का पूजन**, श्री सूर्य षष्ठी व्रत (सायान्हव्यापिनी षष्ठी में), स्कन्द षष्ठी व्रत, श्री अशोक षष्ठी व्रत (प.बं), यमुना जयंती
31	मंगल	चैत्र	शुक्ल	सप्तमी	28:07	**नवरात्र के सप्तम दिन देवी कालरात्रि का पूजन**, वासन्ती दुर्गा पूजारम्भ, **महानिशा पूजा** आयंबील (ओली) प्रारम्भ जैन,

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	**Diamond (Special)**	**Green Emerald (Special)**	**Naturel Pearl (Special)**	**Ruby (Old Berma) (Special)**	**Green Emerald (Special)**
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	**Red Coral (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं।

>> Shop Online | Order Now

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ़ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्‌भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्‌भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 910 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध >> **Shop Online**

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रृत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र
(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)



घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 2350 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध**

>> Shop Online | Order Now

मार्च 2020 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग			
2	सुबह 08:55 से अगले दिन सूर्योदय तक	20	सूर्योदय से संध्या 05:05 तक
4	सूर्योदय से दोपहर 11:23 तक	24	सूर्योदय से अगले दिन प्रातः 04:19 तक
5	दोपहर 11:23 से अगले दिन सुबह 10:38 तक	26	सूर्योदय से सुबह 10:09 तक
11	सूर्योदय से संध्या 07:00 तक	30	सूर्योदय से अगले दिन सूर्योदय तक
त्रिपुष्कर योग (तीनगुना फल दायक)			
1	दोपहर 11:16 से अगले दिन सूर्योदय तक	10	संध्या 07:24 से रात 10:02 तक
द्विपुष्कर योग (दोगुना फल दायक)			
21	सूर्योदय से सुबह 07:56 तक	31	सूर्योदय से संध्या 06:44 तक
विघ्नकारक भद्रा			
2	दोपहर 12:52 से रात्र 01:26 तक (स्वर्ग)	15	प्रातः 04:25 से दोपहर 03:46 तक (स्वर्ग)
6	रात 00:39 से दिन 11:47 तक (पृथ्वी)	18	दोपहर 03:50 से अगले दिन प्रातः 04:26 तक (पाताल)
9	प्रातः 03:03 से दोपहर 01:11 तक (पृथ्वी)	22	सुबह 10:07 से रात्र 11:18 तक (पृथ्वी)
12	रात 01:43 से दोपहर 11:58 तक (पाताल)	28	सुबह 11:17 से रात्र 00:17 तक (स्वर्ग)

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- द्विपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ दोगुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

	गुलिक काल (शुभ)	यम काल (अशुभ)	राहु काल (अशुभ)
वार	समय अवधि	समय अवधि	समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुसार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रह्मांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रह्मांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। >> **Shop Online | Order Now**

Declaration Notice

- We do not accept liability for any out of date or incorrect information.
- We will not be liable for your any indirect consequential loss, loss of profit,
- If you will cancel your order for any article we can not any amount will be refunded or Exchange.
- We are keepers of secrets. We honour our clients' rights to privacy and will release no information about our any other clients' transactions with us.
- Our ability lies in having learned to read the subtle spiritual energy, Yantra, mantra and promptings of the natural and spiritual world.
- Our skill lies in communicating clearly and honestly with each client.
- Our all kawach, yantra and any other article are prepared on the Principle of Positiv energy, our Article dose not produce any bad energy.

Our Goal

- Here Our goal has The classical Method-Legislation with Proved by specific with fiery chants prestigious full consciousness (Puarn Praan Pratisthit) Give miraculous powers & Good effect All types of Yantra, Kavach, Rudraksh, preciouse and semi preciouse Gems stone deliver on your door step.

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है । अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

राज राजेश्वरी कवच Raj Rajeshwari Kawach ………………………………	11000	विष्णु बीसा कवच Vishnu Visha Kawach ……………………………….	2350
अमोघ महामृत्युंजय कवच Amogh Mahamrutyunjay Kawach …………………….	10900	रामभद्र बीसा कवच Ramabhadra Visha Kawach …………………………….	2350
दस महाविद्या कवच Dus Mahavidhya Kawach ………………………………	7300	कुबेर बीसा कवच Kuber Visha Kawach …………………………………	2350
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach..	6400	गरुड बीसा कवच Garud Visha Kawach …………………………………	2350
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach …………………...	6400	लक्ष्मी बीसा कवच Lakshmi Visha Kawach ……………………………….	2350
नवदुर्गा शक्ति कवच Navdurga Shakiti Kawach …………………………….	6400	सिंह बीसा कवच Sinha Visha Kawach ………………………………….	2350
रसायन सिद्धि कवच Rasayan Siddhi Kawach ……………………………...	6400	नर्वाण बीसा कवच Narvan Visha Kawach ……………………………….	2350
पंचदेव शक्ति कवच Pancha Dev Shakti Kawach …………………………….	6400	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach ……………	2350
सर्व कार्य सिद्धि कवच Sarv Karya Siddhi Kawach …………………………...	5500	राम रक्षा कवच Ram Raksha Kawach ………………………………….	2350
सुवर्ण लक्ष्मी कवच Suvarn Lakshmi Kawach …………………………….	4600	नारायण रक्षा कवच Narayan Raksha Kavach ………………………………...	2350
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच Swarnakarshan Bhairav Kawach …………………….	4600	हनुमान रक्षा कवच Hanuman Raksha Kawach ……………………………...	2350
कालसर्प शांति कवच Kalsharp Shanti Kawach ……………………………...	3700	भैरव रक्षा कवच Bhairav Raksha Kawach ……………………………….	2350
विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach ……………	3250	शनि साड़ेसाती और ढैया कष्ट निवारण कवच Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach …..	2350
इष्ट सिद्धि कवच Isht Siddhi Kawach ……………………………………….	2800	श्रापित योग निवारण कवच Sharapit Yog Nivaran Kawach ………………………..	1900
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach …………...	2350	विष योग निवारण कवच Vish Yog Nivaran Kawach …………………………….	1900
श्रीदुर्गा बीसा कवच Durga Visha Kawach ……………………………………….	2350	सर्वजन वशीकरण कवच Sarvjan Vashikaran Kawach …………………………..	1450
कृष्ण बीसा कवच Krushna Bisa Kawach …………………………………...	2350	सिद्धि विनायक कवच Siddhi Vinayak Ganapati Kawach …………………...	1450
अष्ट विनायक कवच Asht Vinayak Kawach …………………………………...	2350	सकल सम्मान प्राप्ति कवच Sakal Samman Praapti Kawach ………………………	1450
आकर्षण वृद्धि कवच Aakarshan Vruddhi Kawach …………………………….	1450	स्वप्न भय निवारण कवच Swapna Bhay Nivaran Kawach ………………………...	1050

वशीकरण नाशक कवच Vasikaran Nashak Kawach ……..........................	1450	सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए) Saraswati Kawach (For Class +10) …………………..	1050
प्रीति नाशक कवच Preeti Nashak Kawach …….......................……..	1450	सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए) Saraswati Kawach (For up to Class 10) …………….	910
चंडाल योग निवारण कवच Chandal Yog Nivaran Kawach ……......................	1450	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
ग्रहण योग निवारण कवच Grahan Yog Nivaran Kawach ……...................…..	1450	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………...	820
मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग) Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga) …………	1450	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ………………………………	820
अष्ट लक्ष्मी कवच Asht Lakshmi Kawach ……...............................…	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
आकस्मिक धन प्राप्ति कवच Akashmik Dhan Prapti Kawach ……..……………..	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……...……………...…...	910
स्पे.व्यापार वृद्धि कवच Special Vyapar Vruddhi Kawach ……..………………	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……...……………...………..	910
धन प्राप्ति कवच Dhan Prapti Kawach ……...............................…...	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach ……………………………….	910
कार्य सिद्धि कवच Karya Siddhi Kawach ……......................................	1250	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
भूमिलाभ कवच Bhumilabh Kawach ……..	1250	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………...	820
नवग्रह शांति कवच Navgrah Shanti Kawach ……......................................	1250	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ………………………………	820
संतान प्राप्ति कवच Santan Prapti Kawach ……...............................…..	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
कामदेव कवच Kamdev Kawach ……...	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……...……………...…...	910
हंस बीसा कवच Hans Visha Kawach ……...............................………..	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……...……………...………..	910
पदौन्नति कवच Padounnati Kawach ……..	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach ……………………………….	910
ऋण / कर्ज मुक्ति कवच Rin / Karaj Mukti Kawach ……..................................	1250	त्रिशूल बीसा कवच Trishool Visha Kawach ……..………………………...	910
शत्रु विजय कवच Shatru Vijay Kawach …………………………………..	1050	व्यापर वृद्धि कवच Vyapar Vruddhi Kawach ……………………………....	910
विवाह बाधा निवारण कवच Vivah Badha Nivaran Kawach ………………………..	1050	सर्व रोग निवारण कवच Sarv Rog Nivaran Kawach …………………………....	910
स्वस्तिक बीसा कवच Swastik Visha Kawach ……..………………………….	1050	शारीरिक शक्ति वर्धक कवच Sharirik Shakti Vardhak Kawach ..……………………..	910
मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच Mastishk Prushti Vardhak Kawach …………………..	820	सिद्ध शुक्र कवच Siddha Shukra Kawach ……………………………….	820

वाणी पृष्टि वर्धक कवच Vani Prushti Vardhak Kawach	820	सिद्ध शनि कवच Siddha Shani Kawach	820
कामना पूर्ति कवच Kamana Poorti Kawach	820	सिद्ध राहु कवच Siddha Rahu Kawach	820
विरोध नाशक कवच Virodh Nashan Kawach	820	सिद्ध केतु कवच Siddha Ketu Kawach	820
सिद्ध सूर्य कवच Siddha Surya Kawach	820	रोजगार वृद्धि कवच Rojgar Vruddhi Kawach	730
सिद्ध चंद्र कवच Siddha Chandra Kawach	820	विघ्न बाधा निवारण कवच Vighna Badha Nivaran Kawah	730
सिद्ध मंगल कवच (कुजा) Siddha Mangal Kawach (Kuja)	820	नज़र रक्षा कवच Najar Raksha Kawah	730
सिद्ध बुध कवच Siddha Bhudh Kawach	820	रोजगार प्राप्ति कवच Rojagar Prapti Kawach	730
सिद्ध गुरु कवच Siddha Guru Kawach	820	दुर्भाग्य नाशक कवच Durbhagya Nashak	640





Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Yellow Sapphire Bangkok	(बैंकोक पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	1000.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	190.00	550.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	125.00	190.00	280.00	370.00	460.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	190.00	280.00	370.00	460.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	73.00	100.00	190.00	280.00	460.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye ODISHA	(उडिसा लहसुनिया)	280.00	460.00	730.00	1000.00	1900.00 & above
Gomed	(गोमेद)	19.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	190.00	280.00	460.00	730.00	1000.00 & above
Zarakan	(जरकन)	550.00	730.00	820.00	1050.00	1250.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	100.00	145.00	190.00	280.00	460.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Opal	(उपल)	28.00	46.00	90.00	190.00	460.00 & above
Garnet	(गारनेट)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	10.00	19.00	28.00	55.00	100.00 & above
Lapis	(लाजर्वत)	15.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	19.00	28.00	55.00	190.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	19.00	46.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above

Note : Bangkok (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

GURUTVA KARYALAY

YANTRA LIST		EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 325 to 12700 and Above…..

सूचना

- ❖ पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ❖ लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- ❖ नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ❖ पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- ❖ प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- ❖ प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ❖ अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ❖ ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ❖ पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ❖ हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- ❖ यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ❖ हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ❖ पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- ❖ अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका

मार्च 2020

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com



GURUTVA JYOTISH

Monthly

MARCH -2020